

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 दिसम्बर, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2022

वर्ष : 80 अंक : 12
पौष, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

दिसम्बर, 2022



Website : www.jinwani.in

अपने मूल्यवान शरीर को सम्यक् रीति से आवरित करके जो नारी पुरुषों के बाह्य प्रलोभनों में नहीं आती है, वह अपने शील को सुरक्षित रखने में सफल होती है।

अंक सौजन्य

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीराय बमः
श्री कुशलसत्त्वगजेन्द्रगणियो बमः
॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥



सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि) जयपुर - वडोदरा - मुम्बई

► करियर काउंसलिंग ► वित्तीय सहायता
► शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी वित्तीय सहायता एवं त्रण योजनाओं के बारे में जानकारी देना



जरूरतमंद एवं
मेधावी छात्रों के लिए
छात्रवृत्ति एवं करियर
काउंसलिंग

पात्रता

- पारिवारिक वार्षिक आय 2.5 लाख रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- विद्यार्थी का पिछला वार्षिक परीक्षा परिणाम 60% (प्रतिशत) से अधिक हो।
- 8वीं या ऊपर की कक्षा के विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं।

ट्रस्ट की उपलब्धियाँ

- ट्रस्ट द्वारा दी गई छात्रवृत्ति से अब तक 10,000 से अधिक छात्र लाभान्वित हुए हैं।
- ट्रस्ट से जुड़े सेकड़ों विद्यार्थी CA / CS / BE / MBA / MBBS / Diploma आदि कर के दुनिया की नामी कंपनियों में कार्यरत हैं।
- ट्रस्ट द्वारा आयोजित करियर काउंसलिंग कार्यक्रमों के माध्यम से सेकड़ों विद्यार्थी उपयुक्त वोकेशनल एवं अन्य कोर्सज का चयन कर सफलता प्राप्त करने में कामयाब हुए हैं।

संपर्क सूत्र:

प्रशासनिक कार्यालय - सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि)

6वा माला, मनुभाई टॉवर 'सी' बिल्डिंग, सयाजीगंज, वडोदरा, 390020
+91- 7984103799 | crkmct96@gmail.com | www.crkmctrust.com

अंक स्रीजब्ध

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीर्य नमः

श्री कुशलसत्त्वगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

श्रावक का कर्तव्य है कि वह धन-सम्पदा का साधन के रूप में उपयोग करे। उसको साध्य समझकर चलेगा तो वह बाधक बनकर उसे मूल साध्य से वञ्चित कर देगी।

-आचार्यश्री हस्ती

प्रमुदित मन से जीना और दूसरे के जीवन में सहायक बनना ही जीवन की सार्थकता और विशेषता है।

-आचार्यश्री हीरा

जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर
श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा-वर्ष
पर शत शत नमन

पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में भावी
आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं
सन्त मण्डल के द्वारा महामन्दिर-जोधपुर
को सन् 2022 के वर्षावास से उपकृत
करने पर श्रद्धापूर्वक नमन

कनकराज कुम्भट, जोधपुर
महेन्द्र कुम्भट, देवांश कुम्भट, मुम्बई

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088

E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23

WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23

Posted at Jaipur RMS (PSO)



नासीले न विसीले,
न सिया अइलोलुड।
अक्कोहणे सच्चरए,
सिक्खरासीलेत्ति वुच्चइ॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 11.5

चारित्रहीन ना विकृतशील,
अतिशय रस लोलुप हो न कभी।
क्रोध करे ना सत्यव्रती,
शिक्षाभागी नर होत तभी॥

दिसम्बर, 2022

वीर निर्वाण सम्वत्, 2549

पौष, 2079

वर्ष 80

अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्रों के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जीवन साथी कैसा हो ?	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	आत्मसुधार के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	अनादिकालीन कर्म-सम्बन्ध भी तोड़े जा सकते हैं	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	चरित्रवान श्रावक ही चारित्रात्माओं की		
	सेवा कर सकता है	-भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	16
	मिले हुए का सदुपयोग : आत्म-विकास का हेतु	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	19
	भावों की साधना है तीन मनोरथ	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	23
औनाचार-	जैन श्रावकाचार की सामाजिक प्रासङ्गिकता	-समणी डॉ. शशिप्रज्ञा	27
संयम का 60वाँ वर्ष-	आचार्यश्री हीरा का विराट् व्यक्तित्व	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	36
English-section	Shruta Jñāna and its Divisions	-Dr. Priyadarshana Jain	41
प्रासङ्गिक-चिन्तन-	प्लीज भैया!..... उसे बचा लो	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	46
सृजन-सूत्र-	लेखन-कला के सूत्र	-डॉ. दिलीप धींग	52
जीवन-व्यवहार-	यतना : धर्मावलम्बी बनने का सुगम उपाय	-श्री मनोज कुमार जैन 'पाटोली'	56
	अहंकारी नहीं, संस्कारी बनें	-श्री गौतम पारख	69
	अनमोल मोती (9)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	73
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (23)	-श्री धर्मचन्द जैन	60
सुवा-स्तम्भ-	मस्तिष्क का सन्तुलन जरूरी	-श्री जयदीप ढह्वा	63
अध्यात्म-	हर निमित्त एक प्रेरणा देता है	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	65
स्वरूप-बोध-	त्याग और दान में फर्क	-श्री प्रमोद महनोट	71
गीत/कविता-	सद्गुरुः प्रसादात्	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	15
	करो कुछ ऐसी तैयारी	-श्री जितेन्द्र चोरडिया 'प्रेक्षक'	26
	हम श्रावक बनेंगे	-महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.	55
	श्रद्धा-भक्ति से अन्तर सजाता हूँ मैं	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	68
	नवयुग का आह्वान है	-श्री मनमोहनचन्द बाफणा	72
	मेरी इच्छा	-श्री विजेन्द्र जैन	75
विचार/चिन्तन-	दुःख कैसे मिटे ?	-डॉ. एन. के. खिंचा	35
	मांसाहार कैंसर की जड़ है	-डॉ. के. एल. पोकरणा	62
	इंसाफ सबके लिए बराबर	-श्री महावीर प्रसाद जैन	64
	Pearls of Life	-Mrs. Minakshi Dinesh Jain	88
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	74
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	76
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

जीवन साथी कैसा हो ?

डॉ. धर्मचन्द जैन

श्रद्धा वाकर के शरीर के आफताब पूना वाला द्वारा पैंतीस टुकड़े करके बड़े फ्रीज़ में रख दिए गए तथा 18 दिनों तक अलग-अलग स्थानों पर वे टुकड़े फैंके गए। यह दिल दहला देने वाली घटना है, जो यह सोचने को मजबूर करती है कि किसी को विवाह करना है तो वह कैसे जीवन साथी का चयन करे? यह तो अब मात्र अनुमान का विषय है कि श्रद्धा वाकर एवं आफताब किस तरह जीवन साथी बने एवं क्यों ऐसी दर्दनाक हत्या की गई? ऐसी और भी अनेक घटनाएँ देखी जा रही हैं, जिनमें मानव ही मानव का शत्रु बना हुआ है। रोष, क्रोध एवं घृणा की तीव्रता का दुष्परिणाम हत्या में बदल रहा है। कभी कोई प्रेमिका अपने पति को प्रेमी से मिलकर ठिकाने लगा रही है, तो कभी कोई पिता अपनी प्रतिष्ठा पर आयी आँच के कारण पुत्री का कत्ल कर रहा है। कहीं पति प्रेमिका से मिलकर अपनी पत्नी की हत्या कर रहा है। कहीं पिता अपनी सन्तानों का वध कर स्वयं की जीवन लीला समाप्त कर रहा है। इस महत्त्वपूर्ण मानव जीवन को वरदान न समझने वाले अपने अज्ञान, मोह, घृणा और आवेशों से आच्छन्न होकर इस प्रकार के कुकृत्य कर रहे हैं।

यहाँ इन सभी विषयों पर चर्चा न करके केवल जीवन साथी के चयन पर विचार किया जा रहा है। मनुष्य शिक्षा प्राप्त करके भी आज सही जीवन साथी का चयन करने में दिग्भ्रान्त है। माता-पिता भी अपने पुत्र-पुत्रियों की शिक्षा एवं रोजगार को प्राथमिकता देकर विवाह के उचित काल को टालते जा रहे हैं, जिससे योग्य वर एवं वधू का मिलना दुष्कर होता जा रहा है। समाज की रूपरेखा बदल रही है। सामाजिक मर्यादाएँ तार-तार हो रही हैं।

नारी सशक्तीकरण के इस युग में नारी का विकास तो हुआ है, किन्तु उसके दाम्पत्य जीवन के सकुशल निर्वहन पर प्रश्नचिह्न उठने लगे हैं। समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। नारी एवं पुरुष के अहं टकरा रहे हैं।

सर्वश्रेष्ठ तो यह है कि कोई भोग-वासनाओं को पूर्णतः परित्याज्य समझकर श्रमण जीवन को अङ्गीकार कर ले तथा अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का उन्नयन कर परम पद मोक्ष को प्राप्त करे, किन्तु जो मानव इस तरह का संकल्प करने एवं उसका निर्वाह करने में अपने को असमर्थ मानता है, उसके लिए जीवन को सुव्यवस्थित जीने के लिए विवाह की व्यवस्था दी गई है। विवाह एक मर्यादा है। गृहस्थाश्रम का एक पावन पथ है, जिसमें गृहस्थ मर्यादित रहकर पारिवारिक व्यवस्था को जन्म देता है एवं उसका सञ्चालन करता है। विवाह के दो प्रयोजन प्रमुख हैं-1. अपनी मैथुन संज्ञा एवं पुरुषवेद/स्त्रीवेद की सन्तुष्टि। 2. सन्तति का जन्म एवं उसके पालन-पोषण का दायित्वपूर्वक निर्वहन।

यदि विवाह की व्यवस्था न हो तो एक पुरुष अनेक स्त्रियों को दूषित कर सकता है तथा स्वयं का भी भविष्य अन्धकूप में डुबा सकता है। विवाहोपरान्त एक पत्नी से सन्तुष्ट रहकर सन्तानों का पालन-पोषण करते हुए परिवार में उनको सद्शिक्षा दी जा सकती है तथा यह क्रम निरन्तर विभिन्न पीढ़ियों में आगे भी चलता रहता है। जैनधर्म में गृहस्थ को स्वदार सन्तोषवृत्ति वाला होने पर बल दिया गया है। दारा शब्द का अर्थ पत्नी होता है। पत्नी भी एक पति से सन्तुष्ट रहकर अपने बच्चों की कर्तव्यपूर्वक सम्यक् परिपालना कर सकती है। प्रायः पशु-पक्षी सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् अपनी सन्तति का कुछ काल तक पालन-पोषण करते हैं। उसके पश्चात्

उनकी सन्तति समर्थ होने पर स्वयं अपने जीवन का सञ्चालन करती है, किन्तु उनमें परिवार की व्यवस्था दीर्घकाल तक नहीं चलती। मनुष्य की पारिवारिक व्यवस्था दीर्घकाल तक चलती है। पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र और उसके पश्चात् भी सुव्यवस्थित ढंग से परिवार चलते हैं तो उनमें सुख-शान्ति एवं सौहार्द का वास होता है। इसलिये विवाह का एक प्रयोजन सन्तानोत्पत्ति के साथ सन्तान की समुचित परवरिश एवं उनको सहयोग का संस्थापन भी है। यह विवाह का उच्च मूल्य है।

जो विवाह को मात्र भोग का साधन समझते हैं, वे परिवार की उपेक्षा करते हैं तथा भोगोन्मुखी बनकर अपना और परिवार का जीवन संकट में डालते हैं। नयी पीढ़ी के कुछ लोग विवाह के इस प्रयोजन की उपेक्षा करने लगे हैं। अतः परिवार सीमित होते चले जा रहे हैं, पारिवारिक दायित्व को बोझा समझने लगे हैं और स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध मात्र काम-वासना की दृष्टि तक सीमित रहने लगा है। इससे वे पशु-पक्षियों की श्रेणी से भी नीचे उतर रहे हैं।

इसलिये जीवन साथी का चयन इस प्रकार का हो कि जिसके साथ पारिवारिक व्यवस्था का भी सुचारु ढंग से जीवनपर्यन्त निर्वाह हो सके। धार्मिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को भी जीवन में स्थान देकर जीवन को सम्यक् दिशा दी जा सके। साथ ही समाज के साथ भी जुड़कर सामाजिक कार्यक्रमों का आनन्द लिया जा सके। भोग-वासना की पूर्ति का अल्पकालिक आकर्षण जीवन का सर्वनाश कर सकता है। किसी के भी साथ जुड़कर इस प्रकार की वासना को शान्त करना विवेकचक्षुओं को बन्द कर लेना है और अपने जीवन को पतन के मार्ग पर धकेल देना है। इसलिये एक युवति को चाहिये कि वह किसी भी प्रलोभन देने वाले, फुसलाने वाले एवं सुख-सागर के स्वप्न दिखाने वाले युवक के साथ भावुकता में आकर न जुड़े। युवति की इज्जत उसके हाथ में तब तक सुरक्षित है जब तक वह किसी अन्य के समक्ष अपने भावों एवं शरीर को वह समर्पित न कर दे।

नारी सशक्तीकरण का एक रूप हमें दशवैकालिकसूत्र में भी दृष्टिगोचर होता है जहाँ साध्वी राजीमती को निर्वस्त्र अवस्था में देखकर रथनेमि का मन विचलित हो जाता है। साध्वी राजीमती ने वहाँ तर्कपूर्वक रथनेमि को शान्त कर साधना में दृढ़ किया तथा स्वयं भी रञ्चमात्र भी विचलित नहीं हुई, राजीमती ने कहा-अयशस्कामिन्! तुम्हें धिक्कार है जो तुम वमित काम-भोगों को भोगना चाहते हो, इससे तो तुम्हारा मरना ही श्रेष्ठ है। अगन्धनकुल के सर्प अपने द्वारा वमन किये हुए विष का पुनः सेवन नहीं करते, चाहे उन्हें अग्नि में ही क्यों न जलना पड़े। वह कहती है कि मैं भोग कुल की नारी हूँ और तुम अन्धकवृष्णि के पुत्र हो। अपने कुल की तो लाज रखो। क्या तुम जहाँ-जहाँ नारी को देखोगे वहाँ इस प्रकार विचलित हो जाओगे। साध्वी राजीमती के वचनों को सुनकर मुनि रथनेमि भी उसी प्रकार धर्म में स्थिर हो गए जिस प्रकार अंकुश से हाथी वश में होता है। नारी में इस प्रकार की वीरता एवं दृढ़ता हो तो उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह कथानक तो एक साध्वी और साधु का है, किन्तु गृहस्थ जीवन में भी एक नारी में दृढ़ता और धीरता-वीरता का होना आवश्यक है। अपने मूल्यवान शरीर को सम्यक् रीति से आवरित करके जो नारी पुरुषों के बाह्य प्रलोभनों में नहीं आती है, वह अपने शील को सुरक्षित रखने में सफल होती है। शील ही नारी का प्रमुख आभूषण है। बाह्य आभूषणों से शरीर का सौन्दर्य भले ही निखरता हो, किन्तु यदि शील पालन नहीं है तो वह नारी कुनारी या कुलटा कही जाती है।

वर्तमान में जीवन साथी का चयन करना एक कठिन समस्या का रूप लेता जा रहा है। प्राचीनकाल में वर-वधू के कुल एवं शील को देखा जाता था और माता-पिता सम्बन्ध सुनिश्चित कर देते थे। किन्तु अभी वैचारिक स्वतन्त्रता का युग है, अतः युवक-युवतियों की अभिलाषा को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। पूर्वपिक्षया अभी अधिक उम्र में विवाह होते हैं। पच्चीस वर्ष की वय की युवति होने तक तो माता-पिता सोचते ही नहीं कि

बेटी का विवाह करना है। बेटे के लिए भी ऐसी ही स्थिति है। वातावरण में स्वतन्त्रता बढ़ती जा रही है। अनेक युवक-युवती परस्पर सम्पर्क में रहते हैं। कब किसके साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। बहलाने-फुसलाने एवं प्रलोभन देने वालों तथा झूठी डींगे हाँकने वाले असत्कुलीन पुरुष भी कुलीन युवतियों को अपने पाश में बाँध लेते हैं। मछुआरा जिस प्रकार मछली को जाल में फाँसने के लिए प्रयत्नशील रहता है उसी प्रकार कुछ युवक अपने जाल में युवतियों को फाँसने के लिए डोरे डालते रहते हैं। वे एक नहीं अनेक युवतियों से सम्बन्ध बनाकर उन्हें छोड़ देते हैं और कभी मौत के घाट उतार देते हैं। कुछ युवतियाँ भी पुरुषों पर डोरे डालने का कार्य करती हैं। युवकों के साथ युवतियाँ भी मदिरापान, धूमपान, नृत्य आदि में संलग्न हो जाती हैं। यह सब समय पर विवाह नहीं होने एवं अपनी वासना पर नियन्त्रण नहीं कर पाने तथा कुसङ्गति के चक्कर में पड़ने से होता है। मात्र भोगों की अभिलाषा सही जीवन-साथी का चुनाव करने में सहायक नहीं होती।

सही जीवन-साथी का चुनाव करने में अनेक घटक कार्य करते हैं, यथा-1. माता-पिता एवं विवाह योग्य युवक-युवतियों को चाहिए कि वे अपने समान कुल, शील, वय, व्यवसाय, विचार आदि को ध्यान में रखकर जीवन-साथी का चुनाव करें। 2. मात्र किसी के धन, पैकेज या व्यवसाय को देखकर निर्णय न किया जाय। 3. मात्र रूप, सौन्दर्य से आकर्षित होकर निर्णय न किया जाय। 4. पैकेज, रूप आदि को दृष्टिगत रखा जा सकता है, किन्तु इनसे अधिक महत्त्वपूर्ण शील-पालन एवं सद्व्यवहार है। प्रदर्शन के लिए कभी-कभी दुर्जन भी सद्व्यवहार कर लेते हैं तथापि उनके निकटवर्ती और विश्वस्त लोगों से पृच्छा करके सही स्थिति का बोध किया जा सकता है। 5. धार्मिक दृष्टि से भी समान धर्म का उपासक-उपासिका हो तो जीवन में वैचारिक तालमेल सरल होता है। 6. सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक ही संस्कृति के वरवधू के जीवन में सामञ्जस्य सम्भव है। संस्कृति एवं धार्मिक पद्धति में भेद से समस्याएँ उत्पन्न

होती हैं।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है वैचारिक समानता का होना। वर-वधू दोनों के विचार यदि समान हैं तो उनका जीवन अपेक्षाकृत शान्तिमय ढंग से पूर्ण हो सकता है। खानपान, रहन-सहन भी समान हो तो दाम्पत्य जीवन सुखकर हो सकता है। 'सहन' का अर्थ सहना भी होता है। युवक-युवतियों में परस्पर सहनशीलता तथा एक-दूसरे के विचारों को समझने की शक्ति तथा एक-दूसरे को महत्त्व देने की प्रवृत्ति हो तो दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन सरलता से व्यतीत हो सकता है।

जीवन-साथी का चयन सही होने के पश्चात् भी दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन को सुखकर बनाने के लिए अनेक सावधानियाँ बरतने की आवश्यकता है-1. कभी अहंकारवश जीवन-साथी का अनादर न हो। 2. एक-दूसरे के प्रति प्रगाढ़ विश्वास हो। 3. पूर्व घटनाओं को भूलकर परस्पर नये जीवन का सञ्चालन सन्देहरहित होकर किया जाय। 4. एक-दूसरे की सुख-सुविधा का ध्यान रखा जाय। 5. धार्मिक आस्था के साथ नित्य सत् स्वाध्याय एवं भगवद् भक्ति की जाय। इससे भावी सन्तान पर भी अच्छा प्रभाव होगा। 6. मैथुन सेवन भी मर्यादित रूप से हो। 7. पति-पत्नी दोनों के कार्य क्षेत्र में जाने पर परस्पर समझपूर्वक समायोजन हो। 8. अपनी समस्याओं का मिल-बैठकर उचित समाधान हो, किन्तु खींचतान न हो। शिकायत के रूप में नहीं, अपितु हित के भाव से एक-दूसरे को बात कही जाय। 9. कभी भूल हो जाने पर क्षमाभाव प्रयोग कर लिया जाय। 10. अपना कोई गुरु निर्धारित किया जाय, जिनसे जीवन में सही दिशा प्राप्त होती रहे। 11. जीवन में सन्तोषवृत्ति रखी जाय। 12. परिग्रह का बड़ा अम्बार जीवन को उन्नत नहीं बनाता है। इसलिये वह जीवन का लक्ष्य न हो। 13. जीवन-साथी कैसा भी मिले, उसको ही सर्वस्व मानकर उसके साथ प्रेमपूर्वक, आत्मीयभाव से रहने की साधना की जाय। इससे भावी सन्तानों को भी कुछ शिक्षण मिल

(शेषांश पृष्ठ 15 पर)

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

जड़ तं सि भोगे चड़उं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकंपी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 13, गाथा 32

अर्थ-राजन्! यदि तू कामभोगों को छोड़ने में असमर्थ है तो आर्यकर्म ही कर। धर्म में स्थिर होकर समस्त प्राणियों के प्रति अनुकम्पाशील बन, ताकि तू यहाँ से (मरकर परलोक में) वैक्रियशरीरधारी देव तो हो सके।

विवेचन-चित्तमुनि भोगों में आसक्त अपने पूर्वभव के भ्राता ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को भोगों की क्षणभंगुरता का बोध कराते हैं। वे कहते हैं कि यह काल बीत रहा है, बीता हुआ काल लौटकर नहीं आता है और मनुष्य के भोग भी नित्य नहीं हैं। मनुष्य के शरीर में सामर्थ्य नहीं रहता है तो वह किसी प्रकार का भोग नहीं कर पाता है। इन्द्रियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं तो भोग उस मनुष्य को उसी प्रकार छोड़ देते हैं जिस प्रकार फलों से रहित वृक्ष को पक्षी छोड़ देते हैं। इसलिये बुद्धिमत्ता इसी में है कि भोगों का त्याग स्वेच्छा से कर दिया जाए।

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती कहता है कि मैं भी जानता हूँ कि कामभोग बन्धनकारी हैं, फिर भी हम जैसे भोगियों के द्वारा इन्हें त्यागना कठिन है। जिस प्रकार दलदल में धँसा हुआ हाथी किनारे को देखकर भी वहाँ तक पहुँचने में अपने को असमर्थ पाता है, उसी प्रकार की दशा मेरी है।

इस गाथा से विदित होता है कि जो मनुष्य भोगों में लिप्त है, उनकी आसक्ति में जकड़ा हुआ है, उनका गुलाम बना हुआ है, वह भोगों को शीघ्रता से नहीं छोड़ पाता है। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती भोगों की बुराई को जानते हुए भी उनका त्याग करने में अपने को असमर्थ मानता है।

चित्तमुनि के द्वारा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को उद्बोधन देते हुए कहा गया है कि यदि तुम भोगों को त्यागने में असमर्थ हो तो आर्यकर्म करो। आर्यकर्म से आशय

पुण्यकर्म से है। स्वहित एवं परहित के कार्य जो दूसरों को साता उपजाते हैं, उनके कष्टों का निवारण करते हैं, उनकी अशान्ति को दूर करते हैं तथा उनमें सौहार्द और मैत्री का सञ्चार करते हैं, वे सब आर्यकर्म हैं।

आर्यकर्म करने से भी चित्त की अवस्था ठीक रहती है। चित्तमुनि का यह सन्देश केवल ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के लिए ही नहीं है, अपितु उन साधारण लोगों के लिए भी है जो अपने आपको भोगों का त्याग करने में असमर्थ पाते हैं। परोपकार अथवा भलाई के सभी कार्य आर्यकर्म में समाहित हो जाते हैं। इस आर्यकर्म से सेवाभाव का विकास होता है। एक अपेक्षा से यह व्यक्ति को पापकर्म करने से रोकता है और कदाचित् सत्य समझ में आने पर वह पूर्णतः भोगों को छोड़कर मुनिव्रत अङ्गीकार कर सकता है। पापकर्मों की अपेक्षा पुण्यकर्म करने की प्रेरणा सन्मार्ग प्रस्तुत करती है।

जो जैसा पात्र होता है उसको वैसा उपदेश दिया जाता है। पापों से पूर्णतः विरत रहकर त्यागवृत्ति के साथ संयम को अङ्गीकार करने वाले पात्र पूर्णतः भोगों से विरक्त हो सकते हैं। किन्तु जो अपने को इसके योग्य नहीं समझते हैं वे उन्मार्ग को छोड़कर सन्मार्ग का आचरण तो कर ही सकते हैं। आर्यकर्म के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, शीलपालन आदि का समावेश हो जाता है। क्योंकि इनके बिना कोई व्यक्ति आर्य नहीं कहला सकता। हिंसा आदि का आचरण अनार्यकर्म होता है और अहिंसा का पालन आर्यकर्म कहा गया है।

चित्तमुनि कहते हैं कि-राजन्! आप धर्म में स्थिर होकर समस्त प्रजा के प्रति अनुकम्पा करें। उनके दुःख निवारण हेतु जागरूक रहें। इससे तुम्हारी गति सुधर जाएगी। तुम नरक में न जाकर देवगति में वैक्रिय शरीर धारण करोगे। इसका तात्पर्य है कि आर्यकर्म से देवगति की प्राप्ति होती है।

आत्मसुधार के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- ❁ मनुष्य का भाग्य और कुछ नहीं, अपने ही किये हुए पुरुषार्थ का परिणाम है।
- ❁ ज्ञान एवं वैराग्य की शिक्षा से पापी भी सुधर सकते हैं।
- ❁ दरिया में सोने की शिला पकड़ कर चलने वाला डूबता है और काष्ठ पट्ट लेने वाला तिरता है। यही हाल जग में धन और धर्म का है। धन डुबाता और धर्म तिराता है।
- ❁ शस्त्रधारी सेना देश का धन बचा सकती है, पर शास्त्रधारी सेना जीवन बचाती है। क्योंकि हिंसा झूठ, चोरी, व्यभिचार-भ्रष्टाचार शस्त्र बल से नहीं, शास्त्रबल से छूटते हैं।
- ❁ आचरणवान या क्रियाशील ही देश-धर्म का उत्थान कर सकते हैं।
- ❁ महावीर के मार्ग और उनकी सभा में बुझदिलों का काम नहीं है। वहाँ सब कुछ प्रसन्नता से अर्पण करने वाला चाहिए।
- ❁ भौतिकता के प्रभाव में जो लोग जीवन को उन्नत बनाना भूल जाते हैं, वे संसार में कष्टानुभव करते हैं और जीवन को अशान्त बना लेते हैं।
- ❁ मनुष्य सोचता है कि झूठ बोलना नहीं छोड़ा जा सकता, किन्तु जब एक दिन अभ्यास कर लगे तो मन में हिम्मत आ जायेगी। फिर झूठ बोलना छूट सकता है।
- ❁ धर्मनीति प्राणिमात्र में बन्धुभाव उत्पन्न करती है। क्रोध की आग में वह प्रेम के अमृतजल का सिञ्चन करती है।
- ❁ बालक रत्न भी बन सकते हैं और टोल भी। माता-पिताओं को चाहिए कि अपना दायित्व समझकर बालकों के सुन्दर जीवन-निर्माण की ओर लक्ष्य दें अन्यथा हाथ से तीर छूट जाने पर लाइलाज है।
- ❁ दुनिया के बड़े लोग सत्संग में इसलिए भी संकोच करते हैं कि वहाँ साधारण लोगों के साथ बैठना होता है। सिनेमा में उनकी पोजीशन डाउन नहीं होती है, पर सत्संग में हो जाती है, कितनी विचित्र बात है।
- ❁ सद्गृहस्थ धर्मप्रधान दृष्टि रखते हुए अर्थ-साधना करता है। सद्गृहस्थ को चाहिए कि वह प्रतिदिन इसका निरीक्षण करे कि मेरा 'अर्थ-साधन' धर्म के विपरीत तो नहीं जा रहा। उसका दृष्टिकोण उस किसान की तरह होता है जो बीज को खाता हुआ भी उसे बोना नहीं भूलता। बीज के लिए अच्छे दाने सुरक्षित रखता है।
- ❁ आप गुणज्ञ बनें, तभी सच्चा लाभ ले सकेंगे।
- ❁ यदि परीक्षा में बच्चों को नैतिक व्यवहार के भी अडक दिए जाएँ तो बच्चे देश के लिए वरदान हो सकते हैं।
- ❁ 'स्वाध्याय' संस्कार का बड़ा साधन है।
- ❁ परिग्रह छूटेगा तो आरम्भ स्वतः कम हो जायेगा।
- ❁ परिग्रह से मनुष्य की मति आकुल और अशान्त रहती है। अशान्त मन में धर्म-साधना नहीं होती।
- ❁ धर्म पहले इहलोक सुधारता है, फिर परलोक। धर्म से पहले इस जीवन में शान्ति मिलती है, फिर आगे।
- ❁ धर्म मानव-जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना वायुसेवन।
- ❁ कामना के जाल को वही काट सकता है, जिसके पास ज्ञान का बल है।

अनादिकालीन कर्म-सम्बन्ध भी तोड़े जा सकते हैं

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में सह सम्पादक श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

संसार के सम्पूर्ण दुःखों का अन्त करके अनन्त ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करने वाले तीर्थङ्कर भगवन्त तथा संसार में डूबते हुए प्राणियों को अपने वचनामृत से बोध देकर साधना मार्ग में लगाने वाले गुरु भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थङ्कर भगवान ने सारभूत पदार्थों को नवतत्त्व के माध्यम से बताया है। जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष ये नवतत्त्व सारभूत पदार्थ हैं। संक्षिप्त में कथन किया जाये तो जीव और अजीव इन दो तत्त्वों में भी शेष तत्त्वों का समावेश हो सकता है। जीव और अजीव तत्त्व भी हैं और द्रव्य भी हैं। तत्त्वों की चर्चा बन्धन एवं मुक्ति को समझने के लिए की जाती है तथा द्रव्यों की चर्चा विश्व में विद्यमान बाह्य अस्तित्व युक्त पदार्थों के लिए की जाती है। जीव और अजीव द्रव्यों से युक्त सृष्टि अनादिकाल से है। इस विषय में भी अनेक विचारकों के अनेक मन्तव्य हैं। कहीं पर सृष्टि का निर्माता ब्रह्मा को बताया गया है तो कहीं पर उसे अण्डे से उत्पन्न बताया गया है। जैनधर्म तो सृष्टि का कर्ता किसी को भी स्वीकार नहीं करता है। उसके अनुसार यह सृष्टि अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहने वाली है।

जीव और जड़ का सम्बन्ध भी अनादि काल से रहा हुआ है। चेतन जीव और जड़ कर्म अनादिकाल से सम्बन्ध बनाकर रहे हैं। कर्म से सम्बन्ध के कारण ही दिग्भ्रान्त बना जीव चार गतियों में भटक रहा है। इस सम्बन्ध में जीव को प्राथमिकता दी गयी है। जीव कर्मों का कर्ता है एवं कर्मफल का भोक्ता है। जीव का स्वरूप ज्ञाताद्रष्टा है, अखण्ड है, अविभाज्य है और अटल स्वभाव वाला है। जीव का स्वभाव स्थिर बताया गया है

फिर भी कर्म रूपी जड़ के संसर्ग से यह निरन्तर विभिन्न योनियों में भटक रहा है। एक योनि से दूसरी योनि में, एक पर्याय से दूसरी पर्याय में भटकता हुआ यह जीव निरन्तर कर्मबन्ध कर रहा है। भटकने का कारण है कर्म। कर्म से संयुक्त जीव विभिन्न परिणामों में परिणामन करता हुआ भ्रमण करता है।

जीव का स्वभाव भटकना नहीं है, यदि भटकना होता तो सिद्ध भगवान भी भटक रहे होते। परन्तु सिद्धों ने कर्मों को काट कर शुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर लिया है, इसलिये उनकी भटकन समाप्त हो गयी है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि जीव के भटकने का कारण कर्म इस जीव के साथ कब से और कैसे लगा हुआ है? जीव के साथ कर्म का सम्बन्ध अनादिकाल से है। इसे व्यावहारिक दृष्टान्त से समझने के लिए ग्रन्थों में बताया गया है कि जिस प्रकार खदान में स्वर्ण और मिट्टी का सम्बन्ध अथवा मिट्टी के साथ अन्य धातुओं का सम्बन्ध अनादिकाल से है उसी प्रकार जीव का कर्म से सम्बन्ध भी अनादिकाल से है। जब तक प्रक्रिया द्वारा मिट्टी और स्वर्ण को अलग नहीं किया जायेगा तब तक स्वर्ण मिट्टी के संग ही अस्तित्व में रहेगा। जीव भी जब तक साधना करके कर्मों से सम्बन्ध को नहीं तोड़ेगा तब तक ये कर्म अपना प्रभाव दिखाकर इस जीव को भटकाते रहेंगे।

एक मान्यता यह भी चलती है कि जो अनादिकाल से है वह अनन्त काल तक रहेगा। जैसे-पुद्गल द्रव्य अनादिकाल से है तो वह अनन्तकाल तक भी पुद्गल ही रहेगा। यह प्रत्येक द्रव्य के लिए पृथक्-पृथक् रूप से कहा जा सकता है, लेकिन जीव और कर्म

पुद्गल का जो आपस में सम्बन्ध है वह अनादि होते हुए भी उसका अन्त किया जा सकता है।

सम्बन्ध भी दो प्रकार के होते हैं-1. समवाय सम्बन्ध और 2. संयोग सम्बन्ध। जो स्वभावजन्य होता है, जिससे पदार्थ और गुण के सम्बन्ध को अलग नहीं किया जा सकता है। वह समवाय सम्बन्ध होता है। उदाहरणार्थ नमक में खारापन, मिश्री में मिठास, अग्नि में उष्णता, घी में चिकनाहट का गुण तब तक रहेगा जब तक पदार्थ रहेगा। चाहे उसकी पर्याय भी परिवर्तित कर दी जाये। पानी में नमक घोल दिया जाये तो वह खारा हो जायेगा या मिश्री घोल दी जाये तो मीठा हो जायेगा। जहाँ गुण है वहाँ गुणी है। गुणी में ही गुण रहा करते हैं। यही समवाय सम्बन्ध है। जीव का कर्म के साथ संयोग सम्बन्ध है। संयोग सम्बन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुरूप वियोग में परिणत होता रहता है। जो दो द्रव्य सम्बन्ध बनाते हैं और प्रयास करने पर अलग हो जाते हैं उनके सम्बन्ध को संयोग सम्बन्ध कहते हैं।

व्यवहार जगत में सम्बन्ध जितना पुराना होता है उतना ही प्रगाढ़ एवं स्नेह से परिपूर्ण होता है। उनमें एकता भी मजबूत होती है। लेकिन जीव और कर्म के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। पुराना सम्बन्ध होते हुए भी इन कर्मों ने आत्मा को भटकाने एवं पतित करने का ही कार्य किया है।

निगोद से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक संसार की जितनी भी अवस्थाएँ हैं उनमें जीव कभी कर्म से अलग नहीं रहा है। कभी किसी गति में तो कभी किसी गति में, कभी औदारिक काययोग में तो कभी वैक्रिय काययोग में, कभी अनाहारक अवस्था में, कभी आहारक अवस्था में-संसार की प्रत्येक अवस्था में कर्म ने जीव का साथ नहीं छोड़ा। इतना निकट का सम्बन्ध होते हुए भी यह सम्बन्ध कभी भी हितकारी, सुखकारी और प्रियकारी नहीं बना। नीतिकार कहते हैं कि क्या कभी साँप और नेवला साथी होते हैं? कभी बिल्ली और चूहा साथ रहते हैं? कभी सती और वेश्या में प्रगाढ़ मैत्री हो सकती है? कभी नहीं हो सकती। इस जीव ने भी कर्म से

इतना पुराना सम्बन्ध बनाकर भी दुःख ही पाया था तथा दुःख ही पा रहा है और जब तक इसका साथ रहेगा दुःख ही पाता रहेगा।

अब जीव क्या पुरुषार्थ करे कि इस सम्बन्ध से छुटकारा हो और भटकन समाप्त हो। इस सम्बन्ध में आगमों में साधना-आराधना के अनेक आयाम प्रस्तुत करके कर्मों को काटने की कला समझायी गयी है। जैनागम में अनादि के सम्बन्ध को तोड़ कर शाश्वत सुखों को प्राप्त करने के मार्ग का कथन किया गया है।

इन कर्मों से जीव का सम्बन्ध किस कारण से होता है? कर्मग्रन्थकार समझाते हैं कि- 'कीरइ जिएण हेउहिं, जेणं तो भण्णए कम्मं।' अर्थात् जीव हेतुओं द्वारा जो करता है उसे कर्म कहते हैं। हेतु क्या हैं? मिथ्यात्व, अन्नत, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग ये पाँच हेतु कर्मबन्ध के बताये हैं। जीव के द्वारा मिथ्यात्वादि इन हेतुओं के माध्यम से जो किया जाता है, उसे कर्म कहते हैं। जीव का कर्म के साथ यह सम्बन्ध स्वाभाविक नहीं होकर वैभाविक है। इस सम्बन्ध के कारणभूत इन मिथ्यात्वादि पाँच हेतुओं को हटा दिया जाये तो इस सम्बन्ध का अन्त किया जा सकता है। पर हटायेंगा कौन? जो इस सम्बन्ध को हेय जानेगा, वही इस सम्बन्ध को हटाने का प्रयास करेगा। मिथ्यात्व क्या है? अन्नत क्या है? प्रमाद क्या है? कषाय क्या है? और अशुभ योग क्या है? इनसे किस प्रकार जीव का नुकसान हो रहा है, यह बोध जब हो जायेगा तब इन हेतुओं से सम्बन्ध तोड़ते देर नहीं लगेगी।

जीव और कर्म में शक्तिशाली कौन है? यह प्रश्न भी उपस्थित होता है। कर्म के शक्तिशाली होने की तो अनेक गाथाएँ सुन ही रखी हैं। कर्म के कारण ही खन्दकजी की खाल उतारी गयी, भगवान महावीर के कानों में कीले ठुके, गजसुकुमाल के सिर पर पाल बाँधी गयी, तीर्थङ्कर होते हुए भी मल्लिनाथ को स्त्रीलिङ्ग प्राप्त हुआ, भगवान महावीर का गर्भ संहरण हुआ तथा तेजोलेश्या का दाह सहना पड़ा और भी अनेक उदाहरण कर्म की शक्ति का बखान कर रहे हैं। लेकिन यह भी

सत्य है कि कर्म में शक्ति है तो जीव में उससे भी अधिक शक्ति है। कर्म आवरण की शक्ति उत्पन्न करता है तो जीव इन कर्मावरणों को तोड़ने की शक्ति रखता है। कर्म बड़ा नहीं है बड़ा है जीव। लेकिन जब तक जीव विभाव दशा में है तब तक कर्म का प्रभाव विशेष रहेगा। यह जीव बड़े-से-बड़े कर्मों को तोड़ सकता है। कर्मों को तोड़कर ही तो अनन्त कर्मयुक्त आत्माएँ कर्ममुक्त आत्मा अर्थात् सिद्ध दशा को प्राप्त हुई हैं।

आज की स्थिति विचित्र है, मानव दिन-रात कर्मों के आवरण बढ़ाता जा रहा है। मोह के प्रसङ्गों पर मोही बनकर संसार में रचता-पचता जा रहा है। सुख के प्रयास में दुःखी बनता जा रहा है, क्योंकि उसने रास्ता ही सही नहीं पकड़ रखा है। वह अपना मूल्यांकन सही नहीं कर रहा है। भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति में अनवरत कर्मबन्ध कर रहा है। उसका चिन्तन त्याग का नहीं होकर भोग का हो रहा है। यदि यह कह दूँ कि कर्मों के उदय से बेभान बना जीव निरन्तर कर्मबन्ध कर रहा है, तो अतिशयोक्ति नहीं है।

शाश्वत सुख मोक्ष की चाहना रखने वाला व्यक्ति मोह के रास्ते पर चलेगा तो मञ्जिल कहाँ से मिलेगी? जब जीव यह ठान लेगा कि मुझे शाश्वत सुख प्राप्त करने के रास्ते पर चलना है तब वह उसके अनुरूप साधना-आराधना का प्रयास करेगा। कर्मों के बन्धनों को तोड़ने के लिए जीव को विचार करना होगा। निरञ्जन बनने के लिए चिन्तन करना होगा। महापुरुषों ने इन कर्मों के आवरणों को तोड़ने के लिए पहला चिन्तन दिया- 'अपने आपको जानो।' हम बाहर की जानकारी में इतने व्यस्त हैं कि हमें हमारी ही जानकारी करने का समय नहीं है। अपने स्वरूप को जानो, अपनी ताकत को पहचानो और अपने आपको ऊपर उठाने का प्रयास करो। पर हमने बहुत बड़ी भूल कर रखी है, अपने आपको जो मान रखा है, वास्तव में वह हम हैं ही नहीं। हम अपने आपको नाम से, अपने गोत्र से, अपने पद से, अपने वर्ण, रूप आदि से समझते हैं। मेरा नाम महावीर है, मेरा नाम गौतम है, मैं ओसवाल हूँ, मैं पोरवाल हूँ, मैं

अध्यापक हूँ, मैं अधिकारी हूँ, इस प्रकार अपने आपको कर्मजन्य अवस्थाओं से ही परिचय कराते जा रहे हैं। आचार्य भगवन्त के शब्दों में-

मैं नहीं श्याम-गौर वर्णा हूँ, मैं न सुरूप कुरूप।
नहीं लम्बा बीना भी मैं हूँ, मेरा अविचल रूप॥
मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप॥

जड़ को जीव माना जा रहा है। मिथ्यात्व के झूले में झूला जा रहा है। मिथ्या मान्यता का प्रभाव जमा हुआ है तो भला कैसे कल्याण होगा। इसलिए प्रथम चिन्तन सूत्र कह रहा है कि अपने आपको जानो-मैं जड़ नहीं हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं तो आत्मा हूँ, अनन्त ज्ञान-दर्शन से युक्त हूँ, अनन्त शक्तिमान हूँ, ऊर्ध्वगमन से युक्त हूँ। जब मैं मेरे वास्तविक स्वरूप का ज्ञाता बन जाऊँगा तब ही तो उस स्वरूप को प्राप्त करने में सक्षम बनूँगा। जिस दिन अपने आपको समझ लिया, उस दिन से सभी क्रियाएँ सम्यक् हो जायेंगी।

आज जितने पुरुषार्थ चल रहे हैं, जितना समय दिया जा रहा है वह अधिकतर पराये के लिए दिया जा रहा है, शरीर के लिए दिया जा रहा है। आचार्य भगवन्त की भाषा में कहूँ तो हम चमार बने हुए हैं। सुबह जागरण से लेकर रात्रि में सोने तक हमारा काम इस शरीर रूपी चमड़े को सजाने-सँवारने और सुधारने में ही लगा है। सुबह इसे नहलाने-धुलाने के लिए तत्पर रहते हैं, फिर सजाने-सँवारने में, इसकी रक्षा-सुरक्षा में लगातार लगे हुए हैं। जैसे चमार प्रातःकाल से ही चमड़े का काम शुरू करता है, उसको भिगोता है, चिकना करता है, काटता है, छाँटता है, मढ़ता है, उसे सँवारता है। चमार मृत चमड़े का कार्य कर रहा है तो हम जिन्दा चमड़े का कार्य कर रहे हैं। जब तक शरीर रूपी चमड़े को अपना मान रखा है तब तक हमारा जीव उल्टी ही गंगा बहा रहा है। इसलिए कहा जा रहा है कि सबसे पहले अपने आपको जानो। भेड़ों के झुण्ड में रहा शेर का बच्चा जब तक

अपने आपको जान नहीं पाया, तब तक भेड़ों की तरह असहाय जीवन जी रहा था। लेकिन तालाब के पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखा और दूसरे किनारे पर जंगल के राजा शेर के मुँह से दहाड़ सुनी, तो आश्चर्य चकित हो गया। दूसरे किनारे पर खड़ा शेर और मेरा प्रतिबिम्ब एक जैसा है तो मैं इन भेड़ों के साथ क्यों रह रहा हूँ, मैं तो स्वयं जंगल का राजा हूँ। अब वह भेड़ों के साथ वापस नहीं जाकर अकेला ही विचरण करता है, क्योंकि वह अपने वास्तविक रूप-स्वरूप को जान गया है। हम भी अपने आपको जानने के अभाव में ही कर्मों के दास बने हुए हैं। जिस दिन जान जायेंगे उस दिन कर्म निष्प्रभावी होते जायेंगे। तब ही तो आचार्य भगवन्त ने फरमाया है-

शक्ति का भण्डार भरा है, अमल-अचल मम रूप।
मेरी शक्ति के सम्मुख नहीं, देख सके अरि भूप॥
मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप॥

इसलिए अपने आपको जानना आवश्यक है। इस मोक्ष मार्ग का प्रथम चरण भी जानना अर्थात् सम्यग्ज्ञान ही है। सम्यग्ज्ञान होते ही सम्यग्दर्शनी हो जायेंगे, श्रद्धावान बन जायेंगे। अपने आपको जानने का

चिन्तन निरञ्जन-निराकार पद की ओर कदम बढ़ा देगा। इसलिए सबसे पहले अपनी आत्मा को जानो, इस आत्मा पर लगे हुए कर्मों को समझो। ये कर्म क्या हैं? ये कैसे दूर होंगे, ये मेरी आत्मा से क्यों आकर लगे हैं, इसकी जानकारी करो। हम कोई दूसरे हैं और किसी दूसरे के लिए ही पुरुषार्थ कर रहे हैं। पराये पुत्र को खिलाने वाली धायमाता के समान हम भी पराये शरीर का ही कार्य कर रहे हैं। इसलिए ऐसा न हो जाए कि पढ़ाई किसी अन्य विषय की करें और प्रश्नपत्र अन्य विषय का आ जाए तो परिणाम अनुत्तीर्णता का ही होगा। जीव को भी जड़ का कार्य करते देखकर ज्ञानियों को अचरज होता है। जड़ से हटकर चेतन को जानें, समझें। इस प्रकार जब नकली और असली का ज्ञान हो जायेगा तब यह शरीर, काम-भोग, मोही प्रवृत्तियाँ अच्छी नहीं लगेंगी। ज्ञान हो जाने पर आपका चिन्तन अलग होगा, आपका स्थान कोई अलग होगा। इसलिए अपने आपको जानें, आत्म चिन्तन करें। जो ऐसा करेगा वही सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बन सकेगा।

★

सद्गुरोः प्रसादात्

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

- ❧ मनन से कुछ न मिलेगा।
अमन से ही सुमन खिलेगा॥
कर्म का कलिमल जलेगा।
मुक्ति का वृक्ष फलेगा॥
- ❧ न आकर्षण हो, न विकर्षण हो।
क्षण-क्षण का रक्षण हो॥
समभाव में विचरण हो।
इस प्रण में, जीवन अर्पण हो॥
- ❧ निर्लिप्तता ही साधक की पूँजी है।
निर्लिप्तता ही मुक्ति की कुञ्जी है॥

(शेषांश पृष्ठ 9 का)

सकता है। सब कुछ समझ-बूझकर करने पर भी यदि विषम परिस्थिति बन जाय, तो उसमें ही अपने को समायोजित कर उसका सदुपयोग किया जाय। जीवन में सब कुछ अपने हाथ में नहीं होता है तथापि जिस प्रकार एक ताश का खिलाड़ी जैसे पत्ते मिलते हैं, उनसे ही अच्छा खेलने का प्रयत्न करता है। उसी प्रकार जो पति या पत्नी मिले हैं उनके साथ सद्व्यवहारपूर्वक जीवन बिताया जाय। श्रद्धा वाकर की यह घटना यह शिक्षा देती है कि जीवन साथी का चयन अत्यन्त सूझबूझपूर्वक किया जाना चाहिये।

चरित्रवान श्रावक ही चारित्रात्माओं की सेवा कर सकता है

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा घोषित भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 26 अगस्त, 2022 को जैन स्कूल महामन्दिर, जोधपुर में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

समता, तितिक्षा और सहिष्णुता की भव्य प्रेरणा करने वाला पर्युषण पर्व का आज तृतीय दिवस चरित्र को चारु बना चरित्र में प्रवेश करने की प्रभावी प्रेरणा दे रहा है।

चरित्र मानव जीवन की शोभा है। जिस प्रकार आसमान की शोभा सितारों से होती है, उसी प्रकार मानव जीवन की शोभा व्यक्ति के सद्व्यवहार और चरित्र से होती है। आप बोलते हैं—

If wealth is lost, Nothing is lost.

If health is lost, Something is lost.

If character is lost, everything is lost.

अर्थात् यदि धन गया तो कुछ नहीं गया। मेहनत करके धन फिर से प्राप्त किया जा सकता है। यदि स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, लेकिन चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। लाख प्रयत्न करने पर भी पुनः उसे प्राप्त करना कठिन होता है। चरित्र मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है। यह मानव को नमनीय, वन्दनीय, समादरणीय बनाने का कारण है।

आप सभी के मन में एक प्रश्न हो सकता है कि चरित्र दिवस पर चरित्र का महत्त्व क्यों बताया जा रहा है। इसका समाधान यह है कि निर्मल चरित्र वाला व्यक्ति ही चरित्र में चरण बढ़ा सकता है।

जितने उच्च पद वाला व्यक्ति है उसका चरित्र भी उतना ही उच्च होना चाहिए। जितना बड़ा व्यक्ति होता है उसे उतनी ही अधिक सजगता रखनी होती है।

सन् 1991 में आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री

हीराचन्द्रजी म.सा. के चादर महोत्सव पर अनुभवी श्रावक रत्न श्री जौहरीमलजी पारख ने कहा था— “आचार्य पद फूलों का ताज नहीं है, यह तो काँटों का ताज है।” आप श्रावकों में से कइयों ने पारख साहब के शब्द प्रत्यक्ष सुने हैं। जो जितना ऊँचा है उसे उतना ही अधिक खतरा है। ऊँचे आसन पर बैठने वाले को ज्यादा सावधानी रखनी पड़ती है। आपको सामायिक में बैठे-बैठे कभी नींद का झोंका आ जाय तो कहाँ गिरेंगे, जबकि सन्त मुनिराज को पाटे पर बैठे नींद का झोंका आ जाए तो कहाँ गिरेंगे? दोनों के गिरने में चोट अधिक किसे लगेगी?

पद की गरिमा रखना सन्त मुनिराजों का काम है। श्रावक-श्राविका से साधु-साध्वियों का पद बड़ा है तो साधु-साध्वियों से आचार्य का पद बड़ा है। जो जितना बड़ा होगा उसे उतना ही सकारात्मक सोचना होगा, स्वयं के लिए भी और अन्यो के लिए भी।

आपके श्रावक समाज में अध्यक्ष का पद ऊँचा है तो उसे सावधानी भी अधिक रखनी होती है। उन्हें कब बोलना, कब नहीं बोलना, कब और कहाँ बैठना इत्यादि बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हम साधु-सन्तों को कितनी सजगता से क्रियाएँ करनी चाहिए, यह चिन्तन का विषय है।

मैं अभी कह गया चतुर्विध संघ में आप भी तीर्थ के अंग हैं। हमको अपना चरित्र रक्षण तो करना ही है, संघ की शौहरत बढ़े, संघ दीप्ति हो, इसका भी हम सबको ध्यान रखना है। संघ दीप्ति और शासन प्रभावना में जहाँ हमारी भूमिका है, वहीं आपकी भी भागीदारी है।

संघ का उत्थान किसी एक घटक से नहीं, अपितु चतुर्विध तीर्थ के संयुक्त प्रयास से होता है। संघोन्नति एवं शासन प्रभावना के लिए आप हम सबको चिन्तन करना आवश्यक है। सकारात्मक चिन्तन से हमारा मार्ग सरल और सहज बनेगा। हम समाचारी के अनुसार मर्यादा में रहेंगे और आपको भी इसमें हमारा सहयोगी बनकर कर्म-निर्जरा करते हुए आत्मकल्याण करना है।

चारित्र में चरण बढ़ाने के लिए अहंकार और आसक्ति को कम करना होगा। अहंकारी व्यक्ति अपने आपको विशिष्ट मानता है। वह सौहार्दपूर्ण जीवन नहीं जी सकता, लेकिन यह पर्व हमें परस्पर सौहार्द बढ़ाने के लिए सहनशील बनने का सन्देश दे रहा है।

हमारा नैतिक आचरण जितना ऊँचा होगा उतने ही हम साधना के शिखर को प्राप्त करेंगे। आप हम गुरु हस्ती-हीरा के शासन में, उनके मार्गदर्शन में साधना-आराधना करने वाले हैं। हमको हमारे गौरवशाली इतिहास को देखना है कि उन महापुरुषों ने संघ-उत्थान के लिए कितना प्रबल पुरुषार्थ किया था और वर्तमान में कर रहे हैं।

आज संघ और समाज की अपेक्षा है कि प्रत्येक श्रावक नैतिक एवं धार्मिक जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत करे, जिससे सैकड़ों लोगों को स्वतः ही प्रेरणा प्राप्त हो जाय। प्रत्येक सदस्य संघनिष्ठा से समर्पित होकर सेवा करेगा तो संघ-दीप्ति में चार चाँद लगेंगे।

हमारे महापुरुष तो संघ एकता के लिए, संघ समन्वय के लिए अपने नाम को भी गौण कर देते हैं। एक प्रसंग बालोतरा का आपके सामने रखना चाहूँगा। पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का विक्रम सम्बत् 2049 सन् 1992 का चातुर्मास बालोतरा में था। किसी एक सामाजिक स्थल का निर्माण हुआ था। भक्त लोगों की भावना थी कि हमारे गुरुदेव का नाम उस स्थान पर आना चाहिए, लेकिन एक पक्ष इस बात से सहमत नहीं था। दोनों पक्षों में तकरार की स्थिति बन रही थी। कतिपय सुज्ञ श्रावकजन गुरुदेव के पास उपस्थित हुए।

मध्यरात्रि का समय था तब गुरुदेव को निवेदन किया कि समाज में इस तरह की स्थिति बन चुकी है आप समाधान फरमाइये।

गुरुदेव ने स्थानक के द्वार पर पधारकर फरमाया- “जिस नाम से समाज की अखण्डता और एकता समाप्त होती है ऐसे नाम की मुझे आवश्यकता नहीं है।” गुरुदेव के एक वाक्य ने इतनी बड़ी समस्या का समाधान मात्र कतिपय मिनटों में कर दिया, यह है हमारे गुरुदेव की महानता, नाम की निस्पृहता।

संघ समाज में सब तरह के व्यक्ति होते हैं, समूह जहाँ होता है वहाँ अनेक अच्छाइयाँ होती हैं तो बुराइयाँ भी होती हैं। लेकिन हमें गुणवान बनना है तो गुणग्राही दृष्टिकोण अपनाना होगा। गुणग्रहण का दृष्टिकोण होगा तो संघ समाज में परस्पर सौहार्द की अभिवृद्धि होगी।

श्रावक जीवन की आधारशिला क्या है? श्रावक धर्म की समाचारी क्या है? इस पर हमें चिन्तन करना होगा कि श्रावक का जीवन कैसा होना चाहिए, इसका एक उदाहरण आपके समक्ष रखना चाहता हूँ।

शासन प्रभावना में रियाँ सेठों के सुश्रावक श्री जीवनदासजी मुणोत का व्यक्तित्व, कृतित्व आज भी श्रावक संघ को विशेष प्रेरणा देने वाला है। श्रावक का आचार-विचार और व्यवहार तो उत्तम होता है, किन्तु साथ में नैतिकता और प्रामाणिकता भी होना आवश्यक है। संघ सेवा में अग्रसर होने वाले श्रावक का जीवन निर्व्यसनी होना चाहिए; यह श्रावक धर्म की प्रथम सीढ़ी है।

आज श्रावकत्व की बात तो आगे की है, नैतिक मूल्यों की ही अवमानना हो रही है, संस्कारों में हीनता नज़र आ रही है। आज के माता-पिता मद्र-फादर कहलाने में अधिक रुचि रखते हैं, लेकिन एक बात ध्यान रखना विदेशी भाषा के साथ विदेशी संस्कृति अपने पैर देश में फैला रही है। इसलिए मद्र की क़दर और फादर का आदर माता-पिता को भगवान तुल्य

मानने वाले इस भारत देश में नहीं हो रहा है। आज जगह-जगह वृद्धाश्रम खुल रहे हैं। इसके मुख्य तीन कारण हैं-1. हमारी सहनशीलता का घटना, 2. सेवा में कमी और 3. स्वतन्त्र जीवन जीने की चाहना। हम दो हमारे दो की भावना के अनुसार आजकल बच्चे माता-पिता की सेवा नहीं करना चाहते, इसलिए उन्हें वृद्धाश्रम भेज देते हैं। अरे भाई! यदि उपकारियों के साथ इस तरह व्यवहार करने पर, क्या आपका श्रावकत्व सुरक्षित रह सकता है।

आप गुरु हस्ती-हीरा के प्रति श्रद्धा भक्ति रखते हैं। अपने आपको जैन श्रावक कहने में गौरव समझते हैं। मैं यहाँ गुरु हस्ती का चिन्तन रख रहा हूँ। उन महापुरुष ने भजन के माध्यम से बहुत सरल शब्दों में गहन भावों को रखा-

जीवन उन्नत करना चाहो,
तो सामायिक साधन कर लो।
निर्व्यसनी हो प्रामाणिक हो,
धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो तो,
सामायिक साधन कर लो।।

श्रावक कैसा हो? इस प्रश्न का समाधान भजन की इन चन्द पंक्तियों में आपको प्राप्त हो गया। हमें चिन्तन करना होगा कि क्या इन गुणों से हमारा जीवन युक्त है? हम सामायिक साधना कर रहे हैं, लेकिन प्रामाणिकता है या नहीं। हाँ तो मैं रियाँ के सेठ श्री जीवनदासजी मुणोत की बात कह रहा था। वे सच्चे श्रावक थे, हितैषी श्रावक थे। हितैषी श्रावक हित की बात कहने में संकोच नहीं करते हैं। सेठ साहब का जीवन सादा जीवन उच्च विचार वाला था। वे साधु वर्ग तथा श्रावक वर्ग को सम्यक् परामर्श युक्तिपूर्वक देने में हिचकिचाते नहीं थे। उनकी ख्याति और प्रसिद्धि चारों दिशाओं में फैल गई थी।

एक बार कुचामन के ठाकुर साहब ने जब उनका

यश, नाम सुना तो वे रियाँ आए। सेठ साहब से मिलकर उनसे प्रार्थना की कि आप कुचामन पधार कर वहाँ बस जाओ।

किसी क्षेत्र का नाम, वहाँ के राजा या सेठ की पुण्यवानी से प्रसिद्ध हो जाता है। जैसे 'रियाँ सेठों की' नाम था ऐसे ही महामन्दिर का नाम रहा है। कोई व्यक्ति कैसा भी अपराध करके आता और महामन्दिर की पहली पोल (दरवाजा) के हाथ लगाकर कह देता कि मेरी भूल हो गई, भविष्य में मेरे द्वारा ऐसी भूल नहीं होगी तो उस व्यक्ति का अपराध माफ कर दिया जाता था। इस तरह एक-एक स्थान का अपना महत्त्व है।

हाँ, तो बात चल रही थी कुचामन के ठाकुर साहब ने सेठजी को कुचामन बसने का निवेदन किया। जीवनदासजी ने कहा-मेरी एक शर्त है आप शर्त स्वीकार करें तो मैं विचार करूँ। ठाकुर साहब ने कहा आपकी क्या शर्त है? सेठ साहब ने कहा कोई अपराधी अपराध करके मेरी हवेली को हाथ लगाकर माफी माँग ले तो उसका अपराध माफ करना होगा। कुचामन के ठाकुर साहब ने कहा आपकी शर्त मञ्जूर है।

सेठजी का जीवन आदर्श जीवन था, गम्भीर हृदय वाले थे, इसलिए ठाकुर साहब ने इतनी बड़ी शर्त एक बार में स्वीकार कर ली। ऐसे श्रावकों से शासन की प्रभावना हुई है, संघ समाज का हित हुआ है। ऐसे श्रावक युक्ति से विनय-भक्तिपूर्वक साधु-साध्वियों को समझाकर 'अम्मा पियरो' की आगम उक्ति को चरितार्थ करते थे। आप भी शासन हितैषी श्रावक बनें। छद्मस्थता के कारण कमी किसी में भी हो सकती है। आप विनय भाव से निवेदन करेंगे तो उसका सकारात्मक प्रभाव होगा; जिससे चतुर्विध संघ में प्रेम का सञ्चरण होने से शासन प्रभावना होगी।

आज चारित्र दिवस है आप और हम संकल्प करें कि संघ की प्रभावना करते हुए अप्रभावना के कार्यों से बचते रहें, जिससे आत्मोन्नति के साथ शासनोन्नति भी अवश्य होगी। इन्हीं शुभ भावों के साथ....।

मिले हुए का सदुपयोग : आत्म-विकास का हेतु

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में 17 मई, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

कुछ क्षण के लिए प्रकृति का प्रकोप हुआ और बाहर के दरवाजे से काँच के टुकड़े इस दरवाजे तक हवा से पहुँच गए। बड़ी मशक्कत की फिर भी सुबह तक काँच के टुकड़े पड़े मिले। यह घटना कोई पाँचवें आरे के अन्तिम दिन की नहीं थी, यह घटना तो वर्तमान की है। आप कल्पना करें कि वायु के वेग ने, विकुर्वणा ने, तूफान ने, झंझावात ने इतना आतंक कैसे मचाया ?

कुछ दिन पहले भरतपुर में एक दीवार गिरी थी, उसमें कई लोगों का प्राणान्त हो गया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलालजी नेहरू का जिस दिन देहावसान हुआ, उस दिन भी कुछ जगह पर झंझावात आया। विश्व की कई प्रसिद्ध कथाएँ हैं। दिल्ली के सस्ता साहित्य मण्डल द्वारा प्रकाशित पहली कथा खलील जिब्रान की है। दूसरी कथा अब्राहम लिंकरन की है। पहली कथा में तूफान का वर्णन है। उसका नायक पर्वतों में भी अकेला रहा और तूफान में भी बाहर निकल जाता था। बाहर से भीतर में लौटने के लिए प्रलय की झाँकी द्वारा रोजमर्रा की घटनाएँ जीव को प्रतिबोधित कर रही हैं। विडम्बना है कि यह जीव दूसरों को बदनाम करना चाहता है, दूसरों का बिगाड़ करना चाहता है। जीव दूसरों का बिगाड़ करे या नहीं करे, पर खुद का बिगाड़ तो करता ही है।

हर व्यक्ति अपनी सत्ता स्थापित करना चाहता है। वह चाहे कोई भी क्यों न हो। सत्ता स्थापित करने की बात आपके लिए ही नहीं है, हम सबके लिये है। हम साधु हैं, साध्वी हैं, श्रावक हैं, श्राविका हैं हर कोई अपने

घर में, समाज में देश में कहीं पर भी स्थापित होना चाहता है, परन्तु घटना तो कहीं पर भी घट सकती है।

बाहर की परिस्थिति से प्रभावित होता हुआ मेरा जीव अनादिकाल से कभी मिली हुई वस्तु का सदुपयोग करके ऊपर उठा, किन्तु उसका अहंकार किया और पुनः नीचे गिर गया। जिन्हें भी ऊँची जाति मिली वह इसलिये मिली, क्योंकि पहले पाये हुए का मद नहीं किया। जीव भले ही नीच कुल में पैदा हुआ। पूर्व भव में नीचे डूबने के कर्म बाँधे, पुद्गल से अपना मूल्यांकन किया। इसलिये नीच कुल प्राप्त किया। परन्तु अब इस भव में तो जागो- आप स्वभाव में रे, अवधू सदा मगन होय रहना, कबहुक काजी, कबहुक पाजी, कबहुक हुआ अपभाजी। कबहुक जग में कीर्ति गाजी, सब पुद्गल की बाजी रे।।

आप स्वभाव में रे.....।।

यहाँ मध्याह्न में सुखविपाकसूत्र की वाचना चलती है। आज राजा है, प्रभुता सम्पन्न है, इन्द्रियों से परिपूर्ण है, परिवार, धन, सम्पदा है, सत्ता है, सब कुछ है, यह स्पष्ट संकेत है कि जीव पहले पाये हुए का सदुपयोग करके आया है। बाहर की अनुकूलता, क्षेत्र की अनुकूलता, सोने-चाँदी, पशु, दास ये सब संसार की आवश्यकता की पूर्ति के साधन उसी को मिलते हैं जिसने मिली हुई चीज का सदुपयोग किया। रोते-बिलखते खीर मिली थी, उसे भावना से दिया। रास्ते चलते मुनिराज को भावना से छाछ बहराई। ममता घटाकर मिली हुई वस्तु में परायेपन का दर्शन कर सदुपयोग किया। सन्त आए, सन्त को देखकर रोम-रोम पुलकित हो गया। उमंग-उल्लास से अपने हाथ से

बहराया। बहराते समय जड़ में परायेपन का दर्शन किया। जड़ के सदुपयोग के द्वारा अनित्य रहने वाले साधक के भाव-कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं। यहाँ भावों की बाजी चल रही है। मन में शुभ-भावना, वचन से प्रार्थना। जानते हैं-कल्लाणं शब्द का अर्थ क्या है? एक-एक शब्द का अर्थ और अर्थ के साथ भाव। प्रातःकाल जिनको याद किया जाता है उन्हें प्रातःस्मरणीय बोलते हैं। जो कल्याण करने वाले हैं और अहंकार दूर करने वाले हैं, वे कल्याण रूप हैं।

हम तेज हवा के भूचाल से घबरा रहे हैं, आन्धी-तूफान से विचलित हो रहे हैं, पर मेरे भीतर में न जाने कितने भूचाल हैं। बाहर के भूचाल से पदार्थों का नाश हो सकता है, चीजें टूट-फूट सकती हैं, लेकिन अन्दर का भूचाल कितना नुकसान पहुँचाता है उस ओर क्या कभी विचार गया है?

मिले हुए का सदुपयोग किया। मिले हुए में परायेपन के दर्शन किए। सन्त के दर्शन हुए। प्रातःस्मरणीय के दर्शन हुए। जो हमारे अहंकार का नाश करने वाले हैं, विघ्न-बाधाएँ मिटाने वाले हैं उनके दर्शन करना मंगल है।

ओ गुरुदेव धन्य हो तुम, कितने परीषह सहते हो, सर्दी-गर्मी और बरसात, तुम अपने में रहते हो।

ओ गुरुदेव चरणों में वन्दन है, अभिनन्दन है।।

भाव में पवित्रता चाहिए। अधिकतर पुण्य के सम्बन्ध में विभ्रान्तियाँ चलती हैं। पुण्य तत्त्व पूर्व का है। पूर्व का पुण्य है इसीलिये वर्तमान में कुछ मिला है। मिले हुए का सदुपयोग वर्तमान को उज्ज्वल बनाता है। मैं किसी से जलन करूँ, उसकी इज्जत मिट्टी में मिलाऊँ, ऐसा नहीं सोचें। न मन से, न वचन से और न ही काया से। यह अहंकार ही पतन कराता है।

भगवान की वाणी चेता रही है। हमको बहुत अच्छा पढ़ाया गया। सन्तों ने पढ़ाया, सतियों ने पढ़ाया, कभी श्रावक-श्राविकाओं ने भी पढ़ाया होगा। अनाकार उपयोग का मतलब है-दर्शन। अनाकार में निर्विकल्प

अवस्था होती है। उस स्थिति में लम्बी स्थिति के कर्म का बन्ध नहीं होता। मतलब क्या-जब मैं संकल्प-विकल्प, ईर्ष्या-द्वेष और दूसरों की चिन्ता में जलता हूँ, तब ही कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति बाँधता हूँ। दूसरों की तो भगवान जानें, मैं अपने लिए खाई खोद रहा हूँ। गला काटने वाला शत्रु उतना बुरा नहीं करता, उससे ज्यादा मैं अपना बुरा कर लेता हूँ। शत्रु यदि हत्या भी कर दे तो वह एक भव बिगाड़ सकता है, किन्तु मेरे अन्दर की दुर्भावना से मैं भव-भव को बिगाड़ता हूँ।

हम उच्च जाति में जन्मे हैं। ऊँचा होना जितना अच्छा है, ऊँचा दिखना उतना ही खराब है। अपने-आपको ऊँचा दिखाया, अच्छा दिखाया, अहंकार किया तो वापस उतने ही नीचे गिरने की तैयारी कर ली। इस प्रलयकाल से बचने के लिए हमें ये आँधी-तूफान, तेज हवाएँ, झंझावात चेता रहे हैं। ये प्रतिकूलताएँ-ये तूफान इस जीव को प्रतिबोधित कर रहे हैं। जब तक यह जीव अपने केन्द्र में नहीं आएगा, उसे अनन्त गुणी वेदना झेलनी पड़ेगी।

हम भगवान की वाणी पर आस्था क्यों नहीं करते? भगवान की वाणी में नरक का उल्लेख है इसका मतलब नरक कहीं-न-कहीं तो है। एक तार्किक विश्लेषण का तथ्य है-जितने भी व्युत्पत्ति वाले शब्द होते हैं उनका मतलब होता ही है। भगवान महावीर स्वामी ने गौतम गणधर से कहा था-जीव है। जीव है तो अजीव होगा ही। जीव कैसे हैं समझेंगे तो अजीव का स्वरूप भी समझ आएगा। जिन शब्दों की किसी धातु से उत्पत्ति होती है वे शब्द कहीं-न-कहीं हैं। अजीव है तो जीव भी है। शब्दों के अर्थ होते हैं। आकाश है, आकाश में पुष्प नहीं है। गधे के सिर पर सींग जैसे वाक्य गणधरवाद में बहुत तार्किक तरीके से समझाए गए हैं। शब्द है तो व्युत्पत्ति कहीं-न-कहीं मिलेगी ही। भगवान ने कहा-नरक है तो वह कहीं-न-कहीं होगा ही। आपके घर कोई आकर पूछे कि फलाँचन्दजी घर पर हैं क्या? वे घर पर नहीं हैं तो इसका मतलब है फलाँचन्दजी है तो

जरूर। हाँ, अभी घर पर नहीं है तो बाहर कहीं तो होंगे ही। शरीर में जीव है या नहीं, इस प्रश्न का मतलब है, जीव है।

कई बार उच्च गोत्र में गया, कई बार नीच गोत्र में गया, कभी क्या बना तो कभी क्या बना। कहना होगा— इस जीव ने ये सारे नाटक कर लिये हैं।

एक अणु—परमाणु सा क्षेत्र और एक क्षण भी नहीं बचा है, जहाँ कर्मों का बाना पहन कर मैंने नाटक नहीं किया हो। दूसरों को अपनी बात मनवा कर मैं सुखी बन जाऊँगा, मेरे पास सौ—पचास नौकर खड़े रहने चाहिए। इसका मतलब है ज्यों—ज्यों व्यक्ति वस्तु को पकड़ता है, वह वस्तु का गुलाम बनता ही है। तुलसीदासजी ने कहा—पराधीन सपनेहु सुख नाहिं। संसार में जितनी भी वस्तुएँ हैं उनको पकड़ना उनकी गुलामी नहीं तो क्या है? यह तो डोर—हिण्डे की तरह कभी ऊपर कभी नीचे आता—जाता रहता है। हमें ये प्रलयकाल की हवाएँ चेता रही हैं, ये रोजमर्रा की घटनाएँ—दुर्घटनाएँ सावधान कर रही हैं कि उत्पाद होता है तो व्यय भी होता है।

जीव और पुद्गल के सम्पर्क के लिए मन, वचन और काया सन्धिस्थल हैं। जुड़ना और अलग होना चलता रहता है। आप बोलते हैं—मणदुष्पणिहाणे, वयदुष्पणिहाणे, कायदुष्पणिहाणे अर्थात् मन का दुरुपयोग है उसे वश में नहीं करना। वचन का दुरुपयोग है किसी को गाली देना, अण्टसण्ट बोलना। काया का दुरुपयोग है ताड़ना—तर्जना देना।

आपने सुना होगा कई मनुष्य केवल आकृति से मनुष्य रूप में पैदा होते हैं। गर्भ में आया तो माता—पिता के लिए अनिष्ट हो गया। यह पापी जीव का प्रभाव है। वह राजा—रानी का नाम भी नहीं सुनना चाहता, देखना तो दूर की बात है। कर्म की लीला अपरम्पार है। हमें परिणामों की कितनी चौकीदारी रखनी पड़ेगी? हम इस वेश को पहन कर अछूते नहीं रह सकते। आइजो, जाइजो, रहिजो। आने—जाने के चक्कर में जो जीव अपने आपको भूल जाता है वह संसार चक्र में घूमता ही रहता

है। अच्छा—बुरा, अनुकूलता—प्रतिकूलता का यह चक्र बना ही रहता है। अच्छे में खुश होना और बुरे में रोना आर्तध्यान है। अनुकूलता है तो राग है, प्रतिकूलता है तो द्वेष है। मन, वचन और काया ये तीन इसके कारण हैं।

मणदुष्पणिहाणे क्या? मन के दस दोष हैं। अविवेक बड़ा दोष है। विवेक का जो अनादर कर बैठता है, उसका नाम है अविवेक। बुद्धि सबके पास है। सबको पता है झूठ नहीं बोलना चाहिए, चोरी नहीं करनी चाहिए। पर, जो विवेक का अनादर करता है उसके मन का दुष्प्रणिधान है।

भारत में एक अप्रैल को नया साल लगता है। एक अप्रैल को ऑपनिंग बैलेंस वही होगा जो 31 मार्च को क्लोजिंग बैलेंस था। क्लोजिंग बैलेंस ही ऑपनिंग बैलेंस होगा। आज मेरे पास जो सामग्री है वह मेरा क्लोजिंग बैलेंस ही तो है, यह ही अगले भव में मेरा ऑपनिंग बैलेंस होगा।

एक के पास पाँच सौ रुपये हैं। वह दूसरे के पास पाँच लाख रुपये देखता है तो उसे रोना आता है। रोने से क्या होगा? उसके पास इतना ही है इसका मतलब क्लोजिंग स्टॉक जितना था उतना ही तो ऑपनिंग स्टॉक होगा। इसमें रोने की या विलाप करने की क्या बात है?

आचार्यश्री हस्ती गर्भ में वैरागी बन गए। उस महापुरुष का क्लोजिंग स्टॉक अच्छा था। हर जीव को वही मिलता है जो उसका क्लोजिंग स्टॉक था। हमें सुखी को देखकर हर्षित होना है और दुःखी को देखकर करुणावान बनना है। हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा आ जाय। अमुक प्राप्त वस्तु का सदुपयोग करके आया, इसलिये आज उसे मिल रहा है। हर व्यक्ति अपनी पुण्यवानी लेकर आता है।

कल जो अन्धड़—तूफान आया, उसमें न जाने कितने पेड़ धराशायी हो गए? यह हवा या तूफान किसी का क्या बिगाड़ेगा? जो कुछ घटित हो रहा है उसके पीछे पुण्यवानी बड़ा कारण है। पुण्य तत्त्व को समझना बहुत सरल है। उसे सहज समझा जा सकता है। वर्तमान के

सदुपयोग अर्थात् सत्पुरुषार्थ रूप संवर-निर्जरा से जीव आगे बढ़ता है। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि अर्थात् सावद्य जो भी है उसका प्रत्याख्यान करना संवर है। मन, वचन और काया को वश में रखना संवर है। अभी आप धर्मस्थान में बैठे हैं, वीतराग वाणी सुन रहे हैं। अभी टी.वी. नहीं देख रहे, मोबाइल पर नम्बर डायल नहीं कर रहे हैं, इस जागृति को धर्म कह सकते हैं।

आप, हम सबको शरीर मिला। शरीर की आकृति, शरीर की मजबूती, शरीर की सुन्दरता एवं सुदृढ़ता पुण्य से मिलती है। पुण्य से स्वस्थ शरीर मिला। इसे तेरी-मेरी में नहीं गँवाना है। मन में दुष्परिणाम नहीं लाने हैं। 'गुणिषु प्रमोदं' की भावना होगी तो खाने को अच्छा मिलेगा, धन्धा बराबर चलेगा।

डी. आर. मेहता साहब गरीबों को निःशुल्क कृत्रिम पैर लगवाते हैं। किसी ने कहा-जो गरीब हैं उनसे इनकम-टैक्स का प्रमाण-पत्र लिया जाना चाहिये। किसी ने कहा-कौन गरीब है उसकी जानकारी उस क्षेत्र के एक-दो प्रतिष्ठित लोगों से पूछकर ज्ञात की जानी चाहिये। डी. आर. मेहता साहब का कथन है-जब वह स्वयं कहता है कि मैं गरीब हूँ। इसके सिवाय किसी से पूछने की क्या जरूरत है? इससे बड़ा प्रमाण पत्र नहीं हो सकता।

एक सब्जी बेचने वाला है। वह गर्मी में नींबू का पानी एवं छाछ पिलाने वाला है, पर बेचारा स्वयं नहीं पीता है। एक रिक्शे वाला है जो भरी गर्मी में पसीने से लथपथ है तब भी रिक्शा चलाता है। कोई आम बेचता है। जो आम बेचता है वह एक दिन में ज्यादा-से-ज्यादा चार पाँच सौ रुपये कमा पाता होगा। उसके बच्चे हाफुस आम खाएँ, यह सम्भव नहीं लगता। जिसके मन में करुणा होगी वह दो किलो आम खरीदेगा, आम के पैसे देगा और कहेगा-ये रख लो और अपने बच्चों को खिला देना।

आप अपने जीवन में ऐसे प्रयोग करके देखें तो सही। हमारा बीजापुर में चातुर्मास था। एक दिन एक भक्त को कोई बच्चा मिल गया। बच्चे ने कहा-“मैं भूखा हूँ।” भक्त ने बच्चे को होटल में बैठाया और कह दिया इसे भरपेट खाना खिला देना। बच्चे ने भोजन किया। भोजन का पेमेण्ट पचास-साठ रुपया आया होगा, पर उस बच्चे को कितनी शान्ति मिली।

अहमदाबाद से एक भाई दर्शनार्थ आया। रिक्शा का जो भी किराया तय किया वह तो दिया ही, पाँच रुपये हैण्डिल पर और रख दिए। पाँच रुपये ज्यादा पाकर रिक्शे वाले के चेहरे पर रौनक आ गई।

आप किसी टैक्सी में आते हैं तो चालक का धन्यवाद करते हैं या नहीं? आप न जाने कितनी बार ऑटो में बैठे होंगे। एक सज्जन ऑटो से आया। उसने ऑटो वाले से कहा-एक मिनट रुकना। मेरे घर में नौ सदस्य हैं। मैं अकेला कमाने वाला हूँ। तूने मुझे कुशलता से पहुँचाया। बिना शराब पीए, तुमने गाड़ी चलाई, मुझे सुरक्षित पहुँचा दिया इसलिये मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ। वह रिक्शा चालक बोला-“मुझे आज तक किसी ने ऐसे शब्द बोलकर उत्साहित नहीं किया।” उस रिक्शा चालक ने आगे कहा-“मैं कभी-कभी शराब पीता हूँ और शराब के नशे में गाड़ी चलाता हूँ। आपके मीठे वचनों को सुनकर मुझे बहुत शान्ति मिली है। मैं अब कभी शराब नहीं पीऊँगा।”

आप जीवन में ऐसा प्रयोग करें तो आपको लगेगा पाये हुए का दुरुपयोग जो भी करता है वह अपनी पूँजी गवाँ बैठता है। आप सुनते हैं लेकिन मोहनीय कर्म का प्रभाव है इसलिए बार-बार सुनना पड़ता है। आप-हम हर परिस्थिति में यह सोचें कि पुद्गल परिवर्तनशील है, मैं परिवर्तन के सङ्ग नहीं हूँ। जीवन में आँधी आये या तूफान भीतर में सजगता रहे।

मेरे प्रभु.....!



जैसे अन्धेरी गुफा में गये व्यक्ति को कुछ नहीं सूझता, वह ठोकर पर ठोकर खाता चला जाता है, वैसे ही अज्ञानी जीव संसार में भटकता रहता है। उसे सुख के दर्शन नहीं हो पाते।

-आचार्यश्री हीरा

भावों की साधना है तीन मनोरथ

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य एवं सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. की निश्रा में विराजित श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 15 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर, जयपुर में फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन श्री राजकुमारजी लोदिया, जयपुर के द्वारा किया गया।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

मनोरथ, मोक्षमार्ग का उत्तम पथ है। मन के रथ पर बैठकर लक्ष्य प्राप्त करना मनोरथ है। मनोरथ अध्यात्म का पथ है, साधना का पथ है, जिस पर जागृत आत्माओं का जीवन-रथ बढ़ता है। जिनकी अन्तर्दृष्टि खुल जाती है, जीवन-निर्माण की ललक जगती है वे ही इस पथ पर कदम बढ़ाते हैं। उनकी साधन प्रियता साधना प्रियता में बदल जाती है।

पदयात्रा में रथ जरूरी होता है तो चारित्र-यात्रा में मनोरथ जरूरी होता है। रथ के बिना पथ पार करना सामान्य रूप से कठिन होता है। पूर्व के समय में एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने के लिए रथ का उपयोग होता था। वर्तमान में रथ के स्थान पर गाड़ी, कार आदि वाहनों का प्रयोग होता है। यात्रा सुगमता से पूर्ण हो सके, समय और श्रम को बचाया जा सके इसके लिए पदयात्रा में रथ जरूरी है। ठीक इसी प्रकार चारित्र-यात्रा में मनोरथ जरूरी होता है।

संयम की शुरुआत-मनोरथ से,

संयम का पालन-मनोबल से,

संयम की पूर्णता मोक्ष से होती है।

एक संयमी के संयम की शुरुआत दीक्षा लेने से नहीं होती, अपितु श्रावक-जीवन में जीते हुए ही वह जब भावना भाता है कि वह दिन मेरा धन्य होगा, जिस दिन मैं अणगार-धर्म को स्वीकार करूँगा, तब यह मनोरथ ही संयम के भावों को जन्म देता है।

यदि आप चाहते हो आपके जीवन में संयम का सूर्योदय हो तो सूर्योदय के समय प्रतिदिन श्रावक-श्राविकाओं को तीन मनोरथ का चिन्तन करना चाहिए।

हम मनोरथ का सम्यक् स्वरूप समझने का प्रयास करेंगे।

स्थानाङ्गसूत्र के तीसरे स्थान के चौथे उद्देशक में चतुर्विध (श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका) संघ के तीन-तीन मनोरथ प्रभु महावीर ने फरमाये हैं। आप यह सोच रहे होंगे कि आज तक श्रावक-श्राविकाओं के तीन मनोरथ होते हैं, यह ही सुना। क्या श्रमण-श्रमणी के भी मनोरथ होते हैं? तो इसका समाधान प्रभु महावीर स्वयं कर रहे हैं-चतुर्विध संघ के तीन मनोरथ होते हैं। श्रमण-श्रमणी के भी तीन मनोरथ होते हैं तो श्रावक-श्राविका के भी 3 मनोरथ हैं। संख्या में समानता होते हुए भी साधु-साध्वी के प्रारम्भ के दो मनोरथ श्रावक-श्राविका से भिन्न होते हैं। तीसरे मनोरथ का रूप चतुर्विध संघ का एक समान होता है।

अब मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि आप किनके मनोरथ जानना चाहेंगे? श्रावकों के या श्रमणों के? (सभा में से दोनों के अर्थात् सम्पूर्ण चतुर्विध संघ के।)

स्थानाङ्गसूत्र के 3/4 में श्रमण-निर्ग्रन्थों के तीन मनोरथ इस प्रकार बताये हैं-पहले मनोरथ में साधु यह भावना भाता है कि कब मैं थोड़ा या बहुत नवीन ज्ञान प्राप्त करूँगा? दूसरे मनोरथ में साधु यह विचार करता है कि कब मैं एकल विहार पडिमा को अङ्गीकार कर विचरूँगा? तीसरे मनोरथ में साधु यह चिन्तन करता है कि मैं अन्तिम समय में पण्डितमरण को प्राप्त करूँ।

इस प्रकार का चिन्तन मन, वचन, काया से करने वाला श्रमण महानिर्जरा, महापर्यवसान वाला होता है। श्रमण-श्रमणियों के इन तीन मनोरथों में मोक्ष का राजमार्ग छुपा हुआ है।

मोक्ष के दो मार्ग हैं-1. राजमार्ग और 2. अपरमार्ग। मोक्ष का राजमार्ग है-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप तथा अपरमार्ग है-दान, शील, तप और भाव। साधु-साध्वी के मनोरथ में राजमार्ग है तो श्रावक-श्राविका के मनोरथ में मोक्ष का अपरमार्ग अन्तर्निहित है।

देखिये साधु-साध्वी का पहला मनोरथ-कब मैं अल्प/बहुत नवीन श्रुत का अध्ययन करूँगा। श्रुत अर्थात् शास्त्र, आगम, ग्रन्थ आदि का ज्ञान। पहले मनोरथ में ज्ञान की आराधना समाहित है, ज्ञान का राजमार्ग रहा हुआ है।

दूसरे मनोरथ में एकाकी विहार करने की बात आई। आप सोच रहे होंगे-प्रभु महावीर के शासन में एकल विहार की अनुमति नहीं है। सन्त विचरण करें तो कम से कम दो और साध्वी विचरण करे तो कम से कम उनका तीन होना आवश्यक है। फिर दूसरा मनोरथ वर्तमान में कैसे पूरा हो सकता है? तो इसका समाधान पूज्य गुरुदेव फरमाते हैं-वर्तमान के साधकों की मनःस्थिति एवं शारीरिक परिस्थिति के कारण एकल विहार करने का निषेध है। वृत्ति-प्रवृत्ति और प्रकृति का मेल-मिलाप नहीं होने के कारण अधिकांश सन्त-सती अलग होकर विचरण करते हैं जो आगम-आज्ञा के विरुद्ध है एवं आत्म-हित में नहीं है। हाँ, कभी विशेष परिस्थिति में अचानक ऐसा कोई प्रसङ्ग बन जाए जिसमें अकेला ही साधु रह जाय अथवा दो ही साध्वियाँ रह जाये अथवा किसी अन्य जगह कोई सेवाकार्य हो उस परिस्थिति में आचार्य की आज्ञा से एक स्थान से दूसरे स्थान पर अकेला सन्त और दो साध्वी विहार करके लक्ष्य पर पहुँच सकते हैं, पर मार्ग में धर्म-प्रभावना हेतु 1-2 रात से अधिक रुकने की आगम आज्ञा नहीं है। शारीरिक कारण से रुकना पड़े तो उसका निषेध नहीं।

सामान्य स्थिति में वर्तमान में अकेले विचरण करना आगमानुसार नहीं है। इस परिस्थिति में दूसरे मनोरथ की पूर्णाहुति इस प्रकार होती है-एकाकी विचरण अर्थात् समूह में रहते हुए भी अपनी आत्मा में विचरण करना। साधक का अन्तर उद्भूत स्वर होता है-

एगो मे सासओ अप्पा, नाण दंसण-संजुओ।

सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।

अर्थात् ज्ञान, दर्शन आदि से पूरिपूर्ण मेरी आत्मा शाश्वत है। आत्मा के सिवाय अन्य सब पदार्थ संयोग मात्र हैं। अकेले में रहना एकान्त नहीं, अपने में रहना एकान्त है।

इस प्रकार दूसरे मनोरथ का परिपालन वर्तमान में भी सम्भव है। दूसरे मनोरथ से साधक सम्यग्दर्शन को पुष्ट करता है। आत्मभावों में विचरण करके अपनी आत्मा को विशुद्ध कर अन्तर्मुखी, ऊर्ध्वमुखी बनाकर सम्यग्दर्शन से केवलदर्शन को प्राप्त करता है।

साधु-साध्वी का तीसरा मनोरथ संलेखना-संधारा स्वीकार कर पंडितमरण की आराधना करना है। इस तीसरे मनोरथ से संयमी चारित्र और तप इन दोनों मार्गों की आराधना-साधना करता है। संलेखना अनशन रूपी तप है और इसके साथ पंडितमरण की आराधना 6 काया का रक्षक तीन करण तीन योग से 18 पापों का त्यागी चारित्र धारक श्रमण ही कर सकता है। श्रावक का संधारे सहित यदि मरण होता है तो बालपण्डितमरण होता है। पण्डितमरण तो चारित्र धर्म की आराधना करने वाले श्रमण-श्रमणी का ही होता है। इस प्रकार श्रमण-श्रमणी के तीन मनोरथ में मोक्ष के चार राजमार्ग सन्निहित हैं।

श्रावक-श्राविका अपने जीवन के उत्थान के लिए, मध्यलोक से मुक्तिलोक को संप्राप्त करने के लिए प्रतिदिन तीन मनोरथ का चिन्तन करते हैं। उन श्रावक-श्राविका के ठाणांगसूत्र में तीन मनोरथ कौन-कौनसे बताए और उन तीन मनोरथ से मोक्ष का अपरमार्ग दान-शील-तप-भाव कैसे उजागर होता है,

उसे भी देखने का प्रयास करेंगे-

श्रावक-श्राविका का पहला मनोरथ-कब मैं अल्प या बहुत परिग्रह का त्याग करूँगा। दूसरा मनोरथ-कब मैं मुण्डित होकर गृहस्थावास को छोड़कर प्रव्रज्या अङ्गीकार करूँगा। तीसरा मनोरथ-कब मैं अन्तिम समय में संलेखना-संथारापूर्वक मरण को प्राप्त करूँगा। पहले मनोरथ में आप सभी को एक सुधार (Correction) करना है, अक्सर सभी जगह पहला मनोरथ गलत बोला जा रहा है जबकि ठाणांगसूत्र के मूलपाठ में- 'कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि।' अर्थात् पहले मनोरथ में श्रावक अल्प या बहुत परिग्रह का त्याग करता है, आरम्भ का त्याग नहीं। जबकि अधिकांश जगह पहला मनोरथ बोलते समय यह कहा जाता है कि वह दिन धन्य होगा जब मैं आरम्भ-परिग्रह का त्याग करूँगा। श्रावक पहले मनोरथ में परिग्रह शब्द ही बोलें, आरम्भ नहीं।

पहले मनोरथ में मोक्ष के अपरमार्ग के प्रथम दानधर्म की आराधना सन्निहित है। श्रावक परिग्रह का त्याग करने का लक्ष्य बनाता है तो उसके भीतर दान करने की भावना जागृत होती है।

दूसरे मनोरथ में शीलधर्म की साधना सन्निहित है, श्रमण हो जाने पर जीवनपर्यन्त अब्रह्म का त्याग और शीलधर्म की जीवन्त साधना होती है।

तीसरे मनोरथ में संथारा अर्थात् तपधर्म की भावना गर्भित है और दान-शील-तप तभी सार्थक होते हैं जब उसमें भाव जुड़ा हुआ हो। इस तरह से साधु मोक्ष के राजमार्ग पर और श्रावक मोक्ष के अपरमार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को संप्राप्त करता है।

श्रावक-श्राविका अपने तीन मनोरथ में तीन चीजें छोड़ते हैं, क्योंकि मनोरथ जोड़ने के लिए नहीं छोड़ने के लिए होते हैं, जो छोड़ सकता है वही मालिक होता है। श्रावक पहले मनोरथ में-सम्पत्ति, दूसरे मनोरथ में-संसार, तीसरे मनोरथ में-शरीर को छोड़ता है। उपलक्षण से सम्पत्ति, संसार, शरीर की आसक्ति को छोड़ता है।

इस प्रकार मनोरथ मोक्षमार्ग का उत्तमपथ है।

संयम की शुरुआत-मनोरथ से होती है तो संयम का पालन मनोबल से अर्थात् मन दृढ़ हो, आत्म-विश्वास गहरा हो, व्रत-नियमों के प्रति निष्ठा हो तो ही संयम का पालन सम्यक् रूपेण हो पाता है अन्यथा मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। एक सच्चे संयमी साधक को यदि संयम का परिपूर्ण पालन करना है तो अपने मन को हमेशा दृढ़-दृढ़तर करता चले, जिससे संयम में दोष नहीं लगे। जब तक जीव कर्मों से मुक्त नहीं हो पाता तब तक चारित्रधर्म की आराधना में अप्रमत्त रहना होता है। चारित्रधर्म अर्थात् संयम की पालना से कर्मक्षय होते हैं और यथाख्यात चारित्र मुक्ति दिलाता है। इसलिए कहा-संयम की शुरुआत मनोरथ से, संयम का पालन-मनोबल से और संयम की पूर्णता-मोक्ष से होती है।

आप सभी के जीवन का दूसरा मनोरथ ही संयम का है, इसलिए यदि आप अपने जीवन में संयम की शुरुआत करना चाहते हैं तो प्रतिदिन तीन मनोरथ का चिन्तन कीजिए-

एक प्रश्न है कि मनोरथ का चिन्तन कब करें?

श्रुत परम्परा से इसका समाधान ज्ञानी भगवन्त फरमाते हैं-प्रातःकाल। एक बात याद रखें प्रातःकाल की वेला में किया गया चिन्तन शीघ्र फलीभूत होता है, इसलिए प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका को तीन मनोरथ का चिन्तन-मनन करना चाहिए। इन तीन मनोरथ का चिन्तन करने से क्या लाभ होता है? आगमकार स्वयं फरमा रहे-महाणिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ अर्थात् तीन मनोरथ का चिन्तन करने से महानिर्जरा और महापर्यवसान होता है।

जिनशासन की महिमा देखो। तीन मनोरथ का भावपूर्वक चिन्तन करने मात्र से ही इतना बड़ा फल बताया है। महानिर्जरा अर्थात् जिसके द्वारा कर्मों की अधिक निर्जरा होती है और महापर्यवसान का अर्थ होता है-पुनः मरण नहीं करने से अन्तिम है जीवन जिसका,

ऐसे अपुनरागमन अवस्था को सम्प्राप्त कराने वाला महापर्यवसान है। इसलिये उत्कृष्ट भावों के साथ हमें तीन मनोरथ का प्रतिदिन चिन्तन करना चाहिए।

जो चिन्तन मोक्ष की ओर ले जाए उसे मनोरथ कहते हैं। एक ऐसा चिन्तन जो आपको मध्यलोक में रहते हुए भी मुक्तिलोक से जोड़ता है। एक ऐसा भाव जो संसार का सदा-सदा के लिए अभाव कराता है। एक ऐसा लक्ष्य जिसके उपलक्ष्य में 'मुक्ति' प्राप्त होती है। एक ऐसा विचार जो साधक को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित, प्रोत्साहित करता है। एक ऐसी साधना जो मनोबल बढ़ाती है। मन को नमन और मनन की दिशा में लगाती है। एक ऐसी आराधना जिसके आचरण से विपुल/महान कर्मों की निर्जरा होती है, ऐसे 'मनोरथ' का स्वरूप हमने हृदय से सुना अब आपको यही कहना है कि मनोरथ मति का विषय नहीं, गति का विषय बनना

चाहिए। जैसा चिन्तन हम करते हैं वैसा ही हमारा आचरण होना चाहिए, उसी दिशा में हमारे कदम आगे बढ़ने चाहिए। प्रतिदिन आरम्भ-समारम्भ, विग्रह-परिग्रह को बढ़ाने का उपक्रम करने के बजाय इच्छाओं का संसार घटाते हुए आवश्यकताओं के संसार को भी सीमित करने का लक्ष्य रखें। संसार समाप्त करने से पहले संसार को सीमित करना होता है। जिसका संसार सीमित हो गया उसका संसार समाप्त होने में देर नहीं लगती। मनोरथ संसार सीमित भी करता है और संसार को समाप्त भी करता है।

आप सभी सुज्ञ हैं, विज्ञ हैं, प्रभु महावीर के शासन में अपना आसन ग्रहण करने के लिए प्रतिदिन आप सभी तीन मनोरथ का सम्यक् प्रकार से चिन्तन कर संसार सीमित कर परित संसारी बन संसार-सागर को पार करें, इन्हीं शुभभावों के साथ.....

करो कुछ ऐसी तैयारी

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षकम्

(तर्ज :: मत कर काया रो अहंकार.....)

अवसर आया है इस बार,

नर भव पाया है इस बार,

करके पार चौरासी.....

करके पार चौरासी, थे भोगे दुःख जहाँ भारी।

मौका निकल न जाये,

ये क्षण अब फिसल न जाये,

करो कुछ ऐसी तैयारी, हाँ-हाँ ऐसी तैयारी।।टेर।।

हर पल कर रहे हैं प्रमाद,

जीवन हो रहा बर्बाद,

जिसकी फिकर नहीं है.....

जिसकी फिकर नहीं है, ये साँसें बिखर रही हैं।

मौका निकल न जाये

ये क्षण अब फिसल न जाये

करो कुछ ऐसी तैयारी, हाँ-हाँ ऐसी तैयारी।।1।।

देखो, देखो स्वयं ही निज को,

खोजो, खोजो स्वयं ही निज को,

निज ही सार है जग में.....

निज ही सार है बाकी, सब निस्सार इस जग में।

मौका निकल न जाये,

ये क्षण अब फिसल न जाये,

करो कुछ ऐसी तैयारी, हाँ-हाँ ऐसी तैयारी।।2।।

मन में दृढ़ता और विश्वास,

संकल्पों का हर्षोल्लास,

लेकर खोज निज की हो.....

लेकर खोज निज की हो,

सफल हम शत-प्रतिशत हों।

मौका निकल न जाये,

ये क्षण अब फिसल न जाये,

करो कुछ ऐसी तैयारी, हाँ-हाँ ऐसी तैयारी।।3।।

-स्री 16/1, कृष्णकुञ्ज, हत्लेड रोड, भीलवाड़ा-

311001 (राजस्थान)

जैन श्रावकाचार की सामाजिक प्रासङ्गिकता

समणी डॉ. शशिप्रज्ञा

प्रस्तावना

भगवान महावीर के आचार दर्शन का आधार समता है। आचारो में कहा गया-‘समियाए धम्मो’ अर्थात् समता से भिन्न धर्म नहीं हो सकता। जो समतावान् होता है वह पापकारी प्रवृत्ति नहीं कर सकता। वास्तव में रागद्वेष रहित कर्म ही आचार है। जिस व्यक्ति के व्यवहार में रागद्वेष की जितनी प्रबलता होगी उसका आचार एवं व्यवहार उतना ही अधिक दूषित होगा। इसलिए आचार की उच्चता के लिए समत्व में प्रतिष्ठित होना आवश्यक है।

समता दो प्रकार की है-स्वनिश्चित और परनिश्चित। रागद्वेष के उपशमन के द्वारा अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में सन्तुलित अनुभूति करना स्वनिश्चित समता है। सब प्राणी सुख के इच्छुक और दुःख के विरोधी हैं। इसलिए कोई भी वध उचित नहीं है, यह आत्मतुला परनिश्चित समता है। स्वनिश्चित समता की सिद्धि के लिए भगवान ने कषाय के उपशमन का उपदेश दिया, परनिश्चित समता की सिद्धि के लिए प्राणातिपात आदि पापों से विरत होने का उपदेश दिया। स्वनिश्चित समता आत्मशुद्धि परक है एवं परनिश्चित समता जीवन शुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार पर आधारित है। जैनाचार का यह वैशिष्ट्य है कि यह निश्चय और व्यवहार में सन्तुलन बनाए हुए है। फलस्वरूप आत्मारामता समाज के विकास में भी सहयोगी बन जाती है। प्रस्तुत लेख में निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी-

1. जैनाचार सिद्धान्तों की युगीन समस्याओं के समाधान में क्या भूमिका है?
2. हर समाज का हर व्यक्ति इन नैतिक मूल्यों की आराधना कैसे कर सकता है?

3. श्रावक के 12 व्रत की सामाजिक प्रासङ्गिकता क्या है?

जैनाचार का आधार : रत्नत्रय

जैनाचार की पूर्व भूमिका है-ज्ञान। ज्ञान शून्य आचार को कोई महत्त्व प्राप्त नहीं है। अहिंसा की अनुपालना ज्ञानपूर्वक ही सम्भव है। दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है कि जो जीव को नहीं जानता, अजीव को नहीं जानता, वह संयम का कैसे पालन करेगा? अर्थात् अज्ञानी के लिए संयम का आचरण असम्भव है। पहले यह जान लेना आवश्यक है कि जीव क्या है? अजीव क्या है? यह जानने के बाद ही अहिंसा की अनुपालना सरलता से हो सकती है। आचार्य उमास्वाति ने कहा है-‘सम्यग्दर्शनज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः।’ अर्थात् सम्यग्दृष्टिकोण, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र तीनों का समन्वित रूप ही मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करता है। जैनाचार की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि इसके सम्पूर्ण सिद्धान्त अनेकान्त पर आश्रित हैं। सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र के एकांगी मार्ग से मोक्ष की प्राप्ति असम्भव है। ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः। ज्ञान एवं क्रिया का समन्वय ही परम लक्ष्य को प्राप्त करा सकता है। भक्तिमार्ग, ज्ञानमार्ग एवं आचारमार्ग की एकांगी प्ररूपणा से हटकर जैनदर्शन त्रिवेणी सङ्गम को आचार की पराकाष्ठा स्वीकार करता है।

ज्ञान का फल है-अहिंसक आचरण। वही ज्ञान सम्यक् होता है, जिसकी पूर्णता अहिंसा में हो। जिस ज्ञान से हिंसा की उत्प्रेरणा मिलती हो, हिंसा की साधन सामग्री विकसित होती हो वह ज्ञान नहीं, ज्ञानाभास है। संसार-परिभ्रमण का हेतु है। वास्तविक ज्ञानी तो वही है जो समता एवं अहिंसा की

अनुपालना करता है। सूत्रकृताङ्गसूत्र में कहा है-ज्ञानी होने का यही सार है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। समता अहिंसा है, इतना ही उसे जानना है। अतः स्पष्ट हो गया कि अहिंसा ही परम आचार है, जिस पर जैनदर्शन के समस्त सिद्धान्त टिके हुए हैं और यह अहिंसा समता के आधार पर विकसित होती है। जैसे-मुझे दुःख अप्रिय है वैसे ही सब जीवों को दुःख अप्रिय है। इस समता का अनुभव जितना विकसित होता है, उतनी ही अहिंसा विकसित होती है और समाज में यदि इस आत्मौपम्य की चेतना जागृत हो जाए तो वर्तमान में व्याप्त आतंकवाद, बलात्कार, भ्रष्टाचार, अमानवीय व्यवहार को स्वयं विराम मिल जाए।

भगवान महावीर ने आचार के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी चिन्तन प्रस्तुत किया। उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि गृहस्थ समाज में रहता हुआ, सम्पूर्ण अहिंसा व्रत का पालन नहीं कर सकता। अतः उन्होंने दो प्रकार के आचार की प्ररूपणा की- श्रमणाचार एवं श्रावकाचार। श्रमणों के लिए पाँच महाव्रतों का देशकाल निरपेक्ष होकर त्रिकाल में पालन अनिवार्य है जबकि श्रावक के लिए बारह व्रतों का देशकाल एवं क्षमता सापेक्ष पालन करने का प्रावधान है।

बारह व्रतों की सामाजिक प्रासङ्गिकता

जैनागमों में हर गृहस्थ के लिए पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत एवं चार शिक्षाव्रत का प्रावधान कर भगवान महावीर ने स्वस्थ, शान्त, समृद्ध एवं अहिंसक समाज संरचना का सूत्र हाथों में थमा दिया। पाँच अणुव्रत, जो जैनाचार्यों द्वारा प्रतिपादित हैं-अहिंसा, सत्य, अचौर्य, स्वदार सन्तोष एवं इच्छा परिमाण-ये पाँचों व्रत न केवल आत्मकल्याण के लिए उपयोगी हैं, अपितु समाज, राष्ट्र और विश्व के कल्याण के लिए भी अत्यन्त उपयोगी हैं। अब हम क्रमशः बारह व्रतों की वर्तमान समस्याओं के सम्दर्भ में सामाजिक प्रासङ्गिकता पर प्रकाश डालेंगे।

1. अहिंसा अणुव्रत

एक अहिंसक समाज की संरचना के प्रथम सोपान पर अहिंसा की न्यूनतम मर्यादा का पालन करने वाला व्यक्ति कम से कम चलने-फिरने वाले स्थूल जीवों की हिंसा नहीं करेगा, निरपराधी को समाप्त करने का प्रयास नहीं करेगा और बिना प्रयोजन किसी को संकल्पपूर्वक नहीं मारेगा। भगवान महावीर ने गृहस्थ के लिए आरम्भजा हिंसा एवं विरोधजा हिंसा का परिहार नहीं किया, अपितु संकल्पजा हिंसा का निषेध किया है। इस छोटे से व्रत को व्यापक रूप में अपना लिया जाए तो वर्तमान विश्व की ज्वलन्त समस्या, आतंकवाद के समाधान की दिशा प्रशस्त हो सकती है, उसकी जड़ें उखड़ सकती हैं।

भगवान महावीर का युग कृषि प्रधान युग था। उस समय खेती मुख्यतः पशुओं पर आधारित थी। एक दृष्टि से खेती और पशु अभिन्न से हो गए थे। पशुओं के प्रति किसी प्रकार का क्रूर व्यवहार न हो, इस बिन्दु पर भगवान ने बल दिया। स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत के पाँच अतिचार महावीर युग में पशु हिंसा के सन्दर्भ में अधिक प्रचलित थे। वे इस प्रकार हैं-

1. वध-निर्दयता से मार-पीट करना।
2. बन्धन-गाढ़ बन्धन से बाँधना।
3. अङ्ग-भङ्ग-चमड़ी उतारना और नाक-कान आदि अवयव काटना।
4. अतिभार-बहुत अधिक भार लादना।
5. वृत्ति-विच्छेद-अपने आश्रित प्राणी के खान-पान या आजीविका में कटौती करना।

आजकल कृषि की स्थिति बदल चुकी है। फिर भी पशुओं के प्रति क्रूर व्यवहार छूट नहीं पाया है। पशु पर अतिभार लादने की बात आज भी चलती है। क्रूरता के अन्य कारणों में मनोरञ्जन, प्रसाधन सामग्री एवं चिकित्सा को लिया जा सकता

है। साण्डों की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई इत्यादि रईस लोगों की शौकिया वृत्ति की परिणति है। प्रसाधन सामग्री का निर्माण करने के लिए, थोड़े से लोगों की विलासी मनोवृत्ति के लिए, छोटे-बड़े निरीह प्राणियों को जिस क्रूरता से मारा जाता है वह निश्चित ही मानव सभ्यता के लिए एक महाकलंक है। चिकित्सा के क्षेत्र में ई-शोध भी एक ऐसा ही नशा है। उस निमित्त से आज तक एक-एक वैज्ञानिक हजारों-हजारों मेंढ़क, चूहों और बन्दरों को बलि का बकरा बना देता है जो अहिंसा अणुव्रतियों के लिए सर्वथा, अवाञ्छनीय एवं त्याज्य है।

2. सत्य अणुव्रत

एक श्रावक अहिंसा अणुव्रत का पालन करता है तो उसे सत्यनिष्ठ बनना होगा, मृषावाद का वर्जन करना होगा। मृषा (झूठ) सम्भाषण के मुख्यतः चार कारण माने गए हैं-क्रोध, लोभ, भय और हास्य। इन कारणों की तीव्रता को नियन्त्रित करने से सहज रूप से सत्य की साधना हो सकती है। सत्य अणुव्रत का पालन करने वाला श्रावक पुष्ट आधार के बिना किसी पर दोष का आरोपण नहीं करता। किसी के लिए अहितकारक असत्य नहीं बोलता। किसी के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन नहीं करता। किसी को गलत पथदर्शन नहीं देता और झूठी साक्षी नहीं देता एवं झूठा हस्ताक्षर भी नहीं लिखता। इनमें से एक भी आचरण करने वाला न केवल व्रत भङ्ग का, अपितु सरकार के कानून के तहत अपराधी होता है एवं विविध प्रकार के दण्ड का भागी बनता है। पर सत्य अणुव्रत का पालक न केवल अपराध मुक्त समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, अपितु समाज में विश्वास का पात्र बनता है और विश्वास सत्य के बिना नहीं होता। समाज के सारे व्यवहार का आधार सत्य है। उसके बिना एक दिन भी लेन-देन का बाजार नहीं चल सकता। आर्थिक व्यापार एवं आर्थिक बाजार का विकास सत्य पर ही टिका हुआ है।

3. अचौर्य अणुव्रत

श्रावकाचार में अचौर्य अणुव्रत की महती उपयोगिता है। इस व्रत के अनुसार चोरवृत्ति से किसी दूसरे की वस्तु उठाने से अचौर्य अणुव्रत भङ्ग होता है। किन्तु गहराई से विचार करने पर ज्ञात होता है कि अनैतिकता या अप्रामाणिकता की वृत्ति ही चोरी है। जब तक मनुष्य में नैतिकता की चेतना जाग्रत नहीं होती, वह आर्थिक अपराधों से नहीं बच सकता। नैतिकता का विकास तब ही सम्भव है, जब कोई भी मनुष्य दूसरे के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार न करे। क्रूरतापूर्ण व्यवहार दो तरह से हो सकता है-शरीर के सन्दर्भ में और आर्थिक सन्दर्भ में। शारीरिक स्तर पर की जाने वाली क्रूरता का समावेश हिंसा में होता है। आर्थिक मामले में बर्ती जाने वाली क्रूरता जैसे बच्चों की खाद्य-पेय सामग्री में मिलावट, दवाओं में मिलावट, सामान्य खाद्य-पेय पदार्थों में मिलावट करना, भ्रष्टाचार करना, झूठामाप-तोलकर ग्राहकों को धोखा देना, टैक्स की चोरी करना, राज्य निषिद्ध वस्तुओं का आयात-निर्यात करना इत्यादि चोरी से बचने की मनोवृत्ति का सम्बन्ध अचौर्य अणुव्रत के साथ ही है। इस प्रकार अचौर्य अणुव्रती नैतिक मूल्यों के विकास में एवं भ्रष्टाचार-क्रूरता मुक्त समाज निर्माण में आदर्श नागरिक की भूमिका अदा कर सकता है।

4. स्वदारसन्तोष व्रत

गृहस्थ के साधना क्रम में 'स्वदारसन्तोष' (अपनी पत्नी से सन्तोष करना) का प्रयोग बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस प्रयोग से उन्मुक्त वासना सिमटकर एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाती है। विवाह संस्था के दृढीकरण में 'स्वदारसन्तोष' व्रत की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। जिस समाज या पाश्चात्य संस्कृति में इस प्रकार के व्रत का मूल्य नहीं है, वहाँ विवाह के बाद भी उच्छृंखल यौनाचार चलता है। विवाह पूर्व और विवाहेतर यौन सम्बन्धों के कारण, वेश्या

गमन एवं परस्त्रीगमन के कारण पति-पत्नी में आपसी कलह की स्थिति पैदा होती है और परिवार टूट जाते हैं। इस दृष्टि से स्वदारसन्तोष व्रत को पारिवारिक जीवन का आधार माना जा सकता है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर पूर्वी राष्ट्र भी अपने उन्मुक्त भोग से उत्पन्न होने वाली समस्याएँ जैसे पारिवारिक विघटन, तलाक, यौन शोषण, बलात्कार, क्रूरतापूर्ण कर्म, यौन व्यापार आदि में लिप्त पाए जा रहे हैं। एड्स जैसी जानलेवा बीमारी का मुख्य कारण इसी को माना जाता है, जिसका नाम ही रोंगटे खड़े कर देता है।

5. अपरिग्रह अणुव्रत

आर्थिक आपाधापी के इस युग में आत्म-विस्मृति अपने अति के बिन्दु तक पहुँच गई है। आज सारा समाज परिग्रह की आसक्ति के दुष्परिणाम भुगत रहा है। चारों ओर स्वार्थ की दौड़ भाग मची हुई है। सभी स्वकेन्द्रित चिन्तन कर रहे हैं—मैं सुखी रहूँ, मेरा परिवार सुखी रहे—इस आकांक्षा को साकार रूप देने के लिए मनुष्य धनार्जन की अन्धी दौड़ में भागता जा रहा है। धनार्जन जो जीवन जीने के लिए उपयोगी साधन था, आज उसने साध्य का स्थान बना लिया है। सारी समस्याओं की जड़ है—धन को केन्द्र में रखकर कार्य करना। फलतः समाज में संग्रहवृत्ति बढ़ रही है। संग्रहवृत्ति के कारण आसक्ति अथवा तृष्णा बढ़ रही है। जिसके फलस्वरूप समाज में अपहरण, शोषण, अनियन्त्रित भोग एवं आर्थिक वैषम्य बढ़ रहा है। भगवान ने इन सबकी समाप्ति के लिए मानव जाति को इच्छा परिमाण एवं अपरिग्रह का सन्देश दिया।

उन्होंने बताया कि इच्छा आकाश के समान अनन्त है। मनुष्य अपनी संग्रहवृत्ति को इच्छा परिमाणव्रत द्वारा या परिग्रह-परिमाण व्रत के द्वारा नियन्त्रित करे। महावीर ने कभी नहीं कहा कि एक गृहस्थ के लिए अपरिग्रही होना आवश्यक है। उन्होंने

परिग्रह की कोई निश्चित सीमा-रेखा नियत नहीं की, अपितु उसे व्यक्ति के स्वविवेक पर छोड़ दिया। इसका जीवन्त उदाहरण है—उपासकदशा में वर्णित आनन्द आदि दसों श्रावकों का जीवन, जिन्होंने समृद्ध होने पर भी स्व विवेक से किस प्रकार जमीन-जायदाद, बहुमूल्य वस्तुएँ, धन-धान्य, पशु एवं अन्य छोटी से छोटी वस्तुओं की सीमा रेखा निर्धारित की एवं स्वेच्छा से संयम ग्रहण किया। अतः गृहस्थ के सन्दर्भ में अपरिग्रह के तीन सूत्र बनते हैं—(i) अर्जन में नैतिकता-अशुद्ध साधन का उपयोग नहीं करना। (ii) अर्जन की सीमा-अमुक स्थिति तक पहुँचने के बाद व्यवसाय से मुक्त होना। (iii) अर्जित सम्पत्ति के व्यक्तिगत भोग का संयम करना।

इस प्रकार हर गृहस्थ परिग्रह परिमाण व्रत द्वारा न केवल अर्थ के अर्जन एवं भोग का संयम करता है, अपितु अर्थ की आसक्ति एवं अहं से भी बचता है। जिसके परिणामस्वरूप परिवार, समाज में दहेज को लेकर होने वाली हत्याएँ एवं विविध प्रकार के तनाव को विराम मिल सकता है। शोषण, अपराध चेतना, अपहरण, क्रूरतापूर्ण व्यवहार, अमानवीय व्यवहार, आर्थिक वैषम्य से उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियात्मक हिंसा, प्रदर्शन की वृत्ति इत्यादि आज सामान्य जनता में प्रतिशोध की भावना उत्पन्न करती है। इन सारी समस्याओं का समाधान इच्छा परिमाणव्रत से स्वतः हो जायेगा एवं शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व सम्पन्न समाज का सपना साकार हो सकेगा।

सामाजिक जीवन में जो भी विषमता और संघर्ष वर्तमान में हैं, उन सबके पीछे कहीं न कहीं अनियन्त्रित आवेश, अहंकार, छल-छद्म (कपट-वृत्ति) तथा लोभ-वृत्ति है। इन्हीं अनियन्त्रित कषायों के कारण सामाजिक जीवन में विषमता और अशान्ति उत्पन्न होती है। आवेश या अनियन्त्रित

क्रोध के कारण पारस्परिक संघर्ष, आक्रमण, युद्ध एवं हत्याएँ होती हैं। आवेशपूर्ण व्यवहार दूसरों के मन में अविश्वास उत्पन्न करता है और फलतः सामान्य जीवन में जो सौहार्द होना चाहिए, वह भङ्ग हो जाता है। वर्ग या अहंकार की मनोवृत्ति के कारण ऊँच-नीच का भेद-भाव, पारस्परिक-घृणा और विद्वेष पनपते हैं। सामाजिक जीवन में जो दरारें उत्पन्न होती हैं, उनका आधार अहंकार भी होता है। माया या कपट की मनोवृत्ति भी जीवन को छल-छद्म से युक्त बनाती है। इससे जीवन में दोहरापन आता है तथा अन्तः-बाह्य की एकरूपता समाप्त हो जाती है। फलतः मानसिक एवं सामाजिक शान्ति भङ्ग होती है। संग्रह की मनोवृत्ति के कारण शोषण और व्यावसायिक जीवन में अप्रामाणिकता फलित होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि श्रावक-जीवन में कषाय-चतुष्टय पर जो नियन्त्रण लगाने की बात कही गई है, वह सौहार्द एवं सामञ्जस्य पूर्ण जीवन एवं मानसिक तथा सामाजिक शान्ति के लिए आवश्यक है। उसकी प्रासङ्गिकता कभी भी नकारी नहीं जा सकती है।

तीन गुणव्रत

पाँच अणुव्रत के बाद श्रावक के लिए तीन गुणव्रत बतलाए गए हैं।

- (i) दिग्ब्रत-गमनागमन के लिए क्षेत्र का सीमाकरण।
- (ii) भोगोपभोग-परिमाणव्रत-खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने आदि काम आने वाली वस्तुओं का संयम।
- (iii) अनर्थदण्ड विरमण व्रत-बिना प्रयोजन हिंसा से बचना एवं अनावश्यक हिंसा का परित्याग करना।

जैसे तम्बू तानने के लिए जमीन में कुछ खूंटियाँ गाड़नी पड़ती हैं, खूंटियों के आलम्बन बिना तम्बू टिक नहीं सकता; उसी प्रकार इच्छा परिमाण

एक तम्बू है। उसे टिकाने के लिए तीन खूंटियों की अनिवार्यता है। इस प्रकार इन तीन व्रतों या नियमों को स्वीकार किए बिना इच्छाओं को सीमित करने का संकल्प फलित नहीं हो सकता।

6. दिग्ब्रत

साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के दो रूप हैं-क्षेत्र-विस्तार और व्यापार विस्तार। प्राचीनकाल में क्षेत्रीय उपनिवेशवाद का प्रचलन था। आज उसका स्थान व्यावसायिक उपनिवेशवाद ने ले लिया है। वर्तमान परिस्थितियों में सामान्यतः कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर सीधा अधिकार करना नहीं चाहता। किन्तु व्यापार पर अपना कब्जा करने के अवसर खोजता रहता है। बहुदृष्टीय कम्पनियों की घुसपैठ भी आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने के लक्ष्य से हो रही है, ऐसा माना जाता है। किसी भी राष्ट्र में व्यावसायिक प्रभुत्व के विस्तार को रोकने में दिग्ब्रत एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। दिग्परिमाणव्रत स्वीकार करने वाला अपने अर्थोपार्जन एवं विषयभोग का क्षेत्र छहों अथवा चारों दिशाओं में निर्धारित करता है। जिसके फलस्वरूप अर्थलोलुपता एवं विषय तृष्णा की पूर्ति हेतु देश-विदेश में भटकन की मनोवृत्ति पर स्वतः नियन्त्रण स्थापित हो जाता है। यद्यपि वर्तमान तीव्र सञ्चार तकनीकी के युग में कहा जा सकता है कि इस प्रकार के व्रत की क्या प्रासङ्गिकता हो सकती है। इस व्रत के द्वारा अनियन्त्रित आकांक्षाओं पर अंकुश लगता है, स्वदेश प्रेम एवं स्वावलम्बन का विकास होता है, अनावश्यक हिंसा एवं परिग्रह पर स्वतः नियन्त्रण हो जाता है। निर्धारित क्षेत्र से बाहर यातायात की सीमा करने से उन क्षेत्रों में होने वाले समस्त आरम्भ-समारम्भ के पाप से न केवल व्यक्ति बचता है, अपितु सन्तोषवृत्ति का विकास करता है, जो सुखी जीवन का आधार सूत्र है।

7. भोगोपभोग-परिमाणव्रत

श्रावक के व्यक्तिगत जीवन में स्वेच्छा से

भोगोपभोगवृत्ति पर अंकुश लगाना ही इस व्रत का मूल उद्देश्य है। आज की भोगवादी संस्कृति के युग में इस व्रत की उपयोगिता को कोई विचारशील व्यक्ति अस्वीकार नहीं करेगा। आज भोगोपभोग सामग्री की जितनी विधाएँ विकसित हुई हैं, उस भूल-भुलैया में व्यक्ति बाजार में जाने के बाद जेब खाली किए बिना नहीं लौट पाता है। छोटी से छोटी साबुन से लेकर बड़ी से बड़ी वस्तुओं की इतनी विविधताएँ हैं कि व्यक्ति का दिमाग चकरा जाता है कि क्या खरीदें और क्या न खरीदें? आनन्द श्रावक ने किस प्रकार विलेपन, हस्तप्रोच्छन, मुखवास जैसी छोटी-छोटी वस्तुओं का संयम कर स्वादवृत्ति, आसक्ति एवं उच्छृंखल भोग पर अंकुश लगाया। इस व्रत से स्वादवृत्ति के कारण बढ़ने वाली बीमारियों पर रोकथाम सम्भव है एवं अनावश्यक धारण करने के वस्त्र, दैनन्दिन प्रयोग में आने वाली नई साधन-सामग्री, बर्तन, चद्दर, फ्रीज इत्यादि सारी सुविधाजनक सामग्री के संग्रह एवं आसक्ति पर नियन्त्रण होगा एवं अभाव ग्रस्त को भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो सकती है।

जैनाचार्यों ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया कि गृहस्थ को समाज में जीने के लिए आजीविका का उपार्जन अनिवार्य है। पर जिस व्यवसाय में महाहिंसा होती है, जिन्हें 15 कर्मादान नाम से जाना जाता है, वैसे व्यवसाय से आजीविका अर्जित करना निषिद्ध माना गया है। 15 महाहिंसात्मक व्यवसायों का निषेध वास्तव में आज के सन्दर्भ में देखा जाए तो बड़ा प्रासङ्गिक प्रतीत होता है। वर्तमान युग में किस प्रकार पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से निजात पाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है उसका विश्लेषण किया जा रहा है। वनकर्म अर्थात् जंगल कटवाने का व्यवसाय, अंगारकर्म में अग्नि प्रज्वलित करके किये जाने वाले सारे व्यवसायों का निषेध किया गया है।

आज बड़े-बड़े कारखानों में महाहिंसा के साथ-साथ निकलने वाले धुएँ से शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ रहा है एवं ओजोन परत में भी छेद बढ़ता जा रहा है। साथ ही फर्नीचर साज-सज्जा के लिए जंगलों की कटाई जिस कदर से हो रही है यह अनुमान लगाया जा रहा है कि भविष्य में वर्षा का स्रोत सूख जाने से तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए ही होगा। साथ ही दन्त, रस, विष, केश एवं यन्त्र पीलन आदि व्यवसायों में धनार्जन के लिए जिस क्रूरतापूर्ण बर्बर तरीके से पशुओं का कत्ल एवं पशुओं पर परीक्षण किया जा रहा है, वह निश्चित ही मानव जाति के लिए महाकलंक है। अनेक प्रजातियाँ प्राणियों की आज विलुप्त हो चुकी हैं एवं अनेक विलुप्ति के कगार पर हैं। भगवान महावीर ने ठीक ही कहा कि जो षड्जीवनिकाय के अस्तित्व को अस्वीकार करता है, वह अपने अस्तित्व को ही अस्वीकार करता है। परस्पर सभी जीव अपने अस्तित्व के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इस अन्तर्निर्भरता के सूत्र को विस्मृत करने के कारण ही आज स्वयं मानव अस्तित्व पर खतरा मण्डरा रहा है। इसीलिए आजकल Human Survival की बात पर गम्भीरता से विचार-विमर्श एवं मानव अस्तित्व की सुरक्षा हेतु पर्यावरण प्रदूषण पर सरकार द्वारा रोकथाम के विविध आयाम अपनाए जा रहे हैं, पर जब तक मानव का स्वनियन्त्रण काम नहीं करेगा, मात्र बाह्य नियन्त्रण से वाञ्छित परिणाम की आशा करना अशक्य है। इस प्रकार आज भोगोपभोग व्रत की प्रासङ्गिकता हस्तामलकवत् स्वतः सिद्ध है।

8. अनर्थदण्ड विरमण व्रत

मानव अपने जीवन में ऐसे अनेक कर्म करता है जिनके फलस्वरूप उसका अपना कोई हित साधन नहीं होता। इस निष्प्रयोजन, अनावश्यक कर्म का यहाँ निषेध किया गया है, आजीविका चलाने के लिए जो पापकारी प्रवृत्ति द्वारा हिंसा करनी पड़ती है

वह यहाँ अर्थदण्ड है। केवल प्रमाद, कुतूहल, अविवेक, अज्ञानता के वशीभूत होकर चलते हुए अनावश्यक पत्तियों को तोड़ना, अपने मनोरञ्जन के लिए मुर्गे, अश्व, बैल आदि को लड़वाना अनावश्यक या अनर्थदण्ड हिंसा है।

आचार्य हेमचन्द्र ने प्रमादजनित अनर्थ हिंसा का उल्लेख करते हुए कहा है कि अश्लील गीत, नृत्य-नाटक आदि (सिनेमा) देखना आसक्तिपूर्वक विषय कषायवर्धक साहित्य पढ़ना, जूआ खेलना, मद्यपान करना, निष्प्रयोजन झूले में झूलना (इससे वायुकाय हिंसा), प्राणियों को परस्पर लड़ाना, बिना कारण सोये पड़े रहना एवं निरर्थक वार्तालाप करना ये सभी प्रामादाचरण है। अनर्थ हिंसा एवं निष्प्रयोजन प्राणघात से बचने के लिए महावीर ने इस व्रत के माध्यम से अप्रमत्तता का सूत्र दिया।

आचार्य समन्तभद्र ने तो इतनी सूक्ष्मता से इस व्रत का रत्नकरण्ड श्रावकाचार में वर्णन किया है कि निरर्थक जमीन खोदना, अग्नि प्रज्वलित करना, पंखा चलाना, वनस्पति का छेदन-भेदन करना (फल एवं हरी पत्तीदार वनस्पति आदि जीवों की विवाह आदि में विविध आकृति बनाना), पानी का दुरूपयोग (स्नान, हाथ धोने में, बर्तन एवं वस्त्र प्रक्षालन में) करना, घी, तेल, दूध आदि के बर्तन खुले रख देना (जिसमें जीवों के गिर जाने से अनावश्यक प्राणघात के भागीदार बनते हों), लकड़ी, पानी आदि को बिना देख-भाल के काम में लेना-ये सभी प्रमाद से उत्पन्न हिंसा है। जो आज की आधुनिक जीवनशैली के अङ्ग बन चुके हैं। इस व्रत के माध्यम से महावीर ने सम्पूर्ण जीवनशैली को संयमित करने का प्रयास किया है। इससे न केवल स्वयं का निष्प्रयोजन पाप से बचाव होगा, अपितु जागृत मानवीय व्यवहार का विकास होगा एवं संयम चेतना के विकास से अभावग्रस्त को उचित सामग्री भी उपलब्ध हो सकती है। इसी व्रत के अन्तर्गत गृहस्थ से यह

अपेक्षा की जाती है कि वह अशुभ चिन्तन, पापकर्मोपदेश, हिंसक उपकरणों के दान एवं उपर्युक्त प्रमादाचरण से बचे।

श्रावक के उपर्युक्त पाँच अणुव्रतों एवं तीन गुणव्रतों का बहुत कुछ सम्बन्ध हमारे सामाजिक जीवन से है। मानव समाज में आज भी ये सभी चारित्रिक विकृतियाँ विद्यमान हैं और एक सभ्य समाज के निर्माण के लिए इनका परिमार्जन आवश्यक एवं अतिप्रासङ्गिक है।

गृहस्थ के शेष चार शिक्षाव्रतों में सामायिक, देशावकाशिक, पौषधोपवास का सम्बन्ध विशिष्ट रूप से वैयक्तिक जीवन से है। यद्यपि अतिथिसंविभाग व्रत की व्याख्या पुनः सामाजिक सन्दर्भ में की जा सकती है।

9. सामायिक व्रत

सामायिक समभाव की साधना है। गृहस्थ भी समता की आराधना से वञ्चित न रहे, इसलिए नवें व्रत का विधान है। एक मुहूर्त तक आत्मचिन्तन, स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि के द्वारा समता की आराधना करने से प्रवृत्ति एवं निवृत्ति में सन्तुलन स्थापित होता है, मानसिक तनाव को विराम मिलता है, चित्तवृत्ति का शोधन होने से वास्तविक शान्ति का अनुभव होता है। आज हमारी सामायिक की साधना में समभाव रूपी अन्तरात्मा मृतप्राय होती जा रही है और वह एक रूढ़-क्रिया मात्र बनकर रह गई है। सामायिककर्त्ता के जीवन व्यवहार में आवेश नियन्त्रण का अभाव एवं आसक्ति, अधीरता के कारण सामायिक की छवि भावी पीढ़ी पर प्रभावी नहीं हो रही है। यह भगवान महावीर द्वारा गृहस्थ के लिए निर्धारित धर्माधना की ऐसी प्रायोगिक पद्धति है जो अन्य धर्म-दर्शन में दुर्लभ है। इस व्रत को प्रभावी बनाने के लिए कोई उपयुक्त पद्धति विकसित की जाए, यह युगीन अपेक्षा है। इसी अपेक्षा को मद्देनजर रखकर आचार्य तुलसी ने अभिनव

सामायिक की पद्धति प्रदान की। अगर वह जीवन का अङ्ग बन जाए तो सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। इस व्रत के माध्यम से मानसिक सन्तुलन की साधना, मन-वचन और काया के सामञ्जस्य की साधना एवं विधायक भावों के विकास की साधना से न केवल पारिवारिक शान्ति कायम हो सकती है अपितु सामाजिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सामञ्जस्य स्थापित करने की योग्यता अर्जित हो सकती है अन्यथा छोटी-छोटी परिस्थितियों में अपने मानसिक एवं भावनात्मक सन्तुलन को खोकर मानव अपशब्द प्रयोग एवं मारपीट आदि घरेलू हिंसा से तत्पर हो जाता है। कभी-कभी आत्महत्या जैसा दुष्कर्म भी कर बैठता है और अकरणीय कार्य कर लेता है एवं फिर पश्चात्ताप करता है। सारे अपराध आवेश के अनियन्त्रण एवं इसी समभाव की साधना के अभाव में होते हैं। अतः सर्वांगीण शान्ति पूर्ण स्वस्थ समाज संरचना में इस व्रत की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।

10. देशावकाशिक व्रत

देश का अर्थ है-छोटा या अंश। इस व्रत में अल्पकालिक तथा छोटे-छोटे नियम के लिए अवकाश रहता है। जो लोग एक साथ दीर्घकालिक त्याग नहीं कर सकते, उनके लिए यह अभ्यास का सुन्दर एवं सरल उपक्रम है। आज के युग में किसी में यदि बुरी लत पड़ गई तो उसे इस प्रकार के व्रत के माध्यम से क्रमशः उसकी बुरी आदत से निजात दिलाया जा सकता है। धीरे-धीरे थोड़े-थोड़े समय के लिए किए गए त्याग भविष्य में व्यक्ति के चारित्रिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस व्रत से न केवल भोग्य पदार्थों की असारता समझकर अपना स्वास्थ्य सुधरेगा अपितु मानसिक शक्ति भी दृढ़ होगी एवं आत्मसंयम से आत्म बल बढ़ेगा।

11. पौषधोपवास व्रत

जो गृहस्थ अध्यात्म-साधना में आगे बढ़ना चाहते हैं वे इस व्रत के अन्तर्गत उपवासपूर्वक विषय-वासनाओं से उपरत होकर श्रावकजीवन में ही श्रमणवत् जीवन का आस्वादन हेतु एक दिन-रात अथवा रात्रिकालीन पौषध स्वीकार कर आत्मा की उपासना करते हैं। ग्रन्थों में अष्टमी-चतुर्दशी आदि तिथियों पर इस व्रत की आराधना पर जोर दिया था, पर आज के सन्दर्भ में हर क्षेत्र में सप्ताह में एक दिन सभी को अवकाश प्राप्त होता है उस दिन का सदुपयोग आत्मसाधना में कर व्यक्ति स्वदोष दर्शन की साधना से अपने चरित्र को शनैः शनैः परिष्कृत कर इहलोक एवं परलोक दोनों को सफल बनाने का प्रयास करता है।

12. अतिथि संविभाग व्रत

यह व्रत गृहस्थ के लिए सामाजिक दायित्व का सूचक है। संयमी साधक अकिञ्चन होते हैं, उनके पास धन वैभव नहीं होता, वे भोजन बनाने की क्रिया से मुक्त होते हैं एवं भ्रामरी भिक्षाचरी से अपना जीवन चलाते हैं। उनके संयम में भोजन, पानी, वस्त्र आदि अपनी वस्तुओं का संविभाग कर सहयोग देना इस व्रत का उद्देश्य है। इसीलिए महाभाष्यकार ने भी गृहस्थ आश्रम को शेष तीन आश्रमों से श्रेष्ठ बतलाया, क्योंकि तीनों ही आश्रम इसी पर टिके हुए हैं। संयमी को निर्दोष आहार देने से कर्मों की महानिर्जरा होती है एवं शुभपुण्य के अर्जन के साथ-साथ शुभायुष्य का बन्ध भी होता है।

गृहस्थ पर अपने परिजनों के उदर पोषण के दायित्व के साथ-साथ साधक एवं समाज के असहाय तथा अभाव ग्रस्त व्यक्तियों के भरण-पोषण का दायित्व भी है। हमारा जीवन पास्परिक सहयोग एवं सहभागिता के आधार पर ही चलता है। दूसरों के सुख-दुःख में सहभागी बनना और अभाव

ग्रस्त पीड़ितों एवं दीन-दुःखियों का तन-मन-धन से सहयोग करना भी गृहस्थ का अनिवार्य धर्म है। इस व्रत से गृहस्थ में समाज सेवा, दान चेतना एवं अर्जन के साथ विसर्जन की चेतना का जागरण होता है और साथ ही अनासक्ति का विकास होने से आत्मोत्थान होता है। समाज में सदाशयता, सामाजिक सम्बन्धों में मधुरता एवं साधर्मिक वात्सल्य का विकास होता है।

अन्त में जैनधर्म के श्रावकाचार की उपर्युक्त समीक्षा करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि जैन श्रावकों के लिए प्रतिपादित आचार के नियम हर

देश, हर व्यक्ति एवं हर समाज में वर्तमान युग में भी प्रासङ्गिक सिद्ध होते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि जैनाचार की सार्वभौमिक प्रासङ्गिकता महावीर के युग में भी थी, आज भी है एवं भविष्य में भी रहेगी। श्रावक के 12 व्रत की अनुपालना न केवल जैन नागरिक के लिए आवश्यक है, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति एवं राष्ट्र हित में है।

-एसोसिएट प्रोफेसर, जैनदर्शन तथा तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राज.)

दुःख कैसे मिटे?

डॉ. एन. के. खिंचा

मानव जीवन अनमोल है, अमूल्य है। वर्तमान के सदुपयोग से जीवन को उज्ज्वल बनाना हम सभी का लक्ष्य होना चाहिए। व्यर्थ चिन्तन को त्यागना चाहिए। इन्द्रियों के ज्ञान को पूरा ज्ञान कदापि नहीं मानना चाहिए। इन्द्रिय ज्ञान को सही मानना ही प्रमाद है। इन्द्रिय ज्ञान को ही सब कुछ मानने से राग उत्पन्न होता है। राग के कारण ही भोग प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे स्वार्थ भावना पल्लवित होती है। स्वार्थ भाव के बढ़ते ही असीम के बजाय सीमित होते चले जाते हैं, जिसके कारण देहाभिमान पुष्ट होता है। देहाभिमान के कारण वासनाओं के जाल में उलझते ही जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति पराधीनता, जड़ता एवं शोक में आबद्ध हो जाता है।

यह जीवन सुख-दुःख के भोग के लिए नहीं, वरन् सुख-दुःख के सदुपयोग के लिए मिला है। सुख के सदुपयोग से जीवन में उदारता आती है। दुःख का भी सदुपयोग किया जा सकता है। दुःख के सदुपयोग करने से सजगता एवं सावधानी बढ़ती है। वस्तुतः दुःख जीवन के लिए वरदान है। दुःख जीवन के विकास का मूल है। जीवन में आये हुए दुःख का दृढ़तापूर्वक मुकाबला करना चाहिए। आये हुए दुःख

से घबराना कायरता की निशानी है। दुःख से दुःखी होने से दुःख मिटता नहीं है। केवल प्रलाप करने से व्यक्ति को सही रास्ता नहीं मिलता है। दुःख जीवन के यथार्थ से परिचय (ज्ञान) कराता है। आये हुए दुःख के प्रभाव से सबक लें। दुःख क्यों आया है? कारण की खोज कर लेना ही दुःख से जाग जाना है। आये हुए दुःख से जीवन बदल सकता है। दुःख के समय कर्तव्य से विमुख न बनें, धीरज न खोयें। स्थिर चित्त से योग्य कर्म करें। मन में प्रसन्नता का भाव रखें। मन को विचलित न होने दें। बल्कि प्राप्त परिस्थितियों का सदुपयोग करें। परिस्थितियों के गुलाम न बनें। प्रतिकूलता में भी अनुकूलता को खोजें। अपनी सामर्थ्य, क्षमता का पूर्ण सदुपयोग करें। शुद्ध संकल्पों को दृढ़ करें, शान्त रहें। मन को ऊँचा रखें, मनोबल को गिरने न दें। अभयशील बनें और डरे नहीं। भरपूर पुरुषार्थ करें। वर्तमान को सुधारें। वर्तमान के सुधर जाने पर बिगड़ा भूतकाल और आने वाला भविष्य भी सुधर जाता है। अतः दुःख विकास के लिए वरदान है। आये हुए दुःख से प्रेरणा लेकर, सजग होकर, विवेक जगाकर, पूरी सामर्थ्य एवं शक्ति से कर्म योगी बनें। जो भी करें समग्रता के साथ करें।

-544, सिद्धार्थ नगर 'एम ब्लॉक, जवाहर सर्किल, जयपुर-302017 (राजस्थान)

आचार्यश्री हीरा का विराट् व्यक्तित्व

श्री त्रिलोकचन्द जैन

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में अनेक आचार्यों का योगदान रहा है। इतिहास अनेक पूर्वाचार्यों के जीवनवृत्त का गवाह है, जिन्होंने तप-त्यागपूर्ण साधना की सरिता प्रवाहित की। पापों में रची-पची इस दुनिया को निष्पाप जीवन जीने की कला सिखाने वाले और मुक्ति पथ पर आगे बढ़ाने वाले आचार्य होते हैं। पंच परमेष्ठी महामन्त्र में आचार्य का स्थान मध्य में है। आचार्य वर्तमान में अरिहन्त भगवान के प्रतिनिधि एवं सन्त-सतियों के सन्मार्गदर्शक होते हैं। ये संघ-सञ्चालन में अनुशासन हेतु वज्र जैसे कठोर भी बन जाते हैं तो आत्मीयता और प्रेम महकाने में पुष्प से कोमल भी हो जाते हैं। नेतृत्व करते हुए भी एकत्व की साधना करने का गुण मात्र इनमें ही पाया जाता है।

आगम वचन है-पोक्खरपत्तं व निरुवलेवे, आगासं चेव निरालंबे। (प्रश्नव्याकरणसूत्र 2.5) अर्थात् साधना के शिखर पर आरूढ़ सन्त कमल पत्र की तरह निर्लिप्त और आकाश की तरह निरवलम्ब रहते हैं। आचार्य प्रपंचों से निर्लिप्त एवं अनासक्त रहते हैं तथा स्वावलम्बी जीवन जीते हैं। मुणिणो सया जागरंति। (आचारांगसूत्र 1.3.1) अर्थात् सदा जाग्रत रहना मुनि का कर्त्तव्य है। आचार्य पंचाचार का पालन करने और कराने में सदैव जाग्रत रहते हैं। प्रमाद इनकी जीवन चर्या से कोसों दूर रहता है। महप्पसाया इसिणो हवंति। (उत्तराध्ययनसूत्र 12.31) अर्थात् ऋषि मुनि प्रसन्न रहते हैं। आचार्य अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों के दास नहीं होते हैं। प्रतिकूल परिस्थिति का सामना धैर्य, गम्भीरता, समता आदि गुणों से करते हैं। भीतरी प्रसन्नता पर बाहरी वातावरण का प्रभाव ही नहीं पड़ने देते हैं। इस प्रकार शास्त्र की अनेक सूक्तियों से सुसज्जित आचार्यों का जीवन होता है। ऐसे ही मेरे परम उपकारी गुरुदेव हैं

आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा.। जिनका जीवन आगम की प्रतिकृति है। आप महाव्रतों के संरक्षण और साधना के संवर्धन में नित्य प्रयासरत हैं। जिनका चलना ईर्या समिति की उत्कृष्टता दर्शाता है। आपके यतनापूर्वक गमनागमन का लक्ष्य गमनागमन मिटाने एवं अचल पद की प्राप्ति के लिए है। आपके द्वारा सर्वजन हितकारी भाषा का वागरण भाषा समिति की उच्चता है। आपके बोलने का लक्ष्य अभाषक बनना है। आहार के समस्त दोषों को तिलांजलि देकर निर्दोष आहार से संयम का निर्वाह करने वाले आचार्य भगवन्त का लक्ष्य शाश्वत अनाहारक पद प्राप्त करना है। आपके संयम जीवन का प्रत्येक क्षण अप्रमत्तता की जीवन्त गवाही देता है। जब आगम पुरुष की कल्पना की जाती है तो आप जैसे गुरु-भगवन्त पर यह पूर्णरूपेण घटित होती है।

शास्त्र में अनेक स्थानों पर आचार्यों के गुणों को अलग-अलग रूप में बताया गया है। दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र आचारादि 8 सम्पदाओं के माध्यम से आचार्य के स्वरूप को प्रतिपादित करता है। स्थानांगसूत्र गणनायक की श्रद्धावान आदि छह योग्यताएँ बतलाता है। आवश्यकसूत्र, प्रवचन सारोद्धार, भगवती आराधना, आचारांगसूत्र की टीका आदि में आचार्य के 36 गुणों का उल्लेख भिन्न-भिन्न रूप से मिलता है। इसी कड़ी में व्यवहारसूत्र का तीसरा उद्देशक आचार्य आदि श्रेष्ठ महापुरुषों की अर्हताएँ प्रतिपादित करता है-पंचवास परियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले, संजमकुसले, पवयणकुसले, पण्णत्तिकुसले, संगहकुसले, उवग्गहकुसले, अक्खयायारे, अभिन्नायारे, असबलायारे, असंकिलिट्ठायारे, बहुस्सुए वब्भागमे जहण्णेण साकप्प ववहारे कप्पइ आयरिय उवज्झायत्ताए उट्ठिसित्तए। अर्थात् पाँच वर्ष की दीक्षा

पर्याय वाले निर्ग्रन्थ श्रमण जो आचार कुशल, संयम कुशल, प्रवचन कुशल, प्रज्ञप्ति कुशल, संग्रह कुशल, उपग्रह कुशल, अक्षताचार, अभिन्नाचार, अशबलाचार, असंक्लिष्टाचार, बहुश्रुतज्ञ, बहुआगमज्ञ तथा कल्पादि छेदसूत्र के ज्ञाता हैं, उसे ही आचार्य-उपाध्याय नियुक्त किया जाता है। आचार्य हीरा उक्त सभी अर्हताओं के पारंगत श्रमण रत्न हैं। उनके जीवन में इन योग्यताओं की झलक स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

(1) आचार कुशल—जो ज्ञानाचार और विनयाचार में कुशल होता है, उसे आचार कुशल कहा जाता है। आचार्य भगवन्त ज्ञान की आराधना में निरन्तर स्वाध्याय का अवलम्बन लिए रहते हैं। मेड़ता में 2018 के चातुर्मास के दौरान दोपहर में वाचनी चल रही थी। प्रश्न उपस्थित हुआ कि परमावधि ज्ञान तो अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान में परिवर्तित हो जाता है और अप्रतिपाती होता है ऐसा वर्णन ग्रन्थों में प्राप्त होता है, लेकिन विपुलमति मनःपर्यवज्ञान के विषय में स्पष्टतः नहीं मिलता कि यह अप्रतिपाती होता है अथवा प्रतिपाती। जब सन्त रत्न किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे तो आचार्य भगवन्त ने निर्णायक समाधान देते हुए कहा कि—‘विपुलमति मनःपर्यवज्ञान अप्रतिपाती है, लेकिन इसके लिए परमावधिज्ञान के समान अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान प्राप्त होने का नियम नहीं है।’ टीका ग्रन्थ एवं दिगम्बर साहित्य में ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है। आचार्य भगवन्त के गहन अध्ययन एवं ज्ञान की पराकाष्ठा उस समय प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थी।

जयपुर के महावीर नगर में सन् 2012 के चातुर्मास में जब आचार्य श्री के दीक्षा अर्द्धशती का प्रसंग उपस्थित हुआ तब सभी सन्तों एवं सतियों ने गुरुदेव के गुणों का वर्णन किया और उनके संयम जीवन की मंगलकामना की। अति आग्रह पर आचार्य भगवन्त प्रवचन देने पधारे और अपनी लघुता, विनम्रता प्रकट करते हुए फरमाया—‘अभी आपने महेन्द्रमुनिजी, प्रमोदमुनिजी के मुख से मेरे गुणगान सुने, परन्तु ये इनकी महानता है, क्योंकि ये मेरे शिष्य नहीं हैं बल्कि ये तो मेरे काका गुरु हैं। मैं तो

आचार्य हस्ती के प्रथम शिष्य छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. का नेश्रायवर्ती शिष्य हूँ जबकि ये तो आचार्य श्री हस्ती के ही शिष्य हैं। इस अपेक्षा से ये मेरे काका गुरु हैं।’ पूर्व में रत्नसंघ में ऐसी ही परम्परा थी कि दीक्षित सन्त को किसी एक वरिष्ठ सन्त की नेश्राय में शिष्यत्व दे दिया जाता था, परन्तु समय के साथ इसमें परिवर्तन हुआ और सभी आचार्य श्री के नेश्रायवर्ती रहने लगे। आचार्य भगवन्त ने अपने सन्तों की महानता बताकर अपनी लघुता प्रदर्शित की, यह आपके जीवन में विनय का अमिट स्थान बताता है।

इस प्रकार आचार्य भगवन्त ज्ञान के गहन अध्येता एवं प्रत्येक क्रिया में लघुता प्रदर्शित करके ज्ञानाचार-विनयाचार के पालन से श्रेष्ठ आचार कुशल संयमी साधक हैं।

(2) संयम कुशल—जीवों की यतना करने वाला, अशुभ प्रवृत्ति को त्यागने वाला, इन्द्रिय एवं कषायों का निग्रह करने वाला, निर्जीव पदार्थों का विवेकपूर्वक उपयोग करने वाला, परिणामों की शुद्धता रखने वाला संयम कुशल साधक है। आचार्य भगवन्त संयम की पालना में सदा सावचेत रहने वाले साधक हैं। संयम में दोष को वे समय, काल, परिस्थिति के प्रभाव से भी कतई स्वीकार नहीं करते हैं। उन्हें निर्दोष संयम आराधना का प्रतिपल खटका लगा रहता है। संयम की सजगता और निर्मलता के अनेक उदाहरण आपके जीवन से प्राप्त होते रहते हैं। 19 जून, 2022 को श्रमण संघीय उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी ने जब आशीर्वचन हेतु निवेदन किया तो गुरुदेव ने फरमाया—‘आचार-विचार की निर्मलता ही साधक के साथ जाती है, बाकी सब यहीं रह जाता है, निर्मलता के साथ आगे बढ़ते रहें।’ आचार्य भगवन्त के वचनों में संयम के प्रति अहोभाव एवं संयम पालन की निर्मलता के प्रति लापरवाही न बरतने का सन्देश छिपा था। प्रतिपल संयम में रमण करने वाले आचार्य भगवन्त श्रेष्ठ संयम कुशल साधक रत्न हैं।

(3) प्रवचन कुशल—सम्यक् प्रकार से श्रुत को धारण करके अपना हित करने वाला एवं अन्यों को

हितावह उपदेश करने वाला प्रवचन कुशल कहलाता है। भगवन्त के प्रवचनों में प्रत्येक श्रेणि के व्यक्तियों के संस्कारों में सकारात्मक सुधार हेतु प्रेरणा होती है। प्रवचन प्रभाकर के विशेषण से सम्पृक्त गुरुदेव के प्रवचनों से संघ-समाज के कल्याण की भावना और उपज रही विकृतियों को लेकर टीस महसूस होती है। वे इन विषयों पर प्रायः प्रवचनों में सचोट वागवर्णना भी करते हैं। आचार्य भगवन्त प्रवचन के माध्यम से जो भी प्रेरणा करते हैं, वह विशेष प्रभाव अंकित करती है। सन् 2000 के जलगाँव चातुर्मास में आपने फरमाया-‘यहाँ सामूहिक धर्म साधना के लिए बहूमण्डल विशेष सक्रिय है, पर भाइयों के लिए ऐसा कोई उपक्रम नहीं है। इसलिए भाऊ (भाई) मण्डल के अभाव में भाइयों की सामूहिक धर्मसाधना नहीं हो पा रही है।’ आपके प्रेरक वचनों का ऐसा प्रभाव हुआ कि प्रत्येक रविवार सैकड़ों की संख्या में सामायिक गणवेश में भाई लोग सामायिक करने लगे। प्रत्येक रविवार को भाइयों की सामायिक का यह उपक्रम आज तक अनवरत गतिमान है।

यह तो आपके प्रवचनों के प्रभाव का मात्र एक उदाहरण प्रस्तुत किया है ऐसे अनेक उदाहरण जिससे संघ-समाज में संस्कृति रक्षण हुआ। सवाई माधोपुर प्रवास के दौरान रात्रिभोजन त्याग की प्रभावी प्रेरणा ने सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र में एक अभिनव क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया। इस प्रकार प्रवचन की अदभुत शैली एवं गूढ़ विषय को भी सरल तरीके से हृदयंगम कराने वाले आचार्य भगवन्त प्रवचन कुशल श्रेष्ठ साधक हैं।

(4) प्रज्ञप्ति कुशल-लौकिक शास्त्रों का सम्यक् विनिश्चय करने वाले, कुदर्शन का त्याग कराने में समर्थ एवं स्वसिद्धान्तों को समझाने में निपुण प्रज्ञप्ति कुशल कहलाता है। आचार्य भगवन्त के मुख से निगरित वचनों की कुशलता इससे भी परिलक्षित होती है कि वे अपने प्रवचनों, शिक्षाओं में सटीक दृष्टान्तों, नीतिगत श्लोकों, दोहों एवं सैद्धान्तिक तथ्यों का प्रयोग अधिकाधिक करते हैं। आपके उपालम्भ देने का तरीका भी आशीर्वाद सा प्रतीत होता है।

सन् 2013 का चातुर्मास सवाई माधोपुर में अनेक कीर्तिमानों के साथ सम्पन्न हुआ। मैं दर्शनार्थ भगवन्त के चरणों में पहुँचा। पूर्व में ही गुरुदेव को मेरे बारे में जानकारी मिली कि मैंने अध्यापन सेवा देते हुए साक्षी रखने के नियम का पूर्णता से पालन नहीं किया। गुरुदेव ने मुझे उपालम्भ भी विशिष्ट प्रज्ञप्ति द्वारा दिया और फरमाया-‘तुम संघ के ज्ञानी, विद्वान, समर्पित श्रावक हो, मुझे मालूम है कि तुम्हें कुछ भी कहूँगा, तुम उसे सहज स्वीकार करके क्रियान्वित कर दोगे। अन्य सामान्य श्रावक साक्षी रखे बिना बातचीत करे तो यह उनकी लापरवाही है, लेकिन तुम्हारी सिद्धान्त सजगता जरूरी है।’ इतनी आत्मीयता एवं प्रेम से उपालम्भ दिया कि उपालम्भ भी आशीर्वाद लगने लगा और मैंने चरणों में निवेदन किया कि-भगवन्! इस प्रकार के आशीर्वचन जब भी उचित लगे, फरमाने की कृपा कराते रहें। सही में भगवन्त की कथन करने की प्रज्ञप्ति सामने वाले को लज्जित नहीं करके शिक्षित करती है। सन् 1996 में किशनगढ़ में अत्यन्त संवदेनशील विवादास्पद प्रकरण पर आपने फरमाया-‘हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि बाहर से किसी की इज्जत जाने न पाये और भीतर में दोष रहने न पाये।’ श्रेष्ठ प्रज्ञप्ति के बिना निन्दा के प्रसंग पर इस प्रकार के वचन नहीं निकल सकते।

आचार्यप्रवर इस प्रकार से प्रज्ञप्ति कुशल साधक हैं।

(5) संग्रह कुशल-द्रव्य से उपधि, शिष्य-शिष्या आदि का और भाव से श्रुत एवं अर्थ तथा गुणों का संग्रह करने वाला, अनुशासन करने वाला, परस्पर सहयोग करने वाला साधक संग्रह कुशल कहलाता है। जब आचार्य भगवन्त को तृतीय पद का उत्तरदायित्व प्राप्त हुआ तब संघ में आपके नेश्राय में 13 सन्त और 29 महासतियाँजी थे। आपने संघ में शिष्य-शिष्याओं का संग्रह किया, फलस्वरूप आज 23 सन्त एवं 105 महासतियाँजी आपके नेश्राय में साधना कर रहे हैं। विशिष्ट बात यह है कि संघ में लघु उम्र में दीक्षित होने वालों की संख्या अधिक है। आचार्य श्री दीक्षित करने

तक का ही कार्य नहीं करते, अपितु जीवनपर्यन्त उनके शुद्ध साध्वाचार का पालन कैसे हो, इसका भी पूर्ण ध्यान रखते हैं।

अनुशासन करने में भी आप दृढ़ निश्चयी एवं कठोर हैं। आपने ज्ञानी-ध्यानी, प्रवचन कुशल सन्त को संघ से इसलिए पृथक् कर दिया कि वे साध्वाचार के शुद्ध पालन में स्वलना वाले थे। शुद्ध साध्वाचार के प्रश्न पर आप किसी भी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं हुए।

सिद्धान्तों से समझौता नहीं करने वाले आचार्यप्रवर प्रत्येक साधक को साधना में सहयोग भी हर प्रकार से देने का भाव रखते हैं। शिक्षण में सहयोग हेतु शिक्षकों को सेवा में भोजना, चिकित्सा सेवा हेतु चिकित्सकों के परामर्श की व्यवस्था संघ द्वारा आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से गतिमान है। आचार्य भगवन्त ने अनेक साधु-साध्वियों को जीवन के अन्त समय में समाधिमरण की आज्ञा प्रदान कर उनके संयम जीवन की सार्थकता में सहयोग प्रदान किया।

आचार्य भगवन्त मात्र सन्त-सतियों के ही आदर्श नहीं हैं, अपितु श्रावक-श्राविकाओं के भी आदर्श हैं। तत्कालीन आध्यात्मिक शिक्षा समिति के संयोजक श्री अशोकजी कवाड़ (वर्तमान में श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.) जब संघ की एक समस्या से विचलित मानसिक दशा में थे, तब आचार्य भगवन्त के प्रेरक स्वर सभी संघ-सेवी श्रावकों को गद्गद् करने वाले थे-‘तुम क्यों चिन्ता करते हो, अगर कोई संघ-सेवकों पर पत्थर उछालेगा तो संघनायक होने के नाते वह पत्थर मुझ पर भी बरसेगा। तुम निश्चिन्त रहो, जो भी होगा मैं सम्भाल लूँगा।’ आपकी संग्रह कुशलता का कोई पार नहीं है। सन् 2012 के जयपुर चातुर्मास में पूर्ण 5 माह तक मुझे श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. से अध्ययन हेतु आपने अपनी सेवा में रखा। आपकी दीर्घदृष्टि रही, जिससे मैं आज सन्त-सतियों की ज्ञानाराधना में कतिपय सहयोग कर पाता हूँ।

शिष्य-शिष्याओं का संग्रह, अनुशासन एवं सहयोग की त्रिवेणी को आत्मसात् कर आप श्रेष्ठ संग्रह कुशल साधक हैं।

(6) उपग्रह कुशल-बाल, वृद्ध, रोगी, तपस्वी, असमर्थ भिक्षु की जो स्वयं सेवा करता है एवं दूसरों से करवाता है, वह उपग्रह कुशल है। रत्नसंघ में सेवा-वैयावृत्य का उत्कृष्ट आदर्श रहा है। स्वयं आचार्य भगवन्त ने गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती एवं छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की अग्लान भाव से सेवा की। आचार्य भगवन्त ने सेवा के संस्कार सभी सन्त-सतियों को प्रदान किये हैं। सेवा की प्रेरणा भी वही कर सकता है जो स्वयं सेवक हो। श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा. के लघु दीक्षाकाल में ही दुर्घटनावश रूग्णावस्था होने से संघ सदस्यों में अनेक प्रकार के विकल्प उत्पन्न होने लगे। सुमेरगंजमंडी में संघ पदाधिकारियों की पृच्छा पर आपने सेवा के आदर्श को दोहराया- ‘मेरे सन्त-सती सेवा करेंगे, अगर वे नहीं कर पायेंगे तो मैं स्वयं सेवा करूँगा, संयम मैंने दिया है तो सेवा भी मैं करूँगा।’ आज भी आचार्य भगवन्त संघ प्रभावना, ज्ञान-आराधना, तप-साधना की अपेक्षा सेवा को प्राथमिकता देते हैं।

सन् 2015 में विचरण विहार के समय गहनोली गाँव में विद्यालय में विराजते हुए आप श्री ने संकेत से मुझे बुलाया और मार्गदर्शन फरमाया कि-‘तू बिना पाप करे जीवन निर्वाह कर रहा है। इससे बढ़कर कोई जीवन चलाने का साधन नहीं है। सन्त-सती की शिक्षा में सहयोग के इस कार्य को अहोभाव से करते रहना। संघ सेवा के इस उत्कृष्ट कार्य को कभी मन में भी छोड़ने का विचार आये तो मेरे पास आ जाना।’

स्वयं संघ-सेवा में आठों याम लगे हुए आचार्य भगवन्त का सभी को संघ सेवा की प्रेरणा करना उनके उपग्रह कुशल साधक की पहचान है।

(7) अक्षताचार, अभिन्नाचार, अशबलाचार और असंक्लिष्टाचार सम्पन्न-परिपूर्ण आचार का पालन करने वाले अक्षताचार पालक, अतिचारों का सेवन न करते हुए पंचाचार को पालने वाले अभिन्नाचार पालक, विनय-व्यवहार एवं गोचरी में दोष नहीं लगाने वाले अशबलाचार पालक और संक्लिष्ट परिणाम रहित असंक्लिष्टाचार पालक

आचार्य भगवन्त आचार धर्म के सजग प्रहरी हैं। इन्हें आचरण का आचार्य, चारित्र का चक्रवर्ती और उत्कृष्ट क्रिया के कर्ता कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आपकी दोष सेवन से तो दुश्मनी प्रतीत होती है। जब कभी संयम में शिथिलता की बात आती है तो आप दृढ़ता से आचरण की कठोरता के हिमायती बनते हैं। इस पंचम आरे में भी आपकी आचार निष्ठा आपको भगवद्गुण प्रतिष्ठापित करती है।

आचार्य भगवन्त तो श्रावकों की सामायिक वेशभूषा की भी शुद्धता का विशेष ध्यान रखते हैं। वे श्रावकों को बनियान, मोजे, टोपा आदि साधनों से रहित पूर्ण सामायिक की वेशभूषा में सामायिक करने की प्रेरणा देते हैं।

हम जैसे युवा पीढ़ी के श्रावक जब भगवन्त से कहते हैं कि भगवन्त! आप इस उम्र में भी संयम का कितनी सजगता और निर्दोषता से पालन कर रहे हो, धन्य है आपको एवं आपके संयम जीवन को। गुरुदेव अपनी लघुता दर्शाते हुए कहते हैं- 'तुमने मेरे गुरुदेव को नहीं देखा, जो अप्रमत्तता की साकार प्रतिमूर्ति थे।'

दक्षिण प्रवास के दौरान ग्राम-ग्राम विचरण में विपरीत क्षेत्रीय प्रतिकूलता होने पर भी आप निर्दोष आहार-पानी का ही सहारा लेते, यदि नहीं मिलता तो तप-साधना में अपने आपको लगा देते। महानगरों में चातुर्मास करने से पूर्व ही परठने की जगह आदि संयमानुकूल स्थान की गवेषणा करवाते, जिससे संयम की शुद्धता बरकरार रहे।

आपकी आचार की निर्दोष पालन की उत्कृष्ट भावना आपको 'आचरण का आचार्य' सम्बोधन प्रदान करती है।

(8) बहुश्रुत-बहु-आगमज्ञता-अनेक सूत्रों एवं उनके गूढ़ अर्थों का ज्ञाता बहुश्रुत एवं बहु आगमज्ञ कहलाता है। आगमों में इसके अलग-अलग अर्थ प्रयुक्त हुए हैं-1. गम्भीरता, विचक्षणता एवं बुद्धिमत्ता आदि गुण वाले, 2. जिनमत चर्चा में कुशल, 3. अनेक सूत्रों के अध्येता, 4. छेदसूत्रों के विज्ञ, 5. आचार एवं प्रायश्चित्त विधानों में कुशल, 6. जघन्य, मध्यम एवं

उत्कृष्ट बहुश्रुत। कोई सा भी अर्थ ग्रहण करें वह आचार्य भगवन्त पर घटित हो जाता है अथवा यह कहूँ कि सभी अर्थों को हम उनमें साकार देख सकते हैं।

आचार्य भगवन्त की श्रुतज्ञता का परिचय आपके आगमिक, तलस्पर्शी प्रवचनों से सहज ही हो जाता है। आपके नाम के आगे 'पण्डितरत्न और आगमज्ञ' विशेषण मात्र विशेषण रूप नहीं हैं, बल्कि आपकी बहुश्रुतता को प्रकट करने वाले हैं। संस्कृत-प्राकृत भाषाज्ञान, ज्योतिषीय ज्ञान आदि आपकी बहुश्रुतपने के ही अंग हैं। जयपुर सन् 1993 में लालभवन के प्राङ्गण में दीपावली के प्रसङ्ग पर अनेक तथ्यों, आगम ग्रन्थों के सन्दर्भों से प्रवचन फरमाया, तो श्रावकरत्न श्री उमरावमलजी ढड्डा के मुख से निकला कि दीपावली के प्रसङ्ग पर इतना मार्मिक, तर्कसङ्गत व्याख्यान प्रथम बार ही सुना है। ऐसे अनेक प्रवचन जिनमें आचारांग के आचार का, सूत्रकृताङ्ग के स्वमत-परमत विवेचना का, ठाणांग-समवायाङ्ग की गणना का, भगवती की तात्त्विकता का, ज्ञाता के दृष्टान्तों का, उपासक के उपासकों की प्रेरणा का, अंतगड की साधना का, अनुत्तरोववाई के रस-विजय का, प्रश्नव्याकरण के संवर द्वारों का और विपाकसूत्र के कर्मसिद्धान्त का दिग्दर्शन होता है।

प्रसिद्ध साइंटिस्ट अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपने दिमाग का 13 प्रतिशत उपयोग किया था, जिसके कारण अनेक क्रान्तिकारी खोजें हुईं। मैं तो शत-प्रतिशत श्रद्धा का प्रयोग करूँ तब भी भगवन्त के गुणों को एक प्रतिशत भी कह पाऊँ, यह भी दुष्कर है। महापुरुष तो महापुरुष ही होते हैं। साठ वर्ष की आयु में भारत सरकार सेवानिवृत्त कर देती है, परन्तु 60 वर्ष की उम्र के बाद तो आचार्य भगवन्त सुदूर दक्षिण प्रान्तों का विचरण कर जन-जन में जागृति लाने गये। आज तो भगवन्त को उम्र के 60 वर्ष नहीं, संयम जीवन के साठ वर्ष जागृति के साथ पूर्ण हो रहे हैं। धन्य है आचार्य भगवन्त।

-37/67, मध्यम मार्ग, रजत पथ, मानसरोवर,
जयपुर-302020 (राजस्थान)

Shruta Jñāna and its Divisions

Dr. Priyadarshana Jain

Introduction

The purpose of understanding Jain philosophy is to realize the truth and come on the path of liberation. Truth is multifaceted and has to be understood through pramāṇa and naya. Pramāṇa includes the study of knowledge called epistemology and logic which is valid reasoning. The jīva is an embodiment of infinite properties. Knowledge, (jñāna) and vision/perception (darshana) are the inherent characteristics of a jīva which are eternal, self-born/svayambhu, immanent as well as transcendental/atīndriya. It is said jīvo uvaoga lakṣaṇo. The jīva is characterized by upayoga and jñāna and darshana are the two upayogas. Knowledge is classified in five ways and darshana is said to be of four types. The bonded jīvas know and see through the medium of senses and mind where as the liberated jīvas know and see directly without the medium of senses and mind. The knowledge of the bonded jīvas operates through mati and Shruta jñāna whereas the liberated skills cognize directly through all knowing supreme knowledge called kevala-jñāna/ omniscience. Both mati and Shruta have to be right in order to accomplish the perfect state in liberation. How does one transcend the senses and mind and accomplish the all-knowing supreme knowledge? This is possible by knowing the engineering of the soul and the functioning of mati/ sruta jñāna. In this paper I shall concentrate on Sruta Jñāna and its 14 divisions revealed in Nandi Sūtra and its interpretation in Bandha Tattva by late Sri Kanyalalji Lodha, Jaipur. First let us see what is the nature of knowledge as such.

Nature of Knowledge

- ✦ Knowledge is said to sva-para prakashaka ie., it illumines the self and the non-self.
- ✦ Like darshana it is an essential characteristic of the jīva.
- ✦ Understanding this lakṣhaṇa one realizes the lakṣya of self-realization and enlightenment.
- ✦ It is ever present in the jīva and operates through paryāya.
- ✦ The jīva is an embodiment of jñāna and can never be devoid of it.
- ✦ Not understanding and taking delight in this jñāna svabhav a causes transmigration.
- ✦ Not experiencing this self-same nature causes the bondage of knowledge-obscuring-karma.
- ✦ There is no relation between more knowledge and liberation. But definitely delusion and right knowledge are inversely proportional. In other words as delusion increases, right knowledge decreases and as right knowledge increases, delusion decreases.
- ✦ In meditation the jīva focuses on one's self same jñāna svabhāv a and overcomes all perversion and delusion.
- ✦ Mati jñāna is knowledge acquired with the help of the senses and the mind and Shruta jñāna is the decisive knowledge that follows mati jñāna.
- ✦ In the case of mithyā drishtis both these are wrong and for the samyak drishti/self-realized jīvas the same jñāna is right.
- ✦ When jñāna and darshana become right the jīva is said to have come on the path of

liberation.

- ✦ Manifestation of all knowing supreme knowledge is enlightenment and this state is preceded by the complete destruction of delusion-producing karma.
- ✦ It is for perfection of this that renunciation/charitra and austerities/tapas are observed.
- ✦ One cannot get enlightenment without the senses and the mind and one cannot get the same if one is struck up with the senses and the mind.
- ✦ When the jīva exerts in the right direction and absorbs in the source of jñāna and it rises from the bahiratmā state to the paramātmā state.
- ✦ An iota of jñāna and darshana is present in all jīvas.

Nature of Shruta Jñāna

- ✦ Shruta jñāna is decisive knowledge that is preceded by sensory knowledge, the knowledge acquired with the help of the medium of the senses when the sense-object contact takes place.
- ✦ For example, an ant coming near sugar/salt exercises the decisive knowledge as to whether to take the sugar or leave it. But due to the absence of the knowledge of the nature of the self, the knowledge is shruta ajñāna.
- ✦ Shruta jñāna is always preceded by mati jñāna and without the application of shruta jñāna, there cannot be kevala jñāna.
- ✦ Scriptural knowledge is also referred to as shruta jñāna because through scriptural study one exerts in bheda-vijñāna and gets

self realization and eventually omniscience.

- ✦ Shruta jñāna is svayam siddha jñāna. It is the natural self-proven nature of all jīvas.
- ✦ There is no tarka in svabhava (Svabhvoatarkah).
- ✦ It is beyond time and space and ever present at all times and at all places in all jīvas.
- ✦ It is unchanging, eternal and endless.
- ✦ It is unborn and sahaj/natural. When its manifestation happens that state is enlightenment.
- ✦ Differentiating between svabhav and vibhav jñāna is shruta jñāna.
- ✦ Not to understand this is mithyatva i.e., perversion.
- ✦ The Tattvartha Sūtra reveals that shruta jñāna is beyond the senses and the mind. (Shrutam anindriyasya, 2.21)
- ✦ Not to experience the impact of Shruta jñāna causes bondage of shruta-jñānavaraniya karma.
- ✦ We can say this is inherent divine god particle in all jīvas.
- ✦ Shruta Jñāna is said to be the friend of kevala jñāna as it is in shruta jñāna that kevala-jñāna svabhavi atmā is realized in paroksha way and in the omniscient state it becomes direct.
- ✦ The text of Nandi Sūtra and the Bandh Tattva book talk about Shruta jñāna. However, there are some differences in the narration and they are discussed below :-

Shruta Jñāna and its Divisions

Types of Shruta jñāna in Jain Epistemology	Nandi Sutra Commentary of Madhukar Muniji	Book of Bandha tattva by Sri Kanhaiyalalji Lodha
1. Akshar Shruta	Talks of 3 kinds of akshar i.e., letters - sanjñā akshar	That indestructible jñāna svabhava of the jiva is akshar

	letters, alphabets of different languages) vyanjana akshar (pronunciations, sounds) labdhya akshar (the inherent upayoga guṇa ie., knowing nature of the jīva).	ie., indestructible. It is avinashi, trikaali dhruva, sat. Akshar Shruta is the learning that helps one to understand the innate indestructible nature of the self and makes it fearless.
2. Anakshar Shruta	Refers to the sound of things, breathing, coughing, etc.	The jiva is a jñāna samudra/ ocean of knowledge. The jñāna paryaya/modes are the waves. The knowledge of all the impermanent things that keep coming and going in the jñāna svabhāva are all jñeya (mere objects, not worthy of knowing) and anitya but the eternal pure soul is indestructible (anakshar) and one should not go behind the former. Instead, one should focus on the permanent jñāna svabhāva in which the jñeya are reflected every moment.
3. Sañjñī Shruta	Refers to avagraha, iha, avaya, dharana of a sañjñī jīva (jīvas with mind are called sañjñī).	Refers to the contemplation on one's eternal nature through avagraha, iha, avāya, dhāraṇā, etc., to look inwards and explore one's own true self.
4. Asañjñī Shruta	Refers to the knowledge of the mithyā-drishti jīvas and the one-to-four sensed beings.	Refers to the eternal jñāna svabhāva present even in the smallest micro-organism, etc. but this jīva cannot know that it is the eternal pure soul. This inherent knowledge in all jīvas is called Asañjñī shruta.
5. Samyak Shruta	Refers to the names of the 12 aṅgas from which the aagamas	Refers to knowing one's true nature, right understanding of

	are derived. Arhats, gaṇadharas, etc. are the promulgators of Samyak Shruta.	reality, etc. through the study of scriptures.
6. Mithyā Shruta	Refers to anything other than the Jain Āgamās - Rāmāyaṇa, Mahābhārata, etc.	Refers to being dependent on other things for knowledge (senses, mind, etc.) without being able to enjoy the jñāna svabhāva and realizing that every jīva is a self-sovereign soul.
7, 8. Anadi Aparyavasit Shruta (Anadi - no beginning Aparyavasit - no end)	Dravya point of view: With reference to a particular Tīrthaṅkara, revelation has a beginning and end but since eternity no beginning and no end.	Immortality, self sovereignty is what all living beings seek or desire. This demand for eternal life has no beginning or end. This is Anadi Aparyavasit Shruta.
9, 10. Sadi Saparyavasit Shruta (Sadi - with beginning Saparyavasit - with end)	Kshetra point of view: Revelations in different kshetra are with a beginning and end but that of Mahavideha Kshetra are without beginning or end	When a jiva strives to remove the mithyātva, there is the dawn of first enlightenment (with beginning) and this is lost (with end). This continues until the eternal kshāyik jñāna (endless) is manifested. This is Sādi Saparyavasit a Shruta.
Anadi-Ananta (Beginning-less and End-less)	Kaal point of view: Utsarpini and Avsarpini kaal are with beginning and end but from a bigger perspective, there is no beginning or end for kaal as such.	
Sadi-Sānta (With beginning but endless)	Bhaava point of view: Knowledge of abhavi mithyā drishti jīva is anadi-anant kaal but for a bhavi jīva, the wealth of right knowledge/kshāyik jñāna will have a beginning	

11. Gamika Shruta	Gamik refers to repetition (of letters, words, etc.) Drishtivaad comes under Gamik Shruta. Ex: Samayam goyam! Ma pamayaye!	All jīvas seek happiness (repeatedly). Similarly, repeatedly knowing the nature of the self and absorbing in it without any break is Gamik Shruta. From the point of view of realizing the aim/lakshya/sādhya, reflecting on the pure soul repeatedly without any bheda is gamik Shruta. Such Gamik Shruta will eventually result in omniscience.
12. Agamika Shruta	Agamic refers to non-repetition. Other than Drishtivaad, all other agamas are Āgamic Shruta.	From the point of view of sadhana, one takes to the 12-fold contemplations in an inconsistent way and tries to absorb in the eternal self. In sādhanā, there is bheda till one reaches the abheda sādhyā.
13. Aṅga Pravishta Shruta	It refers to the 12 Aṅgas.	Reflecting on one's inner aṅgas /body through the inner eyes is Aṅga pravishta shruta. Contemplating and understanding that all parts of the body are impermanent and thus coming closer to the pure self will result in vītarāgatā and samatā bhaava.
14. Aṅga Bahya Shruta	It is of 2 types = āvashyak (6 āvashyaks) and āvashyak vyatirikta (upāṅgas, mūla sūtras, etc.)	Other than one's own body, by looking at the setting sun, etc. one gets vairagya i.e., detachment and enlightenment.

Conclusion

Thus we see that the terminology is same in both the texts but the interpretation that we find in the commentary of Nandi Sūtra needs to be revisited. It must have been in the original commentaries but due to passage of time it must have been lost.

Select Bibliography

Nandi Sūtra, Ed By Madhukar Muni
Uttarādhyayana Sutra, Ed By Madhukar Muni
Bandha Tattva, By Kanhaiyalalji Lodha
Jan Logic Works

-Asst. Prof and Head i/c Dept. of Jainology University
of Madras Chepauk, Chennai-600 005

प्लीज भैया!..... उसे बचा लो

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

दिसम्बर का सर्द महीना ...नित्य क्रम से सामायिक-स्वाध्याय को पूर्ण करके उठा ही था ...कि मोबाइल पर कॉल आया ... जय जिनेन्द्र भैया! मैं स्वाति बात कर रही हूँ ..अभी दिवाली की छुट्टियों में लगे शिविर में आपने लव-जिहाद पर कक्षा ली थी ... वहाँ कक्षा के बाद मैंने आपसे बहुत देर तक बात की थी ...आपका मोबाइल नम्बर भी लिया था ...क्या आपको याद है भैया ?

जयजिनेन्द्र! ...हाँ, हाँ स्वाति बहन...मुझे याद है ...पर आप इतनी घबराई हुई क्यों हैं ?

स्वाति-भैया! बात ही कुछ ऐसी है कि ...मेरी एक जैन सहेली है पूजा ...वह लव-जिहाद का शिकार होने ही वाली है ...प्लीज भैया! ...उसे बचा लो। चार-पाँच दिन पहले जब मुझे यह पता चला तो मैं बहुत ही अधिक घबरा गई ...और अन्दर ही अन्दर घुट रही थी ...कि क्या करूँ ...किस से बोलूँ...कैसे बोलूँ यह सब ...फिर अभी सुबह घर में सफाई करते समय ...अचानक पिछले महीने के अखबार में छपे एक समाचार पर नज़र गई ...जिसमें लिखा था कि मुम्बई की लड़की श्रद्धा वाकर को आफताब नाम के लड़के ने अपने झूठे प्रेमजाल में फँसाया और दिल्ली में उसकी अत्यन्त बेरहमी से हत्या करके भी बेखौफ़ घूमता रहा ...यह पढ़कर मेरी आत्मा काँप उठी ...और तब मुझे लगा कि अब मुझे अपनी सहेली पूजा को बचाने की पूरी कोशिश करनी है ...और इसलिए मैंने आपको फोन किया है भैया!

स्वाति यह आपने बहुत अच्छा किया ...और मुझे विश्वास है कि आपके इस क़दम से हम अवश्य ही आपकी सहेली पूजा और उसके परिवार को इस लव-जिहाद की भयंकर आग से बचा लेंगे ..पर इससे पहले

...पूजा बहन कैसे इस जाल में फँसी...इसकी जानकारी और आपकी उससे क्या-क्या बात हुई ...यह सब जरा विस्तार से बताओ।

जी भैया! पूजा का परिवार हमारे फ्लैट के पास ही रहता है ..एक ही सोसाइटी में, बचपन से हम साथ-साथ खेले हैं ...स्कूल भी एक ही रहा ...पूजा इतनी भोली और मासूम है भैया! ...कि स्कूल में भी सब उसको हिरणी ही बुलाते थे ...कॉलेज तक भी हम साथ ही पढ़े...अप्रैल में हमारी कॉलेज की पढ़ाई भी पूरी हो गई। अभी लगभग 15 दिन पहले उसने मॉडर्न इंस्टिट्यूट में फैशन डिजाइनिंग की कक्षा प्रारम्भ की है। पिछले सप्ताह शाम को आठ बजे ..मैं पूजा से बस ऐसे ही मिलने उसके फ्लैट पर गई ...मैंने घण्टी बजाई तो उसके छोटे भाई ने दरवाज़ा खोला और फिर से हॉल में सोफे पर बैठकर .. स्कूल की बिखरी हुई पुस्तकों के बीच में ...तल्लीनता से मोबाइल में वीडियो गेम खेलने लग गया। उसके पापा तो दुकान से लौटे ही नहीं थे ... उसकी मम्मी भी सोसाइटी की किटी पार्टी में गई हुई थी। जब मैं पूजा के कमरे में गई तो वह ..बालकनी में खड़ी ...मोबाइल पर हँसकर किसी से बातें कर रही थी ...काफी देर तक तो उसे मेरे आने का पता ही नहीं चला ...फिर बात पूरी होने पर मुड़कर मुझे देखा तो चौंक-सी गई... मैंने उससे पूछा कि पूजा.. क्या चल रहा है यह सब? वह थोड़ी-सी घबराई ...फिर बोली ...अरे स्वाति! मैं तुझे सब कुछ बताने ही वाली थी ...

क्या बताने वाली थी पूजा ?

अरे..मेरी फैशन डिजाइनिंग की कक्षा में एक लड़का पढ़ता है सलमान ...अभी मोबाइल पर वह एक शायरी सुना रहा था ...एकदम खुबसूरत शायरी। मेरे मोबाइल के व्हाट्सएप्प पर भी वह एक से बढ़कर एक

स्पेशल मैसेज भेजता है ...अरे तू मानेगी नहीं ...दिखने में तो सलमान...बिल्कुल फिल्म के हीरो सलमान खान जैसा ही दिखता है...और पता है जब मैं पहली बार इंस्टिट्यूट में फॉर्म भरने के लिए गई थी ...तो वहीं पर वह मुझे मिला था ..अपने दोस्त इरफ़ान के साथ...। मैं अकेली ही गई थी ...क्योंकि मेरे पापा तो ...दूकान जाना है बोलकर साथ चले ही नहीं थे ...वैसे भी उन्हें पैसे कमाने के अलावा और कुछ दिखता ही नहीं है ...और मम्मी को तो अपनी किटी पार्टियों से या टी.वी. के सीरियलों से फुरसत ही कहाँ है ? वहाँ पर एडमिशन के समय सलमान ने ही मेरी सहायता की ...मैं तो प्रवेश-फॉर्म के लिए अपनी फोटो ले जाना भी भूल गई थी ...फिर उसी ने अपने आई फोन मोबाइल से मेरी फोटो खींची ...और फिर प्रिंट करवाया ...पता है जब तक फोटो प्रिंट हो रहा था न...तब तक उसने मुझे पास वाले महँगे कैफेटेरिया में पिज़्ज़ा खिलाया और गरमा गरम कॉफ़ी भी पिलाई ..मैंने जब रुपये भी देने चाहे ..तो मुस्कुराते हुए बोलने लगा कि मैं फ्रेंडशिप में पैसे नहीं लेता ...फिर एक दमदार डायलोग और बोला ...कि आप जैसी इतनी खूबसूरत लड़की से पैसे लेना तो गुनाह है गुनाह..और मैं कभी गुनाह करता नहीं! और...

पूजा! तू पागल है ...तुझे पता भी है कि...

अरे स्वाति! तू पूरी बात तो सुन ...पता है उसने मुझे बोला कि वह इंस्टिट्यूट में आया तो था इंटीरियर कोर्स का फॉर्म भरने के लिए ...पर मुझसे मिलकर उसने अपना इरादा ही बदल दिया और मेरा वाला फैशन डिजाइनिंग का कोर्स ही ज्वाइन कर लिया। पता है जब हम लोग फॉर्म जमा करके निकले ...तो मैंने देखा कि मेरी स्कूटी का टायर पञ्चर था ... मैं तो बहुत घबरा गई कि घर इतना दूर तो मैं कैसे पहुँचूगी। पर सलमान ने क्या किया, पता है ...तुरन्त अपने दोस्त इरफ़ान को भेजकर मेरी स्कूटी का टायर ठीक करवाया ...तू मानेगी नहीं ये दोनों ही लड़के बहुत हेल्पिंग नेचर के हैं रे ...इरफ़ान को पञ्चर ठीक करवाकर स्कूटी लाने में पूरे दो घण्टे लगे ...तब भी सलमान ने मुझे बिल्कुल बोर नहीं होने दिया

...हमने बहुत सारी बातें की ...पहली बार ऐसा लगा कि इस दुनिया में कोई तो है जो मेरी फीलिंग्स को समझता है और यह देख उसने मुझे दो दिन पहले मित्रता दिवस पर पूरे सात हजार का हैंडबैग भी गिफ्ट किया ...वह भी पूरा महँगी वाली चॉकलेट से भर कर और साथ में यह फ्रांस का बना ओरिजिनल परफ्यूम भी, यह देख।

पूजा..तेरा दिमाग खराब है ...तू जो ये बोल रही है न कि सलमान तुझे फॉर्म भरवाने में मदद कर रहा था ...क्या पता ...तब तक सलमान के कहने से इरफ़ान ने ही तेरी स्कूटी के टायर की हवा निकाल दी हो ... जिससे कि सलमान को तेरे साथ 2 घण्टे टाइम बिताने का बहाना मिल जाए...पूजा यह सब साजिश है रे, इन आवारा लड़कों की ..अपन जैसी कच्ची उम्र की लड़कियों को शिकार बनाने की। मैंने शिविर में लव-ज़िहाद पर कक्षा को अटेण्ड किया है...उसमें मैंने अच्छे से समझा है कि ये लोग कैसे-कैसे तरीकों से षडयन्त्र करते हैं...तू ये बता कि तूने आण्टी को ये सब बताया क्या ?

स्वाति! तू क्या बहुत जासूस बन रही है ? कोई भी ऐसा जानबूझ कर टायर की हवा क्यूँ निकालेगा ...मैं नहीं मानती !और तू पागल है क्या ...मम्मी को ये सब थोड़ी न बता सकते हैं ...वह तो तू मेरी बेस्ट फ्रेंड है...इसलिए तुझे यह सब बता रही हूँ। ...अब तू जा ...मुझे मोबाइल पर कुछ जरूरी काम है।

पूजा... आण्टी ने इस महँगे हैंडबैग के लिए तुझसे नहीं पूछा क्या ?

पूछा था..पर मैंने कह दिया कि यह तो मुझे इंस्टिट्यूट के फैशन शो में प्राइज़ मिला है ...पता है यह बोलने का आइडिया भी मुझे सलमान ने ही दिया ...कितना स्मार्ट है वह।

पूजा तूने आण्टी से झूठ बोला ?

स्वाति! तू अभी भी छोटी सोच में ही जीती है क्या ? कभी फ्लैट से बाहर निकल कर देख कि दुनिया कितनी फ़ास्ट हो गई है...सलमान बोलता है कि फ्रेंडशिप को बचाने के लिए छोटा-मोटा झूठ बोलने से कोई पाप नहीं लगता है ...

अच्छा? ..तो अब एक जैन परिवार की धार्मिक संस्कारों में पत्नी लड़की को ...एक मांसाहार करने वाला लड़का समझाएगा कि...किसमें पाप लगता है और किसमें नहीं?

स्वाति... सलमान बहुत अच्छा लड़का है रे... पता है उसने मुझे बताया कि जब से मैंने उससे मित्रता की है तब से उसने नॉनवेज को हाथ भी नहीं लगाया...यहाँ तक कि उसने इतने दिनों से अण्डे का आमलेट भी नहीं खाया है ...सुन स्वाति ..मेरे फ्रेंडशिप करने से कोई इंसान यदि नॉनवेज तक छोड़ देता है तो कितनी बड़ी बात है न?

पूजा! सम्भल जा ...यह सब तरीके हैं तेरे जैसी सीधी लड़कियों को फँसाने के लिए ...ये लोग कुछ हेल्प करके मित्रता की शुरुआत करते हैं ...मीठी चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं ...हृद से ज्यादा तारीफ करके आकर्षित करने की भरपूर कोशिश करते हैं। आकर्षक गिफ्ट देना ...बाइक पर घुमाना ...मोबाइल का रिचार्ज कराना ...महँगे पिज्जा-पास्ता खिलाकर लड़कियों को झूठे प्रेम में फाँसना....फिर धोखा देनायह जाल है जाल ...ये सब छोड़ दे पूजा ..मत फँस प्लीज।

देख स्वाति ...वह सलमान भी तो एक इंसान ही है... उसकी नीयत भी मुझे तो बहुत साफ़ लगती है ...पता है उसने अभी तक तो मुझे छूने की कोशिश भी नहीं की है ...मैंने जब उसे तेरे बारे में बताया तो पता है क्या बोला? ...पूजा! आप इतनी अच्छी हैं तो कोई शक नहीं कि आपकी सहेली स्वाति भी इतनी ही अच्छी और खूबसूरत होगी? ...देख स्वाति ...वह हर लड़की का कितना सम्मान करता है ...उसको तो हर इंसान में अच्छाई ही नज़र आती है ...और एक तू है कि इतने अच्छे इंसान पर भी शक कर रही है ...मैं तो बोल रही हूँ कि तू मेरे साथ एक बार खुद सलमान को मिल के देख ...तुझे खुद विश्वास हो जायेगा कि जैसा तू सोच रही है वह वैसा लड़का नहीं है ...बल्कि बहुत ही दिलदार और सुलझे हुए विचारों वाला है।

खबरदार पूजा ..जो तूने उसे मेरे बारे में कुछ भी बताया तो ...और सुन उससे मिलने की बात तो बहुत दूर है कभी किसी लड़के को मेरा मोबाइल नम्बर तक भी मत देना ...फिर से कहती हूँ पूजा ...अभी भी समय है ...यह मित्रता नहीं धोखा है धोखा ...जैसे मासूम सी मछली ...आटे की गोली में छिपे काँटे को देख नहीं पाती और शिकारी के जाल में फँसकर तड़प-तड़प कर मरती है...वैसे ही

ओय स्वाति!...देख...ज्यादा ज्ञान बाँटने की जरूरत नहीं है ...इतना तो मैं भी समझती हूँ... कि कौन सही है और कौन गलत ...सलमान अच्छा लड़का है .. मुझे अच्छा लगता है ...दिल का साफ़ है ...बस इसलिए सिर्फ़ मित्रता ही तो कर रही हूँ ..कोई प्यार-व्यार थोड़ी न कर रही हूँ...तुझे भी उससे मित्रता करनी है तो कर ..नहीं करनी तो कोई बात नहीं ...पर सुन, तेरी बात सुनकर मैं उससे मित्रता नहीं तोड़ने वाली।

और भैया!..उसके आगे उसने जो बातें मुझे बोली है न ..वह मैं आपको कैसे बताऊँ ...यही मुझे समझ नहीं आ रहा है ...

स्वाति!...आप रोइये मत...यह समय रोने का नहीं है ..बल्कि खुद भी मजबूत रहकर पूजा को भी सम्भालना है... इसलिये आप पूरी बात खुलकर बताइये...।

भैया! ...उसके बाद पूजा ने मुझे यह भी बताया कि सलमान, इरफ़ान और उनकी कोई एक गर्लफ्रेंड विक्टोरिया ने 31 दिसम्बर की शाम को शहर से दूर ...बहुत ही आलीशान फॉर्म हाउस में न्यू ईयर की शानदार पार्टी का प्लान बनाया है..विक्टोरिया अरबपति बाप की इकलौती बेटी है और एकदम मॉडर्न विचारों वाली लड़की है... और भैया...पूजा ने उस पार्टी में जाने का पक्का मन भी बना लिया है ...और घर पर यह बोलकर जाएगी कि विक्टोरिया उसके इंस्टिट्यूट की फ्रेंड है और वह पार्टी दे रही है।

कल पूजा का फोन मेरे पास आया और बोलने

लगी कि स्वाति यदि तू मेरी बेस्ट फ्रेंड है तो तू भी मेरे साथ 31 दिसम्बर की शाम को पार्टी में चलना ...बड़ा मजा आयेगा ...सलमान ने पक्का वादा किया है कि रात 12 बजे से पहले अपनी नई कार से अपन दोनों को घर छोड़ देगा ... और हाँ सलमान यह भी बोल रहा था कि उसके खास दोस्त इरफ़ान को कोई अदिति नाम की लड़की ने प्यार में धोखा दिया है ...विक्टोरिया भी उसको इतना भाव नहीं देती ... इरफ़ान अन्दर से पूरा टूट चुका है ..हमेशा गुमसुम और उदास रहता है ...और तुम्हारी सहेली स्वाति उससे दोस्ती कर लेगी ...तो उस बेचारे के जीवन में भी फिर से खुशियाँ लौट आएँगी.... इसलिए तो बोल रही हूँ स्वाति तू भी ज़रूर चलना पार्टी में... और भैया...वह क्या-क्या बोल रही थी .. लेकिन मैंने उसे डाँटा और साफ़-साफ़ बोल दिया कि मुझे ऐसे लफ़ंगों से कोई सहानुभूति नहीं है ...मुझे चिकने-चुपड़े चंगुल में नहीं फँसना है और तू भी मत फँसना....मेरी इतनी कोशिशों के बाद भी पूजा समझ नहीं रही है भैया ...मैं क्या करूँयदि पूजा उस पार्टी में चली गई तो उसका जीवन ही बरबाद हो जायेगा भैया ...प्लीज भैया ...उसे बचा लो।

स्वाति!...आप घबराइये नहीं...मैं मानता हूँ कि परिस्थिति बहुत गम्भीर है ...लेकिन हम स्थिति को नियन्त्रण में भी ले सकते हैं और इसका समाधान भी सम्भव है। इतना जान लीजिये कि रस्सी से बँधी बाल्टी कुएँ के भीतर गई तो है ...लेकिन एक फुट रस्सी का छोर अभी भी हाथ में ही है ...हम न तो रस्सी को छूटने देंगे और न ही बाल्टी को डूबने देंगे। आप पूजा के घर पर जाकर ..उसके मम्मी-पापा को पूरी बात बताकर मुझसे बात करवाइये... उनसे बात करके मैं शाम को पहले उनसे मिलकर उनकी काउंसलिंग करता हूँ... फिर ही पूजा की समझाइश होगी।

दोपहर को पहले मैं सीधा मॉडर्न फैशन इंस्टिट्यूट के ऑफिस गया और वहाँ से लौटते हुए ...मैंने संघ के अध्यक्ष महोदयजी, युवती मण्डल की संयोजिका और

संस्कार केन्द्र के संयोजक से कुछ विशेष बातचीत की ...और सभी के साथ स्वाध्याय-भवन में विराजित महासती मण्डल की सेवा में पहुँच कर कुछ महत्त्वपूर्ण निवेदन किया।

शाम को पाँच बजे स्वाति ने पूजा के मम्मी-पापा से मुझे फोन पर बात करवाई ...उनके द्वारा पूजा की काउंसलिंग की सहमति मिलते ही मैं तुरन्त पूजा के घर के लिए रवाना हुआ। पूरे रास्ते गाड़ी चलाते हुए भी कानों में स्वाति की वह आवाज़ ही गूँजती रही, प्लीज भैया... उसे बचा लो! प्लीज भैया ...उसे बचा लो! ज्यादा दूर नहीं था उसका घर ..मैं आधे घण्टे में पहुँच गया ...अनेक मध्यमवर्गीय परिवारों से युक्त बड़ी-सी सोसाइटी में उनका फ्लैट था। घण्टी बजाई तो पूजा के पापा ने ही दरवाजा खोला ...पास ही पूजा की मम्मी सोफे पर बदनवास-सी बैठी थी...स्वाति उन्हें सहारा दिए हुए थी...पूजा अभी तक इंस्टिट्यूट से लौटी नहीं थी और उसकी मम्मी बता रही थी कि वह शाम का खाना बाहर खाकर ही आएगी ... पूजा के छोटे भाई को स्वाति ने नीचे क्लब हाउस में खेलने के लिए भेज दिया।

मैं सभी को जय जिनेन्द्र करके कुर्सी पर बैठा ही था ...कि पूजा के मम्मी-पापा ..दोनों की रुलाई फूट पड़ी ..लड़खड़ाते हुए खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए बोले कि ..कैसे भी करके पूजा को बचा लो। ऐसा महसूस हुआ कि स्वाति ने जब कुछ देर पहले ...उन दोनों को पूरा घटनाक्रम और विशेष रूप से सलमान का 31 दिसम्बर की शाम की पार्टी वाला प्लान बताया ...तो सदमा बहुत गहरा लगा। वैसे भी ऐसी बातें इतनी दर्दनाक होती हैं ...कि हर माता-पिता को जबरदस्त दुःख पहुँचता है। स्वाति ने पूजा की मम्मी को सम्भाला और मैंने उसके पापा को सहारा देकर सोफे पर बैठाया...स्वाति ने दोनों को पानी पिलाया।

कुछ पलों तक चुप्पी रही ...फिर मैंने ही बात शुरू की ...एक-एक करके अनेक परतें खुलती गई ...पूजा की मम्मी को कुछ भनक तो थी ..लेकिन डर के

कारण न तो अपने पति को (जिन्हें पैसे कमाने से ही फुर्सत नहीं है) और न ही लोक लिहाज से किसी और को बता पाई। खैर लगभग 2 घण्टे की बातचीत के अन्त में दोनों ने ही मेरे सुझावों पर सहमति जताई ...अपनी भूलों को स्वीकार किया ...और मुझ से कुछ पक्के वादे किये कि ...8 बजे घण्टी बजी ...पूजा ही थी ...मेरे संकेत पर पूजा के पापा कमरे में चले गए और मम्मी रसोई में चली गई। स्वाति पूजा को मुझसे मिलवा कर...बालकनी में चली गई।

पूजा ने मुझे जय जिनेन्द्र किया और हॉल में ही सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई ...पहले कुछ इधर-उधर की बातों से, इंस्टिट्यूट के कोर्स से सम्बन्धित और फिर उसके जीवन के लक्ष्य के बारे में चर्चा हुई ...उसी से पता चल गया कि सलमान ने बहुत चालाकी से उसका ब्रेन वाश किया है। मेरे कुछ प्रश्नों पर उसके जवाब सुनकर मैंने महसूस किया कि पूजा एक बहुत ही सरल स्वभाव की लड़की है ..एक ऐसी लड़की जो संसार की वास्तविक सच्चाइयों से बहुत दूर है ...जो हर किसी पर बहुत आसानी से विश्वास कर लेती है ..और उसके इसी विश्वास का फायदा उठाकर शातिर सलमान ने अपने दोस्त इरफ़ान के साथ मिलकर ...ऐसा नाटक रचा कि पूजा जैसी भोली लड़की उससे भ्रमित हो जाए... और कोई नादानी कर बैठे.... तो कोई आश्चर्य नहीं।

पूजा की सभी बातों को सुनकर...उसके आधार पर मैंने अपनी बातों को क्रम से रखना शुरू किया...और साथ ही सी.सी. टी.वी. कैमरा में कैद वह फोटो दिखाए जो मैंने आज दोपहर को इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर से मिलकर उनके ऑफिस से निकलवाए थे...पूजा ने देखा कि उन फोटो में साफ़ दिख रहा है कि फॉर्म भरवाने के दिन ..कैसे इरफ़ान ...कैंपस की पार्किंग में रखी पूजा की लाल रंग की स्कूटी के टायर की हवा निकाल रहा है ...इरफ़ान अकेला नहीं, बल्कि उसके साथ दो लड़के और भी थे ...और फिर मैंने वह फोटो भी दिखाई जिसमें इंस्टिट्यूट के कैण्टीन के पीछे वाली खाली जगह में

सलमान के साथ वे तीनों लड़के और विक्टोरिया भी बियर पीते हुए और सिगरेट का धुँआ उड़ाते नज़र आ रहे हैं। जैसे-जैसे पूजा सुनती गई और फोटो को देखती गई .. उसके आँखों से गंगा-जमुना बहती गई...मैंने भी उसे चुप नहीं कराया ..क्योंकि ऐसे आँसुओं का निकल जाना ही सही होता है ..पूजा को कुछ आँसू स्वयं की गलतियों पर...तो कुछ आँसू उन गलतियों के पश्चात्ताप के आ रहे थे।

पूजा से बात करते-करते ... मेरे हृदय में भी वेदना का समन्दर छलक रहा था...गनीमत रही कि वह समन्दर मेरी आँखों से नहीं बहा। भीतर में रोते हुए भी चेहरे पर मुस्कान बनाये रखते हुए ...किसी को प्रोत्साहित करना आसान नहीं होता ...लेकिन अनन्त गुरुकृपा से ही यह हो पाया। इस पूरी काउंसलिंग में भी सन्तुष्टि इस बात की रही कि ...पूजा ने बताया कि उसने सलमान या इरफ़ान को कोई भी शारीरिक स्पर्श का अधिकार ही नहीं दिया। अपनत्व एवं भावुकता से भरी इस काउंसलिंग के अन्त में ...पूजा ने मुस्कुराते हुए मेरी हितैषी भावनाओं को स्वीकार करके पूर्ण सम्मान दिया।

10 बज चुके हैं ...मैंने स्वाति को आवाज लगाई ...वह पूजा के मम्मी-पापा को हॉल में बुलाकर ले आई ...मेरे चेहरे पर झलकती आत्मविश्वास भरी मुस्कान और पूजा की नम आँखों के नीचे सूखे आँसू ...सारी कहानी आसानी से बता ही रहे थे ...।

सभी के सामने ही पूजा ने पास ही रखे बैग से फैशन इंस्टिट्यूट का आईडी कार्ड निकाला मोबाइल से सिम निकाला ...दोनों के टुकड़े-टुकड़े करके उस बैग के साथ ही डस्टबीन में डाल दिया। मम्मी-पापा ...आज से न तो मुझे इंस्टिट्यूट जाना है और न ही कोई फैशन डिजाइनिंग करनी है ...अब बस मुझे अपनी लाइफ़ डिजाइनिंग करनी है ...ये बोलते हुए दौड़कर मम्मी-पापा के पैरों में झुक गई ...मुझे माफ़ कर दो ...मैंने बहुत बड़ी गलती की है।

तब तक मम्मी ने उसे बाँहों में भर लिया...पापा

प्यार से उसके सिर को सहलाने लगे और मम्मी-पापा दोनों ही रोते हुए ...पूजा से खुद अपनी लापरवाहियों की माफ़ी माँग रहे हैं...ऐसा लग रहा है कि एक जैन परिवार दिसम्बर के महीने में संवत्सरी मना रहा है। आपसी क्षमा के निर्मल पानी से पुरानी भूलों की सफाई जो हो रही है।

स्वाति भी रो रही है ...और पूजा अब उन सभी को चुप करा रही है ...और स्वाति को गले लगाकर छोड़ ही नहीं रही हैफिर स्वाति से बोली ...तू ही मेरी सच्ची मित्र है...अब जीवन में ऐसा कोई गलत क़दम नहीं उठाऊँगी...आज से एक नया जीवन मिला है ..नई शुरुआत करूँगी...मेरा वादा है स्वाति! स्वाति भी अब रोते-रोते मुस्कुरा रही है।

भावुकता के इन क्षणों में ...कुछ ग़मगीन ...कुछ सन्तुष्टि....के माहौल में ...मैंने थोड़ा-सा गम्भीर होते हुए ...पूजा के मम्मी-पापा से कहा कि मैंने कोशिश तो की है ...लेकिन पूजा 31 दिसम्बर को जरूर जाएगी ...

क्या ? मम्मी-पापा और स्वाति सब हक्के-बक्के से रह गए। उनको कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। उन्होंने पूजा की ओर देखा तो वह मन्द-मन्द मुस्कुरा रही थी।

फिर मैंने भी मुस्कुराते हुए कहाअरे भई... पूजा 31 दिसम्बर को जरूर जाएगी ...पर किसी पार्टी में नहीं ...या कहीं और नहीं ...बल्कि शिविर में। संस्कार केन्द्र 31 दिसम्बर और 1 जनवरी को ...जो दो दिवसीय शिविर लगाने वाला है ...महासती मण्डल के पावन सान्निध्य में ...वहाँ पर इस शिविर में पूजा ही नहीं, स्वाति ही नहीं ...बल्कि समाज की सभी बहनों को लव-ज़िहाद से बचने की कला तथा सुरक्षित और मर्यादित ज़िन्दगी...अच्छा और सच्चा जीवन जीने की कला सिखाई जाएगी।

जरूर भैया! ...हम दोनों तो यह शिविर अटेंड करेंगी ही ...साथ ही समाज की सभी बहनों को भी इस शिविर में आने की भरपूर प्रेरणा करेंगी.....थैंक यू सो मच भैया! पूजा और स्वाति दोनों एक साथ... मुस्कुराते हुए ...आत्मविश्वास के साथ बोली। पूजा के मम्मी-

पापा भी ख़ूब आभार ज़ापित कर रहे हैं।

जय जिनेन्द्र कहते हुए मैंने सभी से विदा ली ...रात के लगभग 10.30 बज चुके हैं ..लेकिन लग रहा था कि पूजा के जीवन में अभी-अभी सूर्य उदय हुआ है ...उत्साह और उल्लास के उजाले के साथ। पर साथ ही अफ़सोस भी है कि पूजा जैसी ही अनेक मासूम लड़कियों को.... हम और हमारा समाज ...इस लव-ज़िहाद के नरक में गिरने से बचा नहीं सके। सीढ़ियाँ उतरते हुए मैं सोच रहा था कि..कब तक समाज की बहन-बेटियों के साथ यह अन्याय होता रहेगा..कब तक संसार के मानव रूपी भेड़िये इनकी इज्जत का तमाशा बनाते रहेंगे और कब तक समाज इन तमाशों के पीछे तमाचों को सहन करता रहेगा ?

पूजा बहन से और उनके मम्मी-पापा से ...क्या-क्या बात हुई उसमें से कुछ व्यवहारोचित अंश...ऐसी घटनाओं के मुख्य कारण और सम्भावित निवारण इत्यादि ...मैं समय के साथ लिखने के भाव रखता हूँ। यह इतना सब भी जो लिख पाया.. वह यह समझ लीजिये कि अत्यन्त व्यथित मन से ...दर्द के कागज पर आँसुओं की स्याही से लिखा है।

घर लौटते हुए भी यही चिन्तन चल रहा है कि...कल सुबह महासती मण्डल से क्या-क्या विचार-विमर्श करना है। उनके पावन सान्निध्य में संस्कार केन्द्र जो यह शिविर आयोजित कर रहा है ...उसमें अपने समाज की किशोर एवं युवा अवस्था की बहनों को... इस अति महत्त्वपूर्ण विषय पर सामूहिक सेमीनार करके ...कुछ व्यक्तिगत काउंसलिंग करके ... सही समझ प्रदान करके ...लव-ज़िहाद से बचाना ही है। क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि लव-ज़िहाद की यह आग पूरे विश्व में लगी हुई है ...हो सकता है कि इस भयंकर आग को बुझाना भले ही असम्भव दिखता है ...लेकिन अपने परिवार को...अपने समाज को फायरप्रूफ बनाना सम्भव है ! सम्भव है ! अवश्य सम्भव है।

- 'जिन्शासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

लेखन-कला के सूत्र

डॉ. दिलीप धींग

उच्च तकनीक के जमाने में लोगों का लिखना कम हो गया है। आदमी सब कुछ फटाफट कर लेना चाहता है। उसे गुणवत्ता और गहराई की फिक्र नहीं है। कुछ लोग लिख रहे हैं, लेकिन उनके लेखन में मौलिकता, चिन्तन, कथ्य, शिल्प और शैली का अभाव नज़र आता है। कुछ लोग अपने लेखन में अहिंसक और नैतिक मूल्यों की खुली अवहेलना कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में मूल्यपरक और मौलिक लेखन करने वाले रचनाकारों का सक्रिय होना जरूरी है। नई पीढ़ी में श्रेष्ठ और आदर्श लेखन करने वाले रचनाकारों को तैयार करना जरूरी है। अच्छी शैली में लिखी गई साधारण और छोटी-सी रचना भी पाठकों को प्रेरित एवं प्रभावित कर सकती है। इसके विपरीत, महत्त्वपूर्ण विषय पर ठीक प्रकार से नहीं लिखी गई लम्बी रचना भी वाञ्छनीय प्रभाव छोड़ने में सफल नहीं हो पाती है। वस्तुतः लेखन एक कला है और कला साधना और अभ्यास माँगती है। साधना और अभ्यास से कला में निखार आता है। एक श्रेष्ठ लेखक या लेखिका बनने के लिए कई बातों का ध्यान रखना होता है। कुछ मार्गदर्शी बिन्दु यहाँ दिये जा रहे हैं।

स्वाध्याय

अच्छा लेखक बनने के लिए अच्छे लेखकों और कवियों को पूरे मनोयोग से पढ़ना चाहिये। अच्छे साहित्यकारों के लेख, निबन्ध, शोध-निबन्ध, गीत, कविता, कथा, लघुकथा, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तान्त, साक्षात्कार आदि को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनकी लिखने की कला, उनके पीछे लगे परिश्रम तथा प्रभाव का आकलन करना चाहिये। इसके अलावा लेखक को जिस विषय पर लिखना हो, उस विषय की

समुचित जानकारी होनी चाहिये। विषय की जानकारी जितनी विशद होगी, लेखन उतना ही प्रभावी और प्रामाणिक बनेगा। जानकारी बढ़ाने के लिए सम्बन्धित विषय के प्रमुख साहित्य का अध्ययन करना चाहिये। उस विषय का व्याख्यापरक, अनुसन्धानपरक, सर्वेक्षणात्मक और अन्य साहित्य पढ़ना चाहिये। बेहतर, उपयोगी और प्रभावशाली लिखने के लिए अध्ययनशीलता और स्वाध्यायवृत्ति बहुत आवश्यक है।

अनुप्रेक्षा

लेखन भी स्वाध्याय है। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। अनुप्रेक्षा का आशय है-वैचारिक मन्थन, चिन्तन-मनन, अनुशीलन-परिशीलन। अच्छे लेखन के लिए जिस प्रकार श्रेष्ठ लेखकों को पढ़ना लाभकारी है, वैसे ही लेख या रचना की विषयवस्तु की अनुप्रेक्षा भी लाभकारी है। अनुप्रेक्षा से पठित सामग्री के विश्लेषण की क्षमता का विकास होता है, जो लेखन में सहायक बनती है। इसी प्रकार किसी भी विषय पर लिखने से पहले की जाने वाली अनुप्रेक्षा रचना को आकार देती है। अनुप्रेक्षा सिर्फ किसी रचना की ही नहीं; अपितु स्थिति, परिवेश और घटना की भी जानी चाहिये। इससे समझ गहरी और दृष्टि व्यापक बनती है। दृष्टि जितनी व्यापक, सम्यक् और उदार होगी, लेखन भी उतना ही व्यापक और स्थायी महत्त्व का होगा।

श्रवण

यहाँ-वहाँ आयोजित होने वाली साहित्यिक गोष्ठियों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों, व्याख्यानो और कार्यशालाओं में लेखकों-कवियों के विचारों और उनकी रचनाओं को सुनना चाहिये। ऐसे आयोजनों में विशेषज्ञों का अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन मिलता है। लेखकों

से मिलने और चर्चा करने का अवसर मिलता है। इस दौरान किसी लेखक से प्रत्यक्ष परिचय या मैत्री-सम्बन्ध भी बन सकता है। लेखकों, कवियों और विद्वानों से मैत्री व्यक्ति की लेखन-यात्रा और जीवन-यात्रा में पर्याप्त पाथेय प्रदान कर सकती है। ऐसे साहित्यिक आयोजनों में अवसर के अनुसार स्वयं को भी प्रस्तुति देनी चाहिये। इससे अपने लेखन का मूल्यांकन तथा आत्म-सुधार का अवसर मिलता है।

शब्द-सामर्थ्य और भाषा-ज्ञान

प्रभावी लेखन के लिए शब्दों का भण्डार तथा भाषा का अच्छा ज्ञान बहुत आवश्यक है। एक ही शब्द के विभिन्न पर्यायवाची शब्दों के अर्थ में भी सूक्ष्म अन्तर होता है। यदि आवश्यक हो तो उस अन्तर को समझने का प्रयास करना चाहिये। उपयुक्त शब्द का उपयुक्त स्थान पर प्रयोग करने से लेखन प्रभावशाली बनता है। अनावश्यक, कठिन और क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से लेखन के सहज प्रवाह को अवरुद्ध नहीं करना चाहिये। लेखन स्पष्ट, सरल, सुबोध, प्रवाहबद्ध, रोचक और विषयानुकूल होना चाहिये। आवश्यक होने पर लेखन में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

मौलिकता

लेखन में ईमानदारी, मौलिकता और प्रामाणिकता बहुत जरूरी है। इसी से किसी भी लेखक की पहचान, साख और विश्वसनीयता बनती है। किसी रचना की गुणवत्ता और स्तरीयता में अल्प-बहुत्व चल सकता है, लेकिन रचना की मौलिकता के साथ समझौता नहीं करना चाहिये। मौलिक लिखने के भाव और संकल्प के साथ बौद्धिक और मानसिक परिश्रम जुड़ा है। यह परिश्रम ही नवसृजन का हेतु बनता है।

आजकल कहीं-कहीं कट-पेस्ट या कॉपी-पेस्ट (नकल) की प्रवृत्तियाँ देखने में आती हैं, जो ठीक नहीं हैं। इससे अच्छे साहित्य और सच्चे साहित्यकार के साथ अन्याय होता है, साहित्य की प्रभावशीलता कम होती है और साहित्य-विकास की धाराएँ अवरुद्ध होती

हैं। अतः नकल की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना चाहिये और मौलिकता को महत्त्व देना चाहिये।

एक सच्चे लेखक को जहाँ जरूरी हो, वहाँ सन्दर्भ के साथ अपनी बात लिखनी चाहिये। कोई महत्त्व की बात, विशेष तथ्य, कथन, कविता या काव्य-पंक्तियाँ यदि कहीं से ली गई हों तो स्रोत, कवि या लेखक के नाम का उल्लेख करना चाहिये। इससे लेखन प्रामाणिक और विश्वसनीय होता है।

अनुवाद/सम्पादन

अंग्रेजी में कुछ लेखकों को पढ़ने पर प्रतीत हुआ कि यह तो पूर्व में हिन्दी में (अथवा अन्य भारतीय भाषा में) लिखित उपलब्ध सामग्री का अंग्रेजी में अनुवाद मात्र है। ऐसे अंग्रेजी लेखन में नवचिन्तन, नवशोध और नवसृजन का नितान्त अभाव होता है, लेकिन अंग्रेजी के नाम से चल पड़ता है। अनुवादक अपने आपको लेखक समझता है। पाठक प्रायः इस तथ्य से अनभिज्ञ रहता है। अंग्रेजी भाषा की जानकारी ज्ञान की प्रस्तुति का एक माध्यम मात्र है। अंग्रेजी में लिखने-बोलने की क्षमता मात्र से किसी को अधिक बुद्धिमान या प्रतिभाशाली समझ लेना ठीक नहीं है। किसी भी भाषा के अनुवाद और प्रयोग के बारे में यह नियम लागू होता है। इसी प्रकार सम्पादन सृजन नहीं है। अनुवाद और सम्पादन भी साहित्य की विधाएँ हैं। इन विधाओं में भी विद्वत्ता और दक्षता आवश्यक है। इस प्रकार की दक्षता भी लेखन निखारती है। हाँ, कई बार श्रेष्ठ रचनाओं के बढ़िया अनुवाद या उत्तम सम्पादन में 'सृजन' तत्त्व भी समाविष्ट रहता है। वस्तुतः वह अनुवादक या सम्पादक की सृजनात्मकता के कारण ही श्रेष्ठ हो पाता है।

पुनर्लेखन

लेखन-क्षमता के विकास का विशेष सूत्र है-पुनर्लेखन। रचना-यात्रा की शुरुआत में पुनर्लेखन की जरूरत अधिक होती है। पुनर्लेखन तुरन्त नहीं करना चाहिये। कुछ अन्तराल के बाद, कुछ विश्रान्ति के बाद करना चाहिये। यह अन्तराल कुछ घण्टों से लेकर कई दिनों तक का हो सकता है। रचना लिखकर ध्यानपूर्वक

पढ़ने और उसे वापस लिखने से रचना स्वयं के द्वारा ही सम्पादित हो जाती है और उसमें निखार आता है। आवश्यकता महसूस होने पर पुनर्लेखन दोहराया जाना चाहिये। इससे रचना और अधिक परिष्कृत, समृद्ध तथा त्रुटिरहित बनेगी।

सतत अभ्यास

अच्छा लेखक बनने के लिए नियमित लिखने का अभ्यास करना चाहिये। साहित्य में लेखन की अनेक विधाएँ और शैलियाँ होती हैं। गद्य और पद्य दोनों में अलग-अलग विधा के अलग-अलग नियम होते हैं। लेखक जिस विधा में रचना करना चाहता है, उसे उस विधा को जानना और सीखना चाहिये।

साहित्यिक लेखन के अलावा सामान्य लेखन में भी अभ्यास आवश्यक है। लेखक को अपनी रुचि और क्षेत्र के अनुसार लिखने का अभ्यास करना चाहिये। लिखने का अभ्यास करने वाले अपने व्यावसायिक या पेशेवर ज्ञान या अनुभव के किसी प्रेरणादायी तथ्य या प्रसङ्ग को लेखन का विषय बना सकते हैं।

इसके अलावा कभी किसी कार्यक्रम का समाचार लिखने का अवसर आए तो लिखें। आपके लिखे समाचार के प्रकाशित होने पर आपको और आयोजकों को खुशी होगी। दैनिकी (डायरी) लिखकर भी लिखने का अभ्यास किया जा सकता है। कोई भले ही नियमित नहीं लिखे या मान्य लेखक नहीं बने, लेकिन आवश्यकता होने पर ठीक-ठीक, सही-सही लिख ले, ऐसी योग्यता भी बहुत काम आती है। अतः लिखने का अभ्यास रखना चाहिये।

पत्र-लेखन

लेखन-कला विकसित करने का एक अनुभूत उपाय है, दैनिक समाचार पत्रों के सम्पादकों के नाम प्रासङ्गिक और रोजमर्रा के विषयों पर उद्देश्यपूर्ण पत्र लिखना। 'सम्पादक के नाम पत्र' कॉलम में प्रायः शीघ्र स्थान मिल जाता है। लेकिन स्थान पाने के लिए अपने आदर्शों के विपरीत कभी नहीं लिखें। मसलन, यदि अखबार में हिंसा के पक्ष में कोई बात छपी हो तो उसका

तर्कसङ्गत ढँग से, गरिमामय भाषा में विरोध-पत्र लिखें; चाहे पत्र छपे या नहीं छपे। इसी प्रकार यदि अहिंसा, संयम, समता, मानवता, देशभक्ति या किसी उच्च आदर्श के सम्बन्ध में कोई प्रेरक सामग्री हो तो उसके समर्थन में पत्र लिखें। इससे लेखन क्षमता, प्रतिकार क्षमता और विश्लेषण क्षमता का विकास होता है। साथ ही लेखक युगीन और ताजा सन्दर्भों से जुड़ा रहता है। इसी प्रकार साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी 'सम्पादक के नाम पत्र' लिखने चाहिये।

यदि किसी लेखक की रचना पसन्द आए तो उस लेखक को भी पत्र लिखना चाहिये। इससे लेखक से रिश्ता बनता है। यह रिश्ता लेखन की प्रेरणा बन सकता है। लिखने की इच्छा रखने वालों को अवसर के अनुसार अपनों को भी पत्र लिखने की आदत डालनी चाहिये। खुशी, गम, सफलता, पर्व, त्योहार तथा विशेष प्रसङ्गों पर अपनों को पत्र लिखना चाहिये। बाजार में बिकने वाले किसी भी महँगे, रंगीन और आकर्षक छपे-छपाये कार्ड की बजाय हाथ से लिखे भावभरे पोस्ट-कार्ड का महत्त्व अधिक होता है।

प्रकाशन

कितने ही लोगों की शिकायत रहती है कि उनकी रचना प्रकाशित नहीं होती है। निष्ठाभाव से लिखने वाले को प्रकाशन की व्यग्रता और शीघ्रता से बचना चाहिये। उसे अपनी श्रेष्ठ रचना उपयुक्त पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजनी चाहिये। रचना भेजने के उपरान्त उसके प्रकाशन की फिक्र नहीं रखनी चाहिये। आशा रखनी चाहिये कि अच्छी और उद्देश्यपूर्ण रचना को स्थान मिलता है। सामान्य तौर पर रचना-प्रकाशन के सम्बन्ध में सम्पादक से किसी भी प्रकार का पत्राचार या पूछताछ करना ठीक नहीं है। सम्पादक के लिए इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना प्रायः कठिन होता है। ऐसी स्थिति में लिखने और लिखते रहने के लिए असीम धैर्य की जरूरत होती है।

यदि कभी कोई रचना प्रकाशित नहीं होती है तो

इसे प्रेरणा के रूप में लेना चाहिये और नई, बेहतर एवं उद्देश्यपरक रचना लिखनी चाहिये। जो सम्पादक किसी कारण से स्तरहीन, अमौलिक या असम्यक् रचना को अपनी पत्रिका में स्थान देते हैं, वे रचनाकार, पाठक और स्वयं की पत्रिका - तीनों के साथ न्याय नहीं करते हैं। किसी रचना का प्रकाशित होना या नहीं होना ही अन्तिम रूप से उस रचना या रचनाकार का मूल्यांकन नहीं है। सम्पादक के समक्ष किसी रचना को प्रकाशन के लिए चयन करने और नहीं करने के लिए अनेक कारण होते हैं। सम्पादक की कुछ मर्यादाएँ भी हो सकती हैं। कभी कोई रचना समय, स्थान, सन्दर्भ या किसी अन्य कारण से बाद में भी प्रकाशित हो सकती है। रचना के प्रकाशित होने पर प्रसन्न और अपने आपको प्रोत्साहित महसूस करना चाहिये।

आजकल अनेक नये-पुराने लेखक/कवि सोशल मीडिया पर भी सक्रिय हैं। यह एक खुला और स्वतन्त्र मञ्च है। इस मञ्च का उपयोग भी उद्देश्य,

गुणवत्ता और विवेक के साथ करने से ही परिश्रम सार्थक होगा और साख बढ़ेगी।

लेखन से व्यक्ति रचनात्मक और सकारात्मक बनता है। ये मार्गदर्शी बिन्दु लेखन-कला के विकास में सहायक बनेंगे। जरूरत है कलम के बल पर कुछ श्रेष्ठ करने के संकल्प की। कहा जाता है कि कलम और तलवार दो ताकतें हैं। एक ताकत सृजन की है, दूसरी विध्वंस की। कई बार तलवार भी विजयी बनी होगी, लेकिन स्थायी और सच्ची जीत हमेशा कलम की हुआ करती है। एनी बेसेंट ने कहा था कि एक शहीद के रक्त की तरह एक साहित्यकार के कलम की स्याही भी पवित्र होती है। ऐसी पवित्र, उदात्त और समर्पण की भावना के साथ किया हुआ लेखन असर करता है, कालजयी बनता है और युगों-युगों तक संसार को मार्गदर्शन देता रहता है।

-(शोध-प्रमुख : जैन विद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज) 7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

हम श्रावक बनेंगे

महासती श्री पद्मप्रभाजी म. सा.
दृढ़ धर्मी प्रिय धर्मी श्रावक बनेंगे।
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।टेर।।
नौ तत्त्वों का ज्ञान करेंगे,
षड् द्रव्यों पर श्रद्धा।
महाव्रतधारी बनें ऐसे भाव रखेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।1।।
सूत्र अर्थ के महान ज्ञाता,
तत्त्वों के व्याख्याता।
बहुश्रुत क्रियावान व्रती बनेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।2।।
धर्म ही माता-पिता,
धर्म ही सच्चा साथी।

धर्म के सिवा न कोई बात करेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।3।।
सन्त सतियों के लिए,
ही अहो भाव हमारा।
तहत्ति कहकर वचनों को स्वीकार करेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।4।।
सुपात्र दान के लिए सदा ही,
रहते दरवाजे खुले।
पधारो पधारो भंते! आदर करेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।5।।
सवाईमाधोपुर का ऐसा ही इतिहास रचेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।
दृढ़ धर्मी प्रिय धर्मी श्रावक बनेंगे,
तुंगियापुरी के हम श्रावक बनेंगे।।

-संकलनकर्ता : श्री धनसुरेश जैन, सवाईमाधोपुर



अपनी गलती स्वयं स्वीकार कर ली जाय, यही अनुशासन है।



जिस घर में बड़ों का आदर नहीं, छोटों के प्रति प्रेम-स्नेह नहीं तो घर प्रीतिरहित भूतों का डेरा बन जाएगा।

आचार्यश्री हीरा

यतना : धर्मावलम्बी बनने का सुगम उपाय

श्री मनोज कुमार जैन 'पाटोली'

वर्तमान युग की विलासिता की दौड़ में हम अपने मूल लक्ष्य से भटकते जा रहे हैं। हम अपने धर्म, संस्कृति एवं जीवनशैली के भान को खोते जा रहे हैं। हमारी दिनचर्या हमें हिंसा की ओर अग्रसर कर रही है, इसका हमें आभास तक नहीं हो रहा। हमारा काम करने का ढंग, पहनावा, रहन-सहन, खान-पान, आचरण, व्यवहार आदि न चाहते हुए भी सजगता या जानकारी के अभाव में हिंसाजनित होते जा रहे हैं।

यह सब धर्म क्रियाओं की जानकारी का अभाव, लापरवाही या प्रमाद के कारण ही घटित हो रहा है। ऐसी विकट स्थिति में यदि हम यतना के स्वरूप को भली-भाँति जानकर अपनी दिनचर्या को उसी के अनुरूप बना लें तो हमारा जीवन धर्ममय बन सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि हम यतना के स्वरूप एवं जीवन को धर्ममय बनाने में उसकी क्या भूमिका है, इसे जानें।

यतना का स्वरूप एवं आवश्यकता

यतना शब्द का शाब्दिक अर्थ है- सजगता, विवेक या सावधानी। अर्थात् प्रत्येक कार्य को पूर्ण सजगता या सावधानी के साथ करना यतना है। यतना को धर्म का मूल कहा गया है। यदि किसी भी कार्य में यतना नहीं है तो वहाँ धर्म का होना नामुमकिन है। यतना हमें पापकर्मों से विलग करती है। यदि हम कार्य करते समय यतना रखें तो छह काय के जीवों को अभय प्रदान कर सकते हैं। यतना हमारी आत्मा का विकास कर उसे कषायमुक्त बनाती है। यह हमें आस्रव से संवर की ओर ले जाती है। व्यवहार समकित के 67 बोलों में भी यतना को स्पष्ट करते हुए बताया है कि सम्यक्त्व रूपी अनमोल धन को मिथ्यात्व रूपी चोरों से सुरक्षित रखने के प्रयत्न को अथवा योग्य व्यवहार को यतना कहते हैं।

दशवैकालिकसूत्र के षड्जीवनिकाय नामक चतुर्थ अध्ययन की गाथा 7 में प्रश्न उपस्थित किया गया-

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए ।

कहं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई॥

अर्थात् अहिंसा व्रती को कैसे चलना, कैसे खड़े रहना, कैसे बैठना, कैसे सोना, कैसे बोलना और कैसे भोजन करना चाहिए ताकि पापकर्म का बन्ध न हो।

शिष्य की इस जिज्ञासा का शास्त्रकार स्वयं समाधान देते हुए कहते हैं-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए ।

जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई॥

(दशवैकालिकसूत्र, 4.8)

अर्थात् अहिंसाव्रती को उपयोगपूर्वक चलना, खड़े रहना, बैठना, सोना, बोलना और भोजन करना चाहिए, जिससे पापकर्म का बन्ध नहीं होता। अयतना से जिनशासन की हीलना एवं पापकर्मों का बन्ध होता है जिसके दुःखद परिणाम व्यक्ति को अनेक भवों तक भोगने पड़ते हैं।

यतनापूर्वक कार्य करने से हमारे अध्यवसाय शुभ होते हैं। यतनापूर्वक क्रिया करते हुए किसी जीव की हिंसा हो भी जाए तो भाव शुभ होने से अशुभ कर्मों का बन्ध नहीं होता है। यतना हमारे सम्यक्त्व को सुरक्षित रखने का अचूक उपाय है। हम कोई भी व्रत या प्रत्याख्यान अङ्गीकार कर लें, परन्तु उनका यतनापूर्वक पालन ही शुभफल देने वाला होता है।

यतना का अधिकारी कौन ?

यतना आगम में प्रयुक्त शब्द है। यतना वही कर सकता है जिसकी देव, गुरु, धर्म के प्रति असीम श्रद्धा है। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव को भी अभय देने के भाव रूपी

संस्कार हमें जन्मजात प्राप्त हुए हैं। हम अधिक भाग्यशाली हैं कि यतना को जीवन में अपनाकर सुगमता से धर्मावलम्बी बन सकते हैं।

यतना किनकी और कैसे करें ?

जैनधर्म में द्रव्य और भाव दोनों रूप से होने वाली हिंसा को हिंसा ही माना है। हम एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक सभी जीवों की अहिंसा पर बल देते हैं। हर स्थिति में इनके जीवन को अभय देते हुए ही हम यतना का पालन कर सकते हैं। कुछ पाप ऐसे होते हैं जिनको करने की हमें आवश्यकता नहीं होती फिर भी हम बिना प्रयोजन ही उनको करते हैं, यह अनर्थदण्ड कहलाता है। इससे हमें पूर्णरूपेण बचना चाहिए। परन्तु कुछ पापकारी क्रियाएँ ऐसी हैं जिनको गृहस्थ होने के नाते हमें करना आवश्यक हो जाता है, उनमें विवेक रखते हुए हम पाप से बच सकते हैं, वह अर्थदण्ड कहलाता है। अर्थदण्ड भी दो तरह का होता है—मञ्जूरी का और मज्जूरी का। इसमें भी मञ्जूरी का पाप अर्थात् विलासिताओं को बढ़ावा देना हमारी आवश्यकता नहीं है, उससे बचा जा सकता है। घर—परिवार का पालन—पोषण करना मज्जूरी का पाप है, जो हमें करना होता है, अतः इसे विवेक एवं अहिंसा का भाव रखते हुए करेंगे तो काफी हद तक हम पाप के सेवन से बच सकेंगे।

हम छहकाय के जीवों की निम्न प्रकार से यतना करते हुए विराधना से बच सकते हैं—

1. पृथ्वीकाय (मिट्टी के जीव—नमक, खदान के पत्थर, सोना, खनिज पदार्थ, मिट्टी आदि)—जमीन फोड़ने और खोदने का कार्य नहीं करना, सचित्त नमक का त्याग करना, खुदी हुई मिट्टी पर नहीं चलना आदि।

2. अप्काय (पानी के जीव वर्षा, ओस, बर्फ, समुद्र, नदी आदि का पानी)—स्नान, वस्त्र, सफाई आदि में कम से कम पानी का उपयोग करना। होली आदि नहीं खेलना, पानी का अपव्यय नहीं करना, नल खुला नहीं छोड़ना। समुद्र, नदी, झरने, तालाब,

शॉवर आदि में जाकर स्नान नहीं करना। अनछना पानी काम में नहीं लेना। ब्रश आदि नल खोलकर नहीं, ग्लास में पानी लेकर करें। बार—बार नहाने या मुँह धोने की आदत नहीं डालें। कूलर, ए.सी. में पानी के जीवों की विशेष विराधना होती है, अतः कम से कम उपयोग करें। जितना पीना हो उतना ही पानी लेना। पानी को अचित्त या धोवन करके पीना। (धोवन पानी हाथ में, आरोग्य आपके साथ में)

छोड़ो कच्चा पानी, पीओ धोवन पानी।

बनो आराधक प्राणी, यह कहे जिनवाणी॥

3. तेजस्काय (अग्नि के जीव—बिजली, गैस, लाइट, पंखा आदि)—इलेक्ट्रिक स्वीच को बार—बार ऑन—ऑफ नहीं करना। दीपावली पर पटाखे नहीं जलाना। होलिका दहन एवं रावण दहन नहीं करें, न ही उसे जलते हुए देखें। विद्युत् उपकरणों का उपयोग कम से कम करें। यथासम्भव सभी कार्य दिन की रोशनी में ही करने का लक्ष्य रखें।

4. वायुकाय (हवा के जीव)—बोलते समय यथासम्भव सदैव मुँहपती का प्रयोग करें। खुले मुँह बोलने की मर्यादा रखें। पंखे, कूलर, ए.सी. आदि का अनावश्यक उपयोग नहीं करें। तालियाँ न बजायें। नृत्य, डाण्डिया, डिस्को आदि न करें। कपड़ों को जोर से न झटकें।

5. वनस्पतिकाय (पेड़—पौधे, फल, फूल, पत्ते, जड़, तना आदि)—जमीकन्द का त्याग करना। अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी आदि विशेष पर्व तिथियों पर हरी सब्जी का त्याग करना। पेड़—पौधों को नहीं तोड़ना। हरी घास पर नहीं चलना। सचित्त फूलों का उपयोग नहीं करना।

6. त्रसकाय (बेड़न्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय तक)—घर में सजावट के तौर पर शंख—सीप आदि का प्रयोग नहीं करना। नीचे देख कर चलना ताकि चींटी, मकोड़े आदि की विराधना से बच सकें। (इच्छाकारण के पाठ में आए विराधना के दस प्रकारों से बचना) मच्छर,

मक्खी आदि जीवों को मारने के लिए स्प्रे, इलेक्ट्रिक रैकेट आदि का प्रयोग नहीं करना। पञ्चेन्द्रिय जीवों की हिंसा करके बनाई गई वस्तुओं का उपयोग कभी नहीं करना। जैसे- कॉस्मेटिक, नैलपॉलिश, पाउडर, क्रीम, लेदर बेल्ट, साबुन, पर्स, जूते, कोट आदि।

आगमों में वर्णित यतना के उदाहरण

चलो तो बाहुबली जैसे (अभिमान रहित होकर अपने दीक्षित छोटे भाइयों को वन्दन करने के लिए ज्यों ही क्रम आगे बढ़ाए कि सहसा केवलज्ञान हो गया।) खड़े रहो तो गजसुकुमाल जैसे (भगवान की आज्ञा लेकर श्मशान में जाकर भिक्षु प्रतिमा को अङ्गीकार किया, कठिन परिस्थितियों में भी पर्वत की तरह अडिग एवं स्थिर खड़े रहे। सोमिल ब्राह्मण द्वारा सिर पर पाल बाँधकर अंगारे रखने पर भी बिल्कुल विचलित नहीं हुए एवं समभाव से सहन कर मुक्त हो गए।) बैठो तो वज्रमुनि जैसे (पालने में बैठे-बैठे 11 अङ्गों का ज्ञान होना।), सोओ तो अरण्यक मुनि जैसे (माता के कहने पर गर्म शिला पर लेट गए।) खाओ तो धन्नामुनि जैसे (आहार को 21 बार धोकर खाते), बोलो तो एवंता कुमार जैसे (माता-पिता द्वारा बालक समझकर उन्हे दीक्षा की आज्ञा नहीं देने पर उन्होंने कहा कि मैं जिसको जानता हूँ उसको नहीं जानता और जिसको नहीं जानता हूँ उसको जानता हूँ। अर्थात् जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है, पर कब, कहाँ, किस प्रकार और कितने दिनों बाद होगी यह नहीं जानता। जीव किन कर्मों के कारण चार गतियों में पैदा होता है यह नहीं जानता, पर जीव अपने ही कर्मों के कारण अलग-अलग योनियों में उत्पन्न होता है यह जानता हूँ।)

इसी प्रकार हम भी (1) चलते समय-नीचे देखकर चलें। मोबाइल पर बात करते-करते गाड़ी नहीं चलाएँ। चींटी, मकोड़े, फूल-पत्ती बिखरें हों तो उन पर पैर रखकर नहीं चलें। चलते समय ज्यादा बातचीत नहीं करें। (2) खड़े रहते समय-जीव-जन्तु हों तो उन्हें बचाकर खड़े हों। बगीचे आदि में हरी घास एवं सचित

स्थान पर नहीं खड़े हों। (3) बैठते समय-जीव-जन्तु हों तो उन्हें बचाकर बैठें। बगीचे आदि में हरी घास एवं सचित स्थान पर नहीं बैठें। (4) सोते समय-नवकार मन्त्र आदि का स्मरण करके सोयें। तीन मनोरथ का चिन्तन कर सोयें। टेलीविजन, मोबाइल आदि देखते हुए नहीं सोयें। सभी जीवों से क्षमायाचना करते हुए सोयें। (5) खाते समय-वेज-नॉनवेज युक्त होटल में नहीं खायें। शाकाहारी खाद्य पदार्थों का उपयोग करें। जिनके बारे में भ्रम हो, ऐसे पदार्थों का सेवन नहीं करें। खाद्य पदार्थों की अच्छे से गवेषणा करे, घर पर बनी चीजों का ही अधिक इस्तेमाल करें। रात्रिभोजन का त्याग करें। जमीकन्द के सेवन से बचें। (6) बोलते समय-थोड़ा बोलें, आवश्यकतानुसार बोलें, अहंकाररहित वचन बोलें, मर्म खोलने वाले एवं आघातजनक वचन नहीं बोलें, सभी जीवों के लिए हितकारी वचन बोलें, न्याययुक्त वचन बोलें, अपशब्दों का प्रयोग नहीं करे, जिह्वा की शक्ति का सदुपयोग करें।

इनके अतिरिक्त भी हमारी दिनचर्या में कई ऐसे कार्य हैं, जिनमें हमारी थोड़ी सी असावधानी कितने ही जीवों की प्राणघातक बन जाती है। अतः पाप से बचने के लिए हम छोटी-छोटी निम्नलिखित बातों में अपना विवेक जागृत रखें-

- घर के दरवाजे खिड़कियाँ खोलने से पूर्व एक-दो बार उन्हें खटखटायें ताकि उनमें रहा हुआ जीव वहाँ से चला जाए और हम उसकी विराधना से बच जाएँ।
- अपने नाखून काटकर खुले में नहीं डालें, क्योंकि यदि किसी पक्षी ने चावल आदि का दाना समझकर मुँह में ले लिया तो उसके प्राण जा सकते हैं।
- खाने के पदार्थों को इधर-उधर नहीं डालें, जिससे उसमें चींटी आदि जीव चिपककर मरे नहीं।
- घर में हो या बाहर, जूठा नहीं डालें, क्योंकि जूठा डालना पाप है।
- रात्रि में जूठे बर्तनों को नहीं रखें, क्योंकि इससे

जीवोत्पत्ति अधिक होती है।

- मधुमक्खियों के छत्ते, मकड़ी के जाले, पक्षियों के घोंसले तोड़ें नहीं।
- गाय, कुत्ते आदि जानवरों पर पत्थर नहीं फेंके।
- पानी का टैंक कभी खुला नहीं छोड़ें वरना कई छोटे-बड़े प्राणी गिरकर अपने प्राण गँवा सकते हैं।
- दूध, घी, तेल आदि पदार्थ के बर्तन खुले नहीं छोड़ें।
- दाल, चावल, आटा आदि पदार्थ पकाने से पहले प्रकाश में लाकर देखें कि कहीं इनमें कोई जीव तो नहीं हैं।
- टी.वी. देखते हुए, बात करते हुए सब्जी न सुधारें वरना लट आदि जीव भी काटे जा सकते हैं।
- गैस को काम में लेने से पूर्व उसके बर्नर को अवश्य देखें कि वहाँ कोई जीव तो नहीं है।
- घर में बचा हुआ भोजन मूक प्राणियों के लिए उपयोगी बन सके, ऐसा विवेक रखें।
- घर में स्वच्छता रखें ताकि जीवों की उत्पत्ति न हो। अन्यथा कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से जीव हिंसा का भारी पाप लग सकता है।

यतना के लाभ—यतना से पाप कर्मों का बन्ध नहीं होता। सम्यक् चारित्र का पालन होता है। संयम में दृढ़ता आती है। यह देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा को निर्मल बनाती है। चारित्र को दूषित होने से बचाती है। पर्वत के समान पाप भी राई जितने रह जाते हैं।

भगवान महावीर स्वामी ने भी हमें सन्देश दिया है— 'जीओ और जीने दो।' जैसे हम सुख से जीना चाहते हैं, वैसे ही संसार के छोटे- बड़े सभी प्राणी सुख से जीना चाहते हैं। हमारी सजगता एवं सावधानी जीवों की यतना का कारण बन सकती है। कहा भी है—जीव बचेंगे जगत्

बचेगा, जगत् बचा तो जीवन बचेगा। अतः हमारा प्रयास रहे कि हमारी वजह से किसी को शारीरिक एवं मानसिक परेशानी नहीं हो।

24 घण्टे में एक बार हमें एकान्त में बैठकर आत्मचिन्तन करना चाहिए कि आज दिनभर में मेरे मन में कितनी बार बुरे भाव आए? मैंने वचन से कठोर शब्दों का प्रयोग कहाँ-कहाँ किया? मैंने काया के द्वारा कोई गलत आचरण तो नहीं किया? क्योंकि कर्मों का बन्धन मन-वचन-काया तीनों के द्वारा होता है। अतः हमें प्रतिपल सजग रहते हुए आत्मा का निरीक्षण करना चाहिए।

अंग्रेजी का WATCH शब्द भी हमें आत्मनिरीक्षण करने की प्रेरणा देता है—

W- words—अपने शब्द बोलने से पहले निरीक्षण करो।

A- Action—अपना कार्य करने से पहले निरीक्षण करो।

T- thought—अपने विचारों को सोचते समय निरीक्षण करो।

C- character—अपना चरित्र कैसा है? इसका निरीक्षण करो।

H- heart—अपने दिल की भावना कैसी है? इसका निरीक्षण करो।

इस प्रकार हम अपनी दैनिक क्रियाओं में यतना रखते हुए अपने जीवन को सुगमता से धर्मावलम्बी बनाने की ओर अग्रसर कर सकते हैं। हमारा लक्ष्य होना चाहिए—

मैं बन्नू आराधक इस भव में, मेदूँ भव-भव का फेरा।
हो सफल मनोरथ मेरा, हो सफल मनोरथ मेरा॥

-61/484, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020
(राजस्थान)

❑ व्यसनों से दुःख घटने के बजाय बढ़ते हैं।

❑ व्यसनों से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

❑ व्यसन की वस्तुएँ न भूख मिटा सकती हैं, न प्यास।

—आचार्यश्री हीरा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (23)

(मोहनीय कर्म-मिश्र मोहनीय)

श्री धर्मचन्द्र जैन

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय किसे कहते हैं ?

समाधान-जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि मिश्र मोहनीय दो का मिश्रित रूप है। मिथ्यात्व और सम्यक्त्व का मिश्रित रूप, मिश्र मोहनीय है। यह मिश्रित रूप जीव को नवतत्त्वों का सम्यक् श्रद्धान नहीं होने देता, देव-गुरु-धर्म पर दृढ़ श्रद्धान भी नहीं होने देता। जिसमें पूरी तरह न तो मिथ्यात्व का उदय रहे और न पूरी तरह सम्यक्त्व प्राप्त हो सके, उस अवस्था को मिश्र मोहनीय कहा जाता है।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय प्रकृति सत्ता में कब आती है ?

समाधान-जैसा कि कर्म साहित्य में स्पष्ट है कि मिश्र मोहनीय प्रकृति का किसी भी जीव के बन्ध नहीं होता है। यही कारण है कि अनादि मिथ्यादृष्टि जीव चाहे वह भवी हो अथवा अभवी हो, उसके मिश्र मोहनीय की सत्ता होती ही नहीं है।

जब कोई सन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीव सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए यथाप्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण तथा अनिवृत्तिकरण करता है, तब अनिवृत्तिकरण के अन्तर्गत मिथ्यात्व मोहनीय के दलिकों का अन्तरकरण करता है। प्रथम स्थिति के दलिकों को उदय में लाकर समाप्त कर देता है तथा द्वितीय स्थिति के मिथ्यात्व मोहनीय के दलिकों को विशुद्धि के आधार पर तीन भागों में विभक्त कर त्रिपुञ्ज करता है। त्रिपुञ्ज करते समय मिथ्यात्व मोहनीय के दलिक अनुभाग के आधार पर कुछ सम्यक्त्व मोहनीय के रूप में, कुछ मिश्र मोहनीय के रूप में हो जाते हैं तथा शेष दलिक मिथ्यात्व मोहनीय के रूप में सत्ता में रह जाते हैं।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय का उदय कब-कब हो

सकता है ?

समाधान- मिश्र मोहनीय का उदय निम्नांकित जीवों में हो सकता है-

(अ) क्षयोपशम समकित से नीचे गिरने वाले जीवों के।

(ब) प्रथमोपशम समकित से नीचे गिरने वाले जीवों के।

(स) क्षयोपशम समकित से नीचे गिरे हुए ऐसे जीव जो अभी मिथ्यात्व में रहे हुए हैं, उन जीवों के।

मिश्र मोहनीय का उदय चारों गति में सन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीव को ही होता है।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय के उदय की स्थिति कितनी होती है ?

समाधान- मिश्र मोहनीय का उदय यदि किसी जीव में रहे तो लगातार जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक रहता है। जघन्य से उत्कृष्ट का अन्तर्मुहूर्त बड़ा होता है। आचार्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने मुक्ति के सोपान ग्रन्थ में मिश्र मोहनीय के उदय की स्थिति पृथक्त्व श्वासोच्छ्वास प्रमाण अन्तर्मुहूर्त की बतलायी है। दूसरे शब्दों में दो से नौ श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल की स्थिति मिश्र मोहनीय की समझी जा सकती है।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय प्रकृति के उदय होने पर क्या-क्या विशेषताएँ जीव में रहती हैं ?

समाधान- जिन जीवों के मिश्र मोहनीय प्रकृति का उदय जब तक होता है, तब तक उन जीवों का- 1. जन्म नहीं होता है, 2. मरण नहीं होता है, 3. आयु का बन्ध नहीं होता है और 4. लब्धि का प्रयोग नहीं होता है।

मिश्र मोहनीय के उदय से जीव के परिणामों में

अनिर्णय की स्थिति रहती है। वह जिनप्रणीत धर्म के बारे में न तो एकान्त प्रीति रखता है और न ही एकान्त अप्रीति रखता है। इस बारे में कर्म-साहित्य में नारिकेल द्वीप के मनुष्यों का उदाहरण मिलता है। जिस प्रकार नारिकेल द्वीप के मनुष्य अन्न के प्रति न तो प्रीति रखते हैं और न ही अप्रीति। वे नारिकेल से ही अपनी भूख-प्यास शान्त करने वाले होते हैं। अनाज आदि से उनका कोई प्रयोजन नहीं रहता।

इसी प्रकार दही और गुड़ की मिश्रित अवस्था से भी मिश्र गुणस्थान को समझाया गया है। जैसे- दही में खट्टापन तथा गुड़ में मीठापन होता है। इन दोनों के मिश्रण में खट्टा-मीठा का मिश्रित स्वाद आता है, उसी प्रकार मिश्र मोहनीय के उदय से मिश्रित परिणाम जीव में रहते हैं।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय गुणस्थान की गति मार्गणा कौन-कौनसी है?

समाधान- मिश्र मोहनीय गुणस्थान वाला जीव जहाँ-जहाँ पर सीधा जा सकता है, वह उसकी गति मार्गणा कहलाती है। मिश्र मोहनीय से जीव या तो सीधा मिथ्यात्व में जाता है या फिर चतुर्थ गुणस्थान में जाता है। इसलिए पहला और चौथा, ये दो गुणस्थान ही गति मार्गणा में लेने चाहिए।

पूर्व में पाँचवाँ तथा सातवाँ गुणस्थान भी गति मार्गणा में लिया जाता था, किन्तु पंचसंग्रह भाग 8, गाथा 73, कर्मग्रन्थ भाग 2, गाथा 72 तथा जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष भाग 2 पृष्ठ संख्या 247 में उल्लेख है कि मिश्र गुणस्थान वाले जीव के मिश्र मोहनीय के उदय के कारण इतनी विशुद्धि नहीं आ पाती है कि वह सीधा देशविरति अथवा सर्वविरति गुणस्थान को प्राप्त कर सके। इस कारण से पहला और चौथा ये दो गुणस्थान ही गति मार्गणा में मानना उपयुक्त है।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय गुणस्थान की आगति मार्गणा कौन-कौनसी है?

समाधान- मिश्र गुणस्थान में जीव जिन-जिन

गुणस्थानों से सीधा आ सकता है, उसे आगति मार्गणा माना जाता है। मिश्र गुणस्थान में सन्नी पञ्चेन्द्रिय जीव सीधा पहले, चौथे, पाँचवें तथा छठे, इन चार गुणस्थानों से आ सकता है, इसलिए ये चारों गुणस्थान आगति मार्गणा में लिये जाते हैं। इतना विशेष जानना कि चौथे, पाँचवें एवं छठे गुणस्थान से क्षयोपशम समकित वाले जीव गिरकर आ सकते हैं। कोई-कोई प्रथमोपशम समकित वाले जीव भी आ सकते हैं।

पहले गुणस्थान से आने वाले वे जीव होते हैं, जो पडिवाई सम्यग्दृष्टि हैं, अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सीधे मिश्र मोहनीय गुणस्थान में नहीं आ सकते हैं।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय का उदय जीव को एक भव एवं अनेक भव में कितनी बार हो सकता है?

समाधान- मिश्र मोहनीय का उदय जीव को एक भव में जघन्य एक बार उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार हो सकता है। अनेक भवों में जघन्य दो बार उत्कृष्ट असंख्यात बार हो सकता है। एक भव में पृथक्त्व हजार बार तथा अनेक भव में उत्कृष्ट असंख्यात बार क्षयोपशम समकित से गिरने वाले जीवों को ही हो सकता है, क्योंकि यही समकित एक भव में हजारों बार तथा अनेक भवों में असंख्यात बार आ-जा सकती है। इतना अवश्य है कि असंख्यात बार असंख्यात भवों में ही आ पाती है, संख्यात भवों में नहीं।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय में जीव आयु का बन्ध क्यों नहीं करता?

समाधान- आयु का बन्ध मध्यम परावर्तमान, घोलमान परिणामों में होता है। दूसरे शब्दों में तीव्र संक्लेश परिणामों में आयु का बन्ध नहीं होता तथा तीव्र विशुद्ध परिणामों में भी आयु का बन्ध नहीं होता। आयु बन्ध के योग्य मध्यम परावर्तमान अर्थात् घोलमान परिणाम मिश्र मोहनीय के उदय में नहीं आ पाने के कारण जीव इस अवस्था में आयु का बन्ध करता ही नहीं है।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय का उदय सर्वघाती होता है अथवा देशघाती होता है?

समाधान- 'मिश्र मोहनीय' मिथ्यात्व मोहनीय का ही एक अविशुद्ध रूप है। इस कारण से मिश्र मोहनीय का उदय सर्वघाती माना जाता है। मिश्र मोहनीय का जब तक उदय रहता है तब तक किसी भी प्रकार की समकित प्राप्त नहीं होती है। समकित प्राप्ति में पूर्णतः घातक होने के कारण मिथ्यात्व मोहनीय की तरह मिश्र मोहनीय के उदय को भी सर्वघाती ही माना जाता है।

जिज्ञासा- मिश्र मोहनीय प्रकृति का प्रदेशोदय कब तक रहता है?

समाधान- जब तक मिश्र मोहनीय का क्षयोपशम रहता है तब तक उसका प्रदेशोदय चलता रहता है। मिश्र मोहनीय का क्षयोपशम चौथे से सातवें गुणस्थान में रह

सकता है। उपशम समकित होने पर तथा सास्वादन समकित होने पर मिश्र मोहनीय का क्षयोपशम नहीं होकर उपशम रहता है। उपशम अवस्था में मिश्र मोहनीय का प्रदेशोदय नहीं रहता है। क्षयोपशम अवस्था में अथवा उदय अवस्था में प्रदेशोदय रहता है। अतः यह कहा जा सकता है कि तीसरे से सातवें गुणस्थान तक मिश्र मोहनीय का प्रदेशोदय रहता है।

क्षयोपशम समकित से गिरकर पहले गुणस्थान में आये हुए जीव के भी मिश्र मोहनीय का प्रदेशोदय माना जाता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

मांसाहार कैंसर की जड़ है

प्रस्तुति डॉ. के. एल. पोकरणा

विश्वभर के विशेषज्ञों ने कैंसर पर हुए 7,000 से अधिक लोगों का अध्ययन किया और पाँच साल तक इस पर काम किया। विशेषज्ञों ने भोजन पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया। इस अध्ययन में पाया गया कि मांसाहार के सेवन से कैंसर की आशंका अधिक होती है, चाहे उन्होंने सप्ताह में कुछ ग्राम मांस का सेवन ही क्यों न किया हो। मांसाहार के साथ मोटापा भी कैंसर के उन कारकों में से एक था, जो कैंसर को आमंत्रित करता है। अध्ययन की रिपोर्ट के अनुसार मोटापे और मांसाहार के कारण अमाशय, आँत-गुर्दे, अग्नाशय (पैन क्रियाज) एवं स्तन में कैंसर का खतरा ज्यादा रहता है।

कैंसर के लिए निम्न खतरे भी हैं-

उपर्युक्त अध्ययन की रिपोर्ट में कुछ और तथ्य भी ज्ञात हुए हैं यथा-अल्कोहल (शराब) के सेवन से मुँह, गले, स्तन, आँत एवं लीवर (यकृत) के कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। हर रोज 50 ग्राम प्रोसेस्ड मांस कॉलेस्ट्रॉल कैंसर के खतरे को 21 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है।

फल कैंसर से बचाते हैं-

फलों में ऐसे केमिकल (रसायन) होते हैं जो कोशिकाओं को पूर्ण विकसित होने देते हैं। इस तरह की कोशिकाओं में कैंसर कम होते हैं और इनमें बीमारियों के विरुद्ध रोग-निरोधक शक्ति अधिक होती है।

कैसे कैंसर का खतरा कम हो, कैसे स्वस्थ रहें?-

वर्ल्ड कैंसर रिसर्च फण्ड (विश्व कैंसर अनुसन्धान कोष) ने कैंसर का खतरा कम करने के लिए कुछ टिप्स दिये हैं-1. मांसाहार का सेवन बिलकुल त्याग कर दें। 2. प्रोसेस्ड एवं लाल मांस कैंसर के लिए सबसे बड़ा खलनायक है। खासतौर पर बेकन, हैम, सासेजेस आदि इनका सेवन नहीं करें। 3. प्रतिदिन पाँच बार अलग-अलग समय पर फल एवं सब्जियों का सेवन करें। 4. शराब, सिगरेट, बीड़ी, सिगार, चिलम-हुक्का एवं तम्बाकू का सेवन भी कैंसर के खतरे को बढ़ाता है, अतः शराब एवं तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में न करें। 5. प्रोसेस्ड फूड, चीनी एवं नमक का सेवन कम करें।

-राजस्थान पत्रिका से साभार

मस्तिष्क का सन्तुलन जरूरी

श्री जयदीप ठड्डा

मस्तिष्क शरीर का महत्वपूर्ण अङ्ग है। इसमें डोपामिन, सेरोटोनिन और नोरपाइनफरीन जैसे प्राकृतिक रसायन होते हैं। ये न्यूरोट्रांसमीटर हैं। इन रसायनों की मदद से शरीर को तन्त्रिका-कोशिकाएँ (नर्व सेल्स) एक-दूसरे को संकेत या सन्देश पहुँचाती हैं। इनसे हमारा व्यवहार, भावनाएँ और विचार नियन्त्रित होते हैं। जब किन्हीं कारणों से इन रसायनों में असन्तुलन होने लगता है, तो मस्तिष्क अच्छे-बुरे का भान भुला देता है। ऐसा व्यक्ति ऊपर से ठीक दिखता है, लेकिन उसका दिमाग उसके वश में नहीं होता। उसके व्यवहार में विकार आने लगते हैं। वह चिड़चिड़ा, तनावग्रस्त तथा आक्रामक हो जाता है। बेचैनी और अवसाद से घिरा रहता है। इस मनःस्थिति का असर पूरे परिवार पर पड़ता है। उस पर काबू नहीं हो सकने पर वह परिवार के विघटन तक का कारण हो सकता है।

रसायनों में असन्तुलन को समझने से व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थितियों को समझने में मदद मिल सकती है। असन्तुलन की यह स्थिति तब होती है जब मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर बहुत अधिक या बहुत कम हो जाते हैं। जब किन्हीं शारीरिक, आनुवांशिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से व्यक्ति का व्यवहार असामान्य होने लगता है, तो वह परिवार के साथ-साथ समाज के लिए भी घातक होने लगता है। उसका व्यवहार उत्तेजक, गैर जिम्मेदार और आपराधिक होने लगता है। वह धोखेबाज, लापरवाह और गुस्सैल हो जाता है। उसके लिए दूसरों की भावनाएँ कोई मायने नहीं रखती। वह अपनी गलतियाँ नहीं मानता, बल्कि अपनी परेशानियों के लिए दूसरों को दोषी ठहराता है। उसका यह समाज विरोधी व्यवहार एक तरह का मानसिक विकार है। पर

मानसिक बीमारी नहीं है। वह व्यक्ति पागल नहीं है। फिर भी उसका उपचार जरूरी है।

रसायनों में असन्तुलन की एक बड़ी वज़ह नशीली दवाएँ और शराब भी है। जब रसायनों में असन्तुलन बढ़ जाता है, तो नशे की लत बढ़ जाती है। इससे वह और ज्यादा बेबस, बेचैन और अवसाद में रहने लगता है। उसे लगने लगता है कि उसका अपना कोई नहीं है, उसे जीवन व्यर्थ लगने लगता है। वह कभी उदास तो कभी बहुत ज्यादा उत्साहित रहता है। दो तरह की यह मानसिकता बाइपोलर डिस्ऑर्डर की स्थिति है। जब यह स्थिति बढ़ जाती है तो एक दिन हमें सुनने को मिलता है कि उसने आत्महत्या कर ली। परिवार अपना बच्चा खोता है और देश और दुनिया एक काबिल शख्सियत को खोते हैं।

व्यक्ति के व्यवहार में असामान्य परिवर्तन दिखने लगे तो समझ लीजिए मस्तिष्क के रसायनों में कुछ गड़बड़ है। उनमें असन्तुलन होने लगा है। रसायनों में असन्तुलन मानसिक विकार का एक बड़ा कारण है। दूसरे प्रमुख कारण हैं-परिवार की पृष्ठभूमि, वंशानुगत असर, जीवन में मिले अच्छे-बुरे अनुभव, नशीली दवाएँ, शराब और जरूरत से अधिक दवाइयाँ लेना। इन पर हमें शुरू से ही काम करने की जरूरत है। हालाँकि इसका कोई सीधा-सीधा उपचार नहीं है। किसी को एण्टी-डिप्रेसेंट, एण्टी साइकोटिक्स और मूड स्टेबिलाइजर्स जैसी दवाओं से ही राहत मिलती है, तो किसी को विभिन्न प्रकार की थेरेपी मात्र से आराम मिल जाता है। थेरेपी में व्यक्ति की सोच और व्यवहार को समझने की कोशिश की जाए। कभी उनसे बातचीत करके, कभी परिवार से विमर्श करके, तो कभी दोस्तों से

पता करके। उन्हें यह भी परामर्श दिया जा सकता है कि वे प्रातःकाल अच्छा एवं सकारात्मक सोचें, जिससे उन्हें खुशी मिले। स्वाध्याय, सामायिक एवं प्रभु भक्ति से मस्तिष्क शान्त एवं सन्तुलित होता है। प्रातःकाल योग एवं ध्यान भी मस्तिष्क के सन्तुलन हेतु उपयोगी होते हैं। स्वाध्याय एवं सामायिक से चित्त शान्त होता है तो मस्तिष्क को ताज़गी का अनुभव होता है। ध्यान, योग

और प्रार्थना आदि से भी चित्त को शान्ति मिलती है। जितना चित्त शान्त होगा मस्तिष्क उतना ही सन्तुलित होगा। इससे भावनाओं एवं चिन्तन में बदलाव अनुभव होगा। नकारात्मक के स्थान पर सकारात्मकता का प्रवेश होगा एवं असन्तुलन की समस्या का निराकरण हो जाएगा।

-ढङ्गा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

इंसाफ सबके लिए बराबर

श्री महावीर प्रसाद जैन

जो काम आप दूसरों से चाहते हो, वैसा काम खुद को भी हर हाल में करना चाहिए। यानी जिस अच्छे काम को करने हेतु दूसरों को शिक्षा देते हो, वह काम शिक्षा देने वालों को भी अवश्य करना चाहिए। इंसाफ तो सभी के लिए बराबर ही होता है। सत्ता एवं अधिकार पाकर न्याय को कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

पी.डब्ल्यू. स्मिथ अमेरिका के मशहूर जज थे। एक बार वे अदालत से घर लौट रहे थे। रास्ते में उनकी कार से टकराकर एक व्यक्ति घायल हो गया। तत्काल भीड़ इकट्ठा हो गई और सभी लोग कार चालक को बुरा-भला कहने लगे।

लेकिन लोगों को जब पता चला कि कार चालक कोई और नहीं जाने-माने न्यायाधीश स्मिथ हैं तो लोग घायल व्यक्ति को दोषी ठहराने लगे।

स्मिथ ने कहा-“इस समय कौन दोषी है इसका फैसला आप लोग नहीं कर सकते। इसका निर्णय तो अदालत ही करेगी। इस समय तो इस व्यक्ति को इलाज की जरूरत है।”

जज साहब लोगों की मदद से घायल व्यक्ति को अस्पताल ले गए और उसकी मरहम-पट्टी करायी। स्मिथ ने इसके बाद अस्पताल में तैनात पुलिस से कहा-“यह मेरी कार से घायल हुआ है। मेरे

खिलाफ इसका केस दर्ज किया जाए।”

पहले तो पुलिसवालों ने आनाकानी की, लेकिन स्मिथ के दबाव में केस दर्ज हो गया। दूसरे दिन पुलिस ने उनके सामने ही यह केस पेश किया।

इससे कुछ दिनों पहले स्मिथ ने इसी तरह के हादसे में एक व्यक्ति को 15 दिनों की कैद अथवा 15 डालर जुर्माने की सजा सुनाई थी। इसी फैसले को नज़ीर मानकर उन्होंने अपने को भी वही सजा सुना दी। फिर पुलिस से कहा-“मुझे जेल ले चलो।” पुलिस वाले उच्चाधिकारी के आदेश के बिना जज साहब को जेल कैसे ले जाते? उन्होंने इसकी सूचना मुख्य न्यायाधीश को दी। मुख्य न्यायाधीश कुछ देर बाद स्मिथ की अदालत में पहुँचे और कहा-“हमें आपके निर्णय पर गर्व है। यदि सभी जज आपकी तरह इंसाफ करने लगे तो लोगों का इंसाफ पर भरोसा और मजबूत होगा। आपने अपना फैसला सुना दिया। अब मेरा भी फैसला सुन लीजिए।”

मुख्य न्यायाधीश ने कैद की जगह 15 डॉलर जुर्माना स्वयं देकर स्मिथ को बरी कराया। स्मिथ ने कहा-“इंसाफ सबके लिए बराबर होना चाहिए।” यह कहकर उन्होंने 15 डॉलर चीफ जस्टिस को लौटा दिये। इस प्रकार इंसानियत के साथ जीने वाले इंसान ही वर्तमान में भी देवरूप में माने जाते हैं और भविष्य में भी सद्गति को प्राप्त कर लेते हैं।

-पुत्र श्री घनश्याम जैन, ग्राम पो. कुण्डेरा, तह. व जिला सर्वाईमाधोपुर-322029 (राज.)

हर निमित्त एक प्रेरणा देता है

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

अनन्तर सिद्धों के भेदों में तीन प्रकार के बुद्ध सिद्धों का वर्णन मिलता है—स्वयं बुद्ध सिद्ध, प्रत्येक बुद्ध सिद्ध और बुद्ध बोधित सिद्ध। स्वयं बुद्ध सिद्ध वे होते हैं जो पूर्व जन्म या जाति स्मरण ज्ञान के कारण बोधि को प्राप्त करते हैं। प्रत्येक बुद्ध सिद्ध वे होते हैं जो एक निमित्त मात्र मिलने से आत्मा को जागृत कर बोधि प्राप्त कर लेते हैं। बुद्ध बोधित सिद्ध ऐसी भवी आत्माएँ होती हैं जो किसी महापुरुष के वचनों को सुनकर या सान्निध्य प्राप्त कर बोधि को प्राप्त होती हैं।

एक निमित्त भी कभी-कभी जीवन के लिए अत्यन्त उपकारी हो सकता है। यदि हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक है तो हमारे आसपास ही रहे हुए निमित्त हमारी प्रगति के हेतु बन सकते हैं, हमारे जीवन की दिशा को सही मार्ग पर मोड़ सकते हैं।

एक कल्पना के माध्यम से निमित्तों के सहयोग को समझने का प्रयास करते हैं। हमने ले रखी है मोह निद्रा और हमें कमरे में रखी वस्तुएँ प्रतिदिन उस निद्रा से उठाने की प्रेरणा करती हैं। प्रतिदिन हमारे कानों में एक अलग आवाज़ सुनाई देती है। हम अलसाये से सोचते हैं, चिन्तन करते हैं कि आज हमें कौन जगा रहा है? आइये देखते हैं कि मोह निद्रा से जीव को चेताने के लिए कौनसा निमित्त कैसे सहायता प्रदान कर रहा है?

1. खिड़की

अलसुबह व्यक्ति के कानों में एक गूँज सुनाई दी—“बुरा-बुरा सब को कहूँ, बुरा न दीसे कोय। जो घट शोधूँ आपणो, मुझसे बुरा न कोय।” अरे! कौन मुझे जगा रहा है, कहाँ से आयी आवाज़? थोड़ा ध्यान दिया तो देखा यह तो खिड़की बोल रही है। व्यक्ति उठकर खिड़की के पास गया। वहाँ से देखा तो सामने वाला घर

गन्दा नज़र आ रहा था। मन ही मन सोचने लगा, कैसे लोग हैं, घर को साफ नहीं रखते। लेकिन खुद की खिड़की खोली तो देखा उस पर जाले, मिट्टी लगी हुई हैं। खिड़की का काँच धूल से सना हुआ था, जैसे ही उसे साफ किया और नज़र सामने वाले घर पर पड़ी तो वह घर तो चमक रहा था। खिड़की बहुत बड़ी प्रेरणा दे रही थी कि गन्दगी, कमी, बुराई तो मुझमें है लेकिन सामने वाला खराब दिख रहा है। जिस दिन मैं स्वयं साफ हो गई तो बाहर की हर चीज में दोष नहीं, गुण दिखने लग जाएगा। इसी तरह जब आत्मा गुणों से भरपूर बन जाती है तो उसे हर चीज में, हर व्यक्ति में गुण ही नज़र आता है, दोषों पर दृष्टि जाती ही नहीं है।

2. कलैण्डर

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।

अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइयो॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।

धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइयो॥

फिर अगले दिन यह कौन मेरी नींद खराब कर रहा है, आखिर क्या कहना चाहता है? धीरे से सुना, अरे यह तो कलैण्डर बोल रहा है। समझा रहा है कि ज्यों-ज्यों रातें बीत रही हैं वे वापस आने वाली नहीं है। जिन-जिन रातों में अधर्म का सेवन हुआ वे रातें विफल हो जाती हैं और जिन-जिन रातों में धर्म का सेवन होता है वे रातें सफल हो जाती हैं। कलैण्डर का हर दिन, हर माह और अन्त में पूरा का पूरा वर्ष बीतता जाता है। साथ-साथ बीतता जा रहा है हमारी उम्र का हर दिन, हर माह और एक दिन हमारा पूरा आयुष्य भी बीत जाएगा। जो समय हमारे हाथ में है उसको सफल बनाना या विफल करना भी हमारे ही हाथ में है।

3. दर्पण

सुख-दुःख दोनों बसत हैं, ज्ञानी के घट माँहि।

गिरि सर दीसे मुकुर में, भार भीजवो नाँहि॥

आज तो दर्पण की बारी थी मोह निद्रा में सोये हुए को जगाने की। दर्पण सन्देशा दे रहा है कि जैसे मुकुर अर्थात् दर्पण में पर्वत का प्रतिबिम्ब वैसा का वैसा दिखने पर भी दर्पण को भार महसूस नहीं होता और सरोवर का प्रतिबिम्ब भी दर्पण को गीला नहीं करता। ठीक उसी प्रकार ज्ञानी का हृदय भी दर्पण के समान सुख-दुःख, की परिस्थिति को प्रतिबिम्ब मात्र मानता है उससे प्रभावित नहीं होता है। इसी प्रकार हमें भी सुख हो या दुःख, समभाव में रहने का ही प्रयत्न करना है। उन परिस्थितियों से प्रभावित होकर जीवन में अशान्ति को स्थान नहीं देना है।

4. दरवाजा

अन्तर के पट खोल रे, प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।

चाहे मेरी आँखें ले ले, ज्ञान की आँखें खोल॥

प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल...

आज भजन की मधुर स्वरलहरियों से व्यक्ति को निद्रा से उठाने का प्रयत्न कर रहा है दरवाजा। जैसे ही दरवाजा खुलता है संसार में रहने वाले बाहरी व्यक्तियों से सम्पर्क होने लगता है, पर जैसे ही आत्मा का दरवाजा खुलता है तो सीधा सम्पर्क परमात्मा से होता है।

जैसे बारिश के मौसम में नमी के कारण दरवाजा फूल जाता है और उसे खोलने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। दरवाजा खुलते ही बाहरी संसार दिखने लगता है। ठीक वैसे ही कषायों की बारिश के कारण राग-द्वेष रूपी नमी से आत्मा रूपी दरवाजा बन्द है। कुछ पुरुषार्थ करें, थोड़ी तप-संयम आदि की चोट लगायें तो दरवाजा खुल जाएगा और उसके भीतर बैठे प्रभु से साक्षात्कार हो जाएगा।

5. दीवार और छत

महाउदगवेगेण, वुज्झमाणण पाणीणं।

सरणं गई पइट्ठ य, दीवं कं मण्णसि मुणी॥

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणण पाणीणं।

धम्मो दीवो पइट्ठ य, गई सरणमुत्तमं॥

आज उठाने का स्वर थोड़ा तेज था। दीवार और छत दोनों मिलकर जो उठा रहे थे। सन्देशा दे रहे थे कि जैसे छत और दीवार चोरी से तथा गर्मी, सर्दी और वर्षा से रक्षा करते हैं ठीक उसी प्रकार पानी का प्रबल प्रवाह हो और सागर के बीच में एक द्वीप मिल जाये तो बहते-डूबते प्राणियों को जीवन बचाने का आधार मिल जाता है। ठीक उसी प्रकार धर्म ऐसा द्वीप, दीवार और छत है जो जन्म रूपी जलती धूप से, वृद्धावस्था रूपी वर्षा से, मृत्यु रूपी ठिठुरन से और रोग रूपी चोर से हमारी रक्षा करने का सामर्थ्य रखता है। जिस प्रकार कमरे की दीवारें और छत मजबूत होती हैं तो व्यक्ति वहाँ सुरक्षा का अनुभव करता है। उसी प्रकार जहाँ जिनवाणी और धर्म पर श्रद्धा में मजबूती है वहाँ जीव भयरहित होता है और सुरक्षित रहता है।

6. रंग-रोगन

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड पिञ्जरा देह।

भीतर या सम जगत में और नहीं घिन गेह॥

आज जो ध्वनि सुनाई दे रही थी उसमें न जोश था और न सरसता थी, कुछ उदास सी, कुछ नीरस सी वाणी थी। ध्यान दिया तो पता चला कि दीवार का एक जगह से रंग, सीमेण्ट आदि उतर गये थे। दीवार का वह हिस्सा अब बहुत ही भद्दा लग रहा था। जब तक रंग ऊपरी सतह पर था तब तक दीवार की सुन्दरता कायम थी, लेकिन अब नहीं। ठीक वैसे ही यह शरीर जब तक त्वचा से ढँका हुआ है तब तक सुन्दर लग रहा है अन्दर से तो यह बदरंग ही है, अशुचि का भण्डार ही है, इसलिये इसे सजाने-सँवारने में ज़िन्दगी की सार्थकता नहीं, अपितु जब तक यह शरीर सहयोग दे रहा है तब तक तप, संयम, साधना, आराधना से आत्मा को आप्लावित कर लें, तब ही जीवन की सार्थकता है।

7. फर्श

शुद्ध चेतन उज्ज्वल दरब, रह्यो कर्म मल छाया।

तप संयम सूँ धोवता, ज्ञान ज्योति बढ जाय।।

आज चेताने की बारी फर्श की थी। फर्श सन्देशा दे रहा है, प्रेरणा प्रसारित कर रहा है कि जब मैं मैला, गन्दा हो जाता हूँ, तब मुझे साबुन और पानी से धोया जाता है। जिससे मेरी जो सफेद संगमरमर सी सतह है, वह निखर कर एकदम साफ सुथरी नज़र आती है। ठीक इसी प्रकार इस आत्मा पर जो कषाय रूप धूल, राग-द्वेष रूपी कचरा, मोह रूपी धब्बे आ गए हैं यदि उन्हें तप-संयम रूपी साबुन-पानी से साफ करेंगे तो निश्चय ही आत्मा का शुद्ध, उज्ज्वल रूप निखर कर सामने आ सकता है। जैसे हमें गन्दे फर्श पर बैठना अच्छा नहीं लगता, साफ फर्श पर हम निःसंकोच बैठते हैं ठीक वैसे ही परमात्मा भी स्वच्छ आत्मा में ही विराज सकते हैं एवं धर्म भी शुद्ध और स्वच्छ मन में ठहर सकता है।

8. घड़ी

बहुत बीती थोड़ी रही, अब तो सूरत सम्भार।

पर भव निश्चय जावणो, वृथा जन्म मत हार।।

घड़ी के अलार्म की आवाज़ कुछ अलग आ रही थी। जगा रही है भाव निद्रा में सोये हुए व्यक्ति को। द्रव्य निद्रा से तो यह प्रतिदिन जगाती है, पर आज मोहनिद्रा हटाने में सहायक बनना चाहती है। घड़ी समय बताती हुई कह रही है कि रात का बहुत-सा हिस्सा बीत चुका है अब उठने की तैयारी कर ले। आयुष्य का काफी समय भी बीतता जा रहा है इसलिये अब तो जागृत होना ही होगा। अब भी नहीं चेते तो सूर्योदय की लालिमा अर्थात् पुण्य रूपी लालिमा से रुबरू होने का मौका हाथ से निकल जायेगा। जीवन धीरे-धीरे सूर्यास्त की ओर जा रहा है यदि कोई मजदूर सूर्योदय से सूर्यास्त तक हाथ धरकर बैठा रहे तो शाम को रोटी के भी लाले पड़ने वाले ही हैं। वैसे ही हमने भी सम्यक् पुरुषार्थ नहीं किया तो जीवन के आयुष्य के सूर्यास्त के साथ हीरे सा अनमोल मानव भव का मोल मात्र कौड़ी जैसा रह जाएगा। इसलिये प्रभु भी फरमाते हैं-समयं गोयम! मा पमायए अर्थात् क्षण भर का भी प्रमाद मत करो।

9. ट्यूब लाइट

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एणंतसोक्खं समुवेइ मोकखं।।

सोते हुए व्यक्ति को कमरे में कुछ उजाला या प्रकाश सा महसूस हुआ, जो चिलके के रूप में सीधे उसकी आँखों पर पड़ रहा था। एक आवाज भी लाइट की तरफ से आ रही थी कि जैसे ही मुझमें बिजली का सञ्चार होता है मैं जलने लगती हूँ और अन्धियारे को दूर भगा देती हूँ, ठीक वैसे ही आत्मा में ज्ञान रूपी बिजली का सञ्चार होता है तो वह भी जागृत होने लगती है और राग-द्वेष-मोह के अन्धियारे को दूरकर मोक्ष रूपी प्रकाश फैलाने में सक्षम हो जाती है।

10. अलमारी

खेत्त-वत्थु-हिरण्णं च पुत्तदारं च बंधवा।

चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्सं मे।।

अलमारी का दरवाजा शायद रात को भूल से खुला हुआ रहा था, इसलिये उसके दोनों पट आपस में संवाद कर रहे हैं। उस वार्तालाप का शोर व्यक्ति की नींद में खलल पैदा कर रहा है। आखिर उठना ही पड़ा। अलमारी कह रही है कि तुम्हारा जो भी सोना, चाँदी, बैंक बैलेन्स है वह साथ में जाने वाला नहीं है। मुट्टी बाँध कर आये थे, मगर जाना तो खाली हाथ ही पड़ेगा। हाँ, पुण्य रूपी खर्ची जरूर साथ जा सकती है इसलिये इन पुद्गलों का सञ्चय करने और सुरक्षित रखने में जीवन का अनमोल समय व्यर्थ मत करो। हाँ, पुण्यवानी से प्राप्त इस धन रूपी पुद्गल से दान देकर, साधर्मि सहायता करके पुण्यवानी को साथ में जरूर ले जाया जा सकता है। इस पुण्य से प्राप्त साधन सामग्री के मालिक नहीं, ट्रस्टी बनकर रहो।

11. टी. वी.

संसार तो है एक सपना, दृश्य यहाँ छलते हैं, मत फँसना।

उठने के साथ ही व्यक्ति ने टी.वी. का रिमोट उठाया और बटन दबाया तो पाया कि टी. वी. आज अलग ही मूढ़ में है। धारावाहिक, फिल्मी गीत दिखाने के

स्थान पर एक भजन स्क्रीन पर उभर रहा है। कह रहा है कि ये दिखने वाले सारे दृश्य नाटकीय हैं, इनमें कोई सच्चाई नहीं है। एक किरदार जाता है, दूसरा आता है। ठीक इसी प्रकार संसार के सारे दृश्य भी दिखने में एकदम सत्य दिखते हैं। जैसे टी.वी. में कोई दुर्घटना दिखाई जाए तो हमें दुःख नहीं होता क्योंकि हमें पता है कि यह मात्र कल्पना ही है। शादी-विवाह को देखकर हमें बहुत प्रसन्नता भी नहीं होती, क्योंकि हम जानते हैं कि यह मात्र नाटक है। इसी प्रकार संसार रूपी स्क्रीन पर जो-जो दृश्य सामने आ रहे हैं, वे भी हटने वाले ही हैं। जैसे टी.वी. के नाटक से सुख-दुःख पर असर नहीं होता है वैसे ही समभाव हमारा अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में रहना चाहिये। टी.वी. सिखा रही है कि हर परिस्थिति में स्वयं को नहीं जोड़ें, अपितु हर दृश्य को ज्ञाताद्रष्टा भाव से देखें।

12. गद्दा

जगवासी घूमे सदा, मोह नींद के जोर।

सब लूटे नहीं दीसता, कर्म चोर चहुँओर।।

आज तो ऐसा लग रहा है मानो कोई कानों में बहुत करीब से आकर कुछ धीरे-धीरे बोलकर उठा रहा है। आज तो जिस गद्दे पर सोया हुआ है वही जागृति सन्देश दे रहा है। कह रहा है कि मोह रूपी नींद इतनी

गहरी आ रही है कि तू संसार की जो सुख शय्या है, जो मात्र सुख का आभास कराती है उस पर बेभान होकर सो रहा है। कर्म रूपी चोर आत्मा में सेन्ध लगा चुके हैं। यदि तू अब भी नहीं जागृत हुआ तो वे तेरे पुण्य, शान्ति, गुण और व्रत रूपी रत्नों को चुरा लेंगे। इसलिये इस गद्दे पर शय्या का सुख लेने के चक्कर में जब तक आँखें खुलेगी तब तक सर्वस्व लुट गया होगा। जहाँ आत्मा गुणों की, शान्ति की और समता की स्वामी है, वहाँ मिथ्यात्व, राग-द्वेष और दोष रूपी दारिद्र्य पैर पसार चुका होगा। इससे पहले कि विभाव रूपी चोर तेरा सब हड़प ले, इस सुख शय्या को छोड़कर उन चोरों से अपनी आत्मा का रक्षण करने में ही समझदारी है।

ये तो कतिपय उदाहरण हैं, काल्पनिक रचना है, जिसके माध्यम से हमें जागृति की, आत्मनिरीक्षण की प्रेरणा मिल रही है। यदि वास्तव में हम भाव निद्रा से जागना चाहें तो हर एक वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति हमारे लिए सहायक बन सकती है, पर इसके लिये हमारे विचारों में, सोच में, चिन्तन में सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिये। अपनी आत्मा की चिन्ता होनी चाहिये और सबसे जरूरी जिनेश्वर प्रभु की वाणी और कर्मसिद्धान्त पर दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये। तब हर निमित्त हमारी प्रगति में सहायक बन जाएगा।

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर-302018

श्रद्धा-भक्ति से अन्तर

सजाता हूँ मैं

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

तेरे नाम का ध्यान लगाता हूँ मैं,

तेरे चरणों में, शीश झुकाता हूँ मैं।

तेरे नाम में है, बड़ी शक्ति प्रभो!

श्रद्धा, भक्ति से अन्तर सजाता हूँ मैं।।

तेरे नाम का ध्यान.....।।1।।

तेरे नाम सुमिरन से, मन होता प्रसन्न,

हल्का हो जाता है, मेरा बोझिल मन।

मिट जाती है मन की, सारी तपन,

शुभ कारज में, मन को लगाता हूँ मैं।।

तेरे नाम का ध्यान.....।।2।।

तेरे नाम की महिमा, गज़ब है प्रभो!

सारे संकट दूर सब, टल जाते हैं।

जीवन चलता व्यवस्थित, बड़ी शान से,

शान्ति समाधि का, आनन्द उठाता हूँ मैं।।

तेरे नाम का ध्यान.....।।3।।

-जनता साईरी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,
स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

अहंकारी नहीं, संस्कारी बनें

श्री गौतम पारख

एक आलेख के शीर्षक 'अहंकार का अन्धियारा' पर मेरा ध्यान आकर टिक गया। मैं सोचने लगा कि अहंकार न तो अन्धियारे का आभास होने देता है, न ही स्वीकारने देता है। अहंकार तो 'मैं' को ही पुष्ट करता है। पुण्यवानी से प्राप्त शक्ति, सामर्थ्य और उपलब्धि पर इतराने, इठलाने और अकड़ने का दूसरा नाम ही तो अहंकार है। सम्यक् चिन्तन, सम्यक् पराक्रम और अनासक्त भावों से प्राप्त सफलता कभी अकड़ती नहीं, इतराती नहीं, इठलाती नहीं। अहंकारी व्यक्ति को पुण्यवानी के योग से सफलता तो मिल जाती है, परन्तु उसके सत्य पर कोहरा छा जाता है फिर उसे लगता है कि मैं ही शक्तिमान हूँ। मेरा निर्णय उचित और लाभदायी रहा। भीड़ मेरे पीछे खड़ी है। प्रशंसक मेरी परिक्रमा कर रहे हैं। सत्य यह है कि जिन्हें वह प्रशंसक समझ रहा है वे तो केवल और केवल उगते सूरज को नमन करने वाले लोग हैं। वास्तव में जी हजुरी करने वालों की फौज प्रशंसकों का नहीं, चापलूसों का कुनबा है। उसका अहंकार पुष्ट होने लगता है। 'मैं', 'मैं', 'मेरा, मेरा' कहने लगता है। पुण्यवानी के उदय से मानो वह पापों की गठरी बाँध रहा हो। परन्तु विडम्बना यह है कि उसका अहंकार यह एहसास, उसे होने नहीं देता। बल्कि उसके अभिमान का ही पोषण करने लगता है। कभी-कभी स्वीकार भाव, आत्मा के किसी कोने से अहंकारी को समझाने लगता है। अन्दर से आवाज आती है- 'रुक जा, तेरा अहंकार तुझे ही ले डूबेगा।' कदाचित् अन्तरआत्मा की आवाज उसे सुनाई भी देती है तो सुनकर भी उसे अनसुना कर देता है। संस्कृत में 'मैं' को अहम् कहते हैं। मानो अहंकारी व्यक्ति अहम् की कार में बैठकर यात्रा कर रहा हो। सोचता है कि मैं कितनी विलासी, ऊँची, सुविधायुक्त कार में सफर कर रहा हूँ।

लेकिन वह भूल जाता है कि यदि ब्रेक मारने की कला नहीं सीख पाया तो कार को दुर्घटनाग्रस्त होने में समय और नहीं लगेगा। कहते हैं कि अहंकार के अन्धे व्यक्ति को न तो अपनी गलतियाँ दिखती हैं और न ही दूसरे इन्सानों की अच्छी बातें। जिन्दगी में कभी-भी अपने हुनर, सफलता, सम्पन्नता पर घमण्ड मत करना, क्योंकि यह भी सच है कि पत्थर जब पानी में गिरता है तो अपने ही वज़न से डूब जाता है।

सत्संग सभा में सुना हुआ एक प्रसङ्ग मेरे स्मृतिपटल पर उभरकर आ गया। स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के दो शिष्य कई विद्याओं में निपुण थे। दोनों को शास्त्रों का भी विशद ज्ञान था। दोनों को अपनी-अपनी विद्वत्ता पर कुछ अधिक ही नाज़ था। कभी-कभी दोनों का अहंकार फुफकारने लगता था। संयोगवश, दोनों किसी बात पर आपस में भिड़ गए। एक-दूसरे से कहने लगे कि मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ, मेरी विद्वत्ता को कोई चुनौती नहीं दे सकता। अन्त में, दोनों का अहंकार टकराने लगा। किसी वृद्ध सन्त ने उन्हें गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास जाकर समाधान करने का प्रस्ताव दिया। दोनों गुरुदेव के पास उपस्थित हुये। अपनी-अपनी विद्याओं, कलाओं और शास्त्रीय ज्ञान का विवरण देने लगे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी असमञ्जस में पड़ गये। दोनों ही मेरे होनहार शिष्य हैं। वे मन ही मन सोचने लगे कि इन्हें अहंकार के सर्प ने डस लिया है। अन्त में उन्होंने मुस्कुराते हुये कहा कि जो दूसरों को ज्ञानी समझता है, जो दूसरों का सम्मान करता है, जो दूसरों से सीखने एवं जानने का जुनून रखता है वही विद्वान् कहलाता है। दोनों शिष्यों की आँखें खुल गईं। अहंकार का नशा मानो उतर गया। गुरुदेव के समक्ष ही दोनों एक-दूसरे को सम्मान देने लगे। एक-दूसरे की

विद्वत्ता को मानो प्रणाम करने लगे।

विनय ही धर्म का प्राण है। झुकना, नमना ही तो हमारी संस्कृति की पहचान है। विनय, विनय बना रहे। कदाचित् विनय, चापलूसी का स्थान लेने लगे, तो समझना चाहिये कि चापलूसी करने वाला एक दिन खुद भी डूबेगा और हमें भी डुबायेगा। अहंकार और संस्कार में फर्क यह है कि अहंकार दूसरों को झुकाकर खुश होता है, संस्कार स्वयं झुक जाता है।

स्वाध्याय के क्षणों में पढ़ा हुआ एक काल्पनिक प्रसङ्ग स्मृतिपटल पर सहज ही उभरकर आ गया। एक गाँव में एक मूर्तिकार रहता था। मूर्तियाँ बनाता था। मूर्तियों को देखकर हर किसी को मूर्तियों के जीवन्त होने का भ्रम हो जाता था। आस-पास के सभी गाँवों में उसकी प्रसिद्धि थी। उससे मूर्तियाँ खरीदने वालों को अग्रिम बुकिंग करानी पड़ती थी। उसे अपनी कलाकारी और सफलता पर अहंकार हो गया था। समय बीतता गया। मूर्तिकार वृद्ध हो गया। उसे अहसास होने लगा कि मृत्यु उसके निकट खड़ी है। उसने अपने ही समान दस मूर्तियाँ बनाईं। मूर्तियों को देखने से लगता था कि मानो मूर्तिकार साक्षात् खड़ा है। उन्हीं दस मूर्तियों के बीच वह भी उसी मुद्रा में जाकर खड़ा हो गया। मृत्यु का समय आया। काल्पनिक कथानक के अनुसार यमराज स्वयं उसे लेने आये। वे भी मूर्तियों की एकरूपता और साक्षात् जीवन्तता को देखकर, आश्चर्यचकित रह गये। इनमें मूर्तिकार वास्तव में कौन है? पहचानना उनके लिए कठिन हो गया। मृत्यु का समय टाला नहीं जा सकता।

यमराज ने एक युक्ति लगाई। वे जानते थे कि मानव के स्वभाव में सबसे बड़ा दुर्गुण है अहंकार। यमराज ने कहा कि मूर्तिकार ने अद्भुत, अविश्वसनीय, साक्षात् मूर्तियाँ बनाई हैं। परन्तु उसने इनमें एक कमी रख दी। काश मूर्तिकार मेरे सामने होता तो मैं बतलाता कि कहाँ चूक हो गई, कमी रह गई। यह सुनते ही मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा। सोचने लगा चूक, वह भी मुझसे हो गई? ऐसा हो ही नहीं सकता और तत्काल बोल उठा—गलती कहाँ रह गई? यमराज ने भी तत्काल उसे उठा लिया और कहने लगे कि मूर्तियाँ बोल नहीं सकती जबकि तुम्हारे अहंकार ने तुम्हें बोलने हेतु विवश कर दिया।

मैं सोचने लगा कि वास्तव में अहंकार सदैव घातक रहता है। किसी भी क्षेत्र में अपने आपको पूर्ण समझ लेना; मेरे जैसा कोई नहीं हो सकता, ऐसा सोचना ही जीवन की सबसे बड़ी भूल है। कहावत भी है कि—

अहंकार में तीन गये, धन, वैभव और वंश।

न मानो तो देख लो रावण, कौरव और कंस॥

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो! खुद पर किया गया गर्व, अहंकार होता है और दूसरों पर किया गया गर्व सम्मान होता है। अतः हमें दूसरों से सीखने, दूसरों को सम्मान देने, दूसरों से प्रेरणा लेने का महामन्त्र सिखा देना। अहंकार आते ही अन्धकार छाने लगता है। हे प्रभो! हमें अहंकार के अन्धियारे से निकालकर आत्मचिन्तन के उजाले में जाने का सामर्थ्य देना।

—राजानन्दगौड़ (छत्तीसगढ़)



जिनवाणी पर अभिमत

श्री अजित भण्डारी

नवम्बर. 2022 की जिनवाणी का अवलोकन किया, तो मन को परम हर्ष एवं आनन्द हुआ। सन्त-भगवन्तों के लेख तो अत्यन्त उपयोगी होते ही हैं, साथ में प्रबुद्ध लेखकों द्वारा लिखित अत्यन्त सुन्दर लेख भी कम प्रेरणास्पद नहीं होते। इस अंक में श्रीमती वर्षाजी जैन, डॉ. अनिल कुमारजी जैन, डॉ. विमलचन्दजी

जैन, श्री पारसमलजी चण्डालिया, श्री गौतमजी पारख, श्री नवरतनजी डागा आदि लेखकों के लेख मन की गहराइयों को छूने वाले तथा हृदयस्पर्शी लगे। सभी लेखकों का बहुत आभार एवं धन्यवाद।

इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे उत्तम लेखकों के लेखन से जिनवाणी की प्रतिष्ठा और लोकप्रियता में चार चाँद लगे हैं। जिनवाणी स्वयं में एक उत्तम साहित्य है।

—जोधपुर (राजस्थान)

त्याग और दान में फर्क

श्री प्रमोद महनोत

दान और त्याग दोनों भिन्न हैं। जैन आगमों में त्याग और दान दोनों की भरपूर प्रेरणा दी गई है। दोनों की अपनी-अपनी उपयोगिता तथा महत्त्व है। अगर हम गहराई में जाकर विचार करें, तो ये दोनों पृथक्-पृथक् हैं, जबकि सामान्यतया लोग दान को ही त्याग समझ लेते हैं।

त्यागी परिग्रह से पीठ मोड़ लेते हैं, जबकि दानियों के पास अपार बाह्य परिग्रह पाया जा सकता है। स्पष्ट है कि त्याग शब्द निवृत्ति का सूचक है। इसमें बाह्य और आन्तरिक दोनों परिग्रहों का त्याग होता है। जैनाचार्य के अनुसार अपने से भिन्न, समस्त पर-पदार्थों से निवृत्ति यह जानकर की जाए कि 'ये पर हैं, मेरे नहीं हैं' तब वह त्याग होगा। असल में त्याग परद्रव्यों के प्रति होने वाले मोह-राग-ममत्व का होता है। 'पर' पर ही है, ऐसा ज्ञान ग्रहण कर उस पदार्थ से ममत्व भाव को तोड़ना ही त्याग है। सही त्याग के लिए अपने-पराये का ज्ञान हो जाए तो ही त्याग सम्भव है।

त्याग गलत वस्तु, भाव या क्रिया का होता है, जबकि दान सिर्फ उत्तम वस्तु का होता है। हम सुनते हैं कि क्रोध, मान, माया, लोभ छोड़ो। ऐसा कभी नहीं सुनते कि ज्ञान छोड़ो। जो आत्मा का अहित करने वाले हैं वे हेय हैं, त्याज्य हैं, अतः इन्हीं का त्याग किया जाता है। त्याग धर्म है और दान पुण्य है।

विश्व में बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनका त्याग होता है, दान नहीं। जैसे राग-द्वेष, घर-परिवार, माँ-बाप, स्त्री-पुत्र आदि को छोड़ा जा सकता है, पर उनका दान नहीं किया जा सकता। कुछ ऐसी चीजें हैं जिनका दान होता है, परन्तु त्याग नहीं होता है। जैसे-ज्ञान दान और अभय दान। पर औषधि, आहार, रुपया-पैसा,

सम्पत्ति आदि का त्याग भी हो सकता है और दान भी दिया जा सकता है।

दान मुख्यतः सत्कार्यों हेतु करुणा भाव से या सामाजिक व्यवहार के नाते देते हैं, पर इसमें उपेक्षा-भाव नगण्य है। त्याग तभी सम्भव है, जबकि हम समस्त वस्तुओं के प्रति उपेक्षा, उदासीनता का भाव रखें। जिन वस्तुओं को त्यागना है, उनके लिये उपेक्षा जागृत हो तभी सच्चा त्याग हो सकता है। दान कम या अधिक दें, तो पुण्य कमायेंगे तथा उत्तम त्याग से जीवन शुद्ध, पावन और महान् बनेगा।

इस विषय से सम्बन्धित एक लघुकथा पर मन्थन करें। गाँव के दो नवयुवकों ने कमाने हेतु पास के एक बड़े शहर में जाने का निर्णय लिया और अगले ही दिन दोनों अपना खाना एवं कपड़े साथ में लेकर रवाना हुए।

आधी दूर ही पहुँचे थे कि उन्हें भूख लग गयी, तो वे दोनों खाने की तैयारी करने लगे। उसी समय एक थका-हारा पुरुष वहाँ से गुज़र रहा था। उन नवयुवकों ने उसकी हालत देख, उसे भी खाने के लिये आमन्त्रित किया। एक नौजवान जिसका नाम पञ्चम था, उसके पास पाँच रोटियाँ थीं तथा दूसरे मित्र त्रिदेव के पास तीन रोटियाँ थीं।

यह देख आगन्तुक ने कहा-“मुझे तो आप एक ही रोटी दे दें।” पर त्रिदेव ने कहा-“नहीं, सभी में बराबर बाँटेंगे।” आठ रोटियों को तीन लोगों में बाँटना असम्भव था। अतः सोचा कि प्रत्येक रोटी के तीन टुकड़े कर लिये जायें। इस प्रकार कुल 24 टुकड़े हुए और तीनों ने 8-8 टुकड़े खा लिये। तीनों प्रसन्न थे। आगन्तुक ने जाते समय उन मित्रों को चाँदी के कुछ सिक्के भेंट स्वरूप प्रदान किये और उन नौजवानों को धन्यवाद देते

हुए विदाई ली।

चाँदी के सिक्के 8 थे, गिनने के बाद पंचम ने कहा-“हम दोनों चार-चार सिक्के रख लेते हैं।” पर त्रिदेव ने कहा-“तुम्हारी पाँच रोटियाँ थी, अतः तुम पाँच रखो और मैं तीन रखूँगा।” इस पर पंचम सहमत नहीं हुआ और उन दोनों में इस पर बहस होने लगी। उसी समय एक सन्त महात्मा वहाँ से गुज़र रहे थे, तो दोनों मित्रों ने उनसे प्रार्थना की-“गुरुजी हम दोनों मित्र हैं, पर हम दोनों में एक बात को लेकर मतभेद है, आप हमारी समस्या का समाधान करें, ताकि निपटारा हो सके।” महात्मा ने चाँदी के आठों सिक्के अपने हाथ में लिये और विचारमग्न हो गये। कुछ समय पश्चात् उनको एक हल सूझा और उन्होंने दोनों मित्रों को हाथ आगे करने के लिए कहा, साथ ही उन दोनों से कह दिया कि मैं जो भी निर्णय करूँ, वह तुम्हें स्वीकार करना होगा।

तब दोनों मित्रों ने महात्माजी की बात पर हामी भर दी। अब निपटारे का समय हो गया था। महात्माजी ने एक सिक्का त्रिदेव के हाथ में रखा तथा शेष सात सिक्के पंचम के हाथ में दिये। दोनों मित्रों ने अपने वायदे के

अनुसार महात्माजी की बात को शिरोधार्य कर लिया और साथ में जिज्ञासा भी रखी कि आपके इस निर्णय के पीछे क्या आधार था। तब महात्मा जी ने उन्हें समझाया-“त्रिदेव के पास तीन रोटियाँ थी, उनके नौ हिस्से हुए, उसमें से आठ त्रिदेव ने इस्तेमाल कर लिये, अतः उसने एक टुकड़े का त्याग किया। जबकि पंचम के पास पाँच रोटियाँ थी जिनसे 15 टुकड़े हुए उनमें से आठ टुकड़ों को पंचम ने स्वयं के लिए उपयोग किया तथा सात टुकड़ों का त्याग किया। इसका मर्म यह है कि जिसने जितने टुकड़ों का त्याग किया उसको उतने सिक्के प्रदान किये गये।

दान में यह देखा जाता है कि कितना दिया, यह नहीं देखा जाता कि उसने अपने पास कितना रखा। जबकि त्याग में यह नहीं देखा जाता कि कितना दिया बल्कि उसने अपने पास कितना रखा। इससे हम समझ सकते हैं कि दान यदि देने का नाम है, तो त्याग स्वयं के पास नहीं रखने का, नहीं लेने का नाम है।

-स्री 345, हंसमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017
(राजस्थान)

नवयुग का आह्वान है

श्री मनमोहनचन्द्र बाफणा

जागो तुम प्रबुद्ध श्राविका, नव युग का आह्वान है, गुरु आज्ञा को अपना कर लो, वह संस्कार निर्माण है।।

देव गुरु की ज्ञान तरंगें, अब जगा रही है हमको। पाप मुक्ति का जीवन पाऊँ, रास्ता बता दो हमको, अवसर पाया मोती निपजे, मानव भव अभियान है।।

सेवा, सरलता, सहनशीलता, जीवन में शृङ्गार बनेंगे। उन्नत आचार-विचार, सबके भावों में बढ़ेंगे, अनन्त पुण्याई पाकर हमने, सद्गुरु पाये महान् हैं।।

पूज्य गुरुवर ने ही सबके, घट के दीपक को जलाया। ज्ञान क्रिया की दिव्य शक्ति का, मुक्ति पाने का मार्ग बताया,

दान शील की बढ़े भावना, निखरे अभिनव शान है।। संस्कारों का होय संरक्षण, तुम पर जिम्मेदारी सारी। ज्ञानामृत में कण-कण भर लो, ज्ञान खजाना हो भारी, श्राविका मण्डल धारे इसको, बहुत बड़ा वरदान है।।

श्रद्धा भक्ति संस्कारों से, स्वाध्याय संघ बढ़ना है। सेवा सास ससुर की होय, स्थानक में भी आगे है, मधुर वचन स्नेह दो सबको, करुणा हृदय में धारी है।।

भक्ति अटूट गुरु देवों पर, सदा समर्पण मन में हो। सामायिक-स्वाध्याय में बढ़कर, शास्त्र ज्ञान से भारी हो, व्रत-प्रत्याख्यान की भेंट, पाओ पूज्य गुरु भगवान ही हैं।।

-128/376, एच 2 ब्लॉक, जैन सदन, किंदवई नगर, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

अनमोल मोती (9)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

138. पाप को प्रकट कर, प्रायश्चित्त द्वारा उसे न दोहराने वाला ही निष्पाप बन सकता है।
139. शुभ करने के बाद शुभ को पचाने की ताकत होनी चाहिए, नहीं पचा तो वह शुभ भी अशुभ में परिवर्तित हो जायेगा।
140. कर्तव्य पक्ष की होली जलाने वाला, धर्म पक्ष की दिवाली कैसे मनायेगा ?
141. अशुभ से शुद्ध की ओर जाने के लिए शुभ का आलम्बन चाहिए होता है, लेकिन शुद्ध पाने के बाद शुभ स्वतः छूट जाता है। मैला वस्त्र (दूषित आत्मा) पुण्य (साबुन) मैल (पाप)। मैले वस्त्र को धोने पर मैल के साथ-साथ साबुन भी निकल ही जाता है।
142. कोई कुत्ते को लकड़ी से मारता है तो कुत्ता उस लकड़ी को पकड़ने के लिए दौड़ता है किन्तु शेर लकड़ी पर नहीं, बल्कि मारने वाले पर छलांग लगाता है। अज्ञानी निमित्त से युद्ध करता है और ज्ञानी उपादान से।
143. अच्छे कार्यों में मन लगाने के लिए अच्छे संस्कारों का होना आवश्यक है।
144. निःस्वार्थ भाव से की गई साधना से अर्जित पुण्य व्यक्ति के साथ छाया के रूप में चलता है।
145. श्रम में शर्म का अनुभव करना यानी पतन की शुरुआत है।
146. भवी : जैसे नारी सन्तान को जन्म देने में समर्थ। निकट भवी : जैसे नारी विवाह के पश्चात् जन्म देने में समर्थ। दूरातिदूर भवी : जैसे शीलवती विधवा नारी ..क्षमता है, पर साधन नहीं। अभवी : जैसे बाँझ महिला ..क्षमता ही नहीं है।
147. योग्यता के बिना योग्य पद मिलना अपने आप में अभिशाप है।
148. विवेक से अनुशासित होने वाला विवशता से अनुशासित नहीं होता।
149. हर साधक के लिए कुटुम्ब कसौटी है और प्रतिकूलता परीक्षा है।
150. स्वयं को जानो, स्वयं को स्वीकारो, स्वयं ही बन जाओ। जिसने स्वयं को जानकर स्वयं को स्वीकार किया वह अवश्य स्वयं बना है।
151. जैनधर्म निवृत्ति प्रधान है, प्रवृत्ति प्रधान भी है और अनासक्ति प्रधान तो है ही।
152. आधि, व्याधि और उपाधि पर विजय के लिए समाधि आवश्यक है।
153. भावों की निर्मलता क्रिया में निर्मलता अवश्य लाएगी, लेकिन क्रिया की निर्मलता भावों को निर्मल बना सके ...यह जरूरी नहीं है।
154. आत्मार्थी कभी दुःखी होता नहीं और कोई व्यक्ति स्वयं को दुःखी माने तो वह आत्मार्थी नहीं है।
155. संसार (लोक) दुःख का कारण नहीं, इसमें रचना-पचना दुःख का कारण है। यदि संसार दुःख का कारण हो तो सिद्ध भगवान भी संसार में ही हैं, उन्हें दुःख क्यों नहीं ?
156. सुख की प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि दुःख के अन्त के लिए पुरुषार्थ करना है। दुःख का अन्त यानी सुख का उदय है।
157. मिथ्यादृष्टि का पुण्य परम्परा से संसार का कारण तथा सम्यग्दृष्टि का पुण्य परम्परा से मोक्ष का कारण है।
158. अनन्त काल से जीव कषायों की अग्नि में जल रहा है, अब उस अग्नि को पापों का पेट्रोल डालकर बढ़ाना नहीं, बल्कि समता जल से बुझाना है।



कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

तत्त्वार्थसूत्र (भाग-1, 2)-रचनाकार-वाचकवर्य श्री उमास्वातिजी। हिन्दी-विवेचनकार-प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.। सम्पादक-पूज्य मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी महाराज। **प्रकाशक**-दिव्य सन्देश प्रकाशन, द्वारा श्री सुरेन्द्र जैन, ऑफिस नं. 304, तीसरी मंजिल, बे.व्यु. बिल्डिंग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुम्बई-400002, मो. 8484848451 (केवल व्हाट्सएप), **मूल्य प्रथम भाग-200/- रुपये। प्रथम संस्करण-2022, पृष्ठ-312 + 20 = 332 (कुल)। मूल्य द्वितीय भाग-200/- रुपये। प्रथम संस्करण-2022 पृष्ठ- 288 + 16 = 304 (कुल)। Website : Divyasandesh.online. प्राप्ति स्थान-(1) चेतन हसमुख लालजी मेहता, भायंदर (एम.एस.) मो. 9867058940 (2) प्रवीण गुरुजी, बेंगलोर-मो. 90368-10930 (3) राहुल वैद, दिल्ली-मो. 98103-53108 (4) चंदन एजेन्सी, मुम्बई-मो. 98203-03451**

तत्त्वार्थसूत्र के रचनाकार वाचकवर्य श्री उमास्वातिजी हैं। इस सूत्र का नाम तत्त्वार्थाधिगमसूत्र भी है और इसे मोक्षशास्त्र भी कहते हैं। जैन समाज के श्वेताम्बर और दिगम्बर सभी सम्प्रदाय इसको मानते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में मोक्षमार्ग का विस्तृत विवेचन किया गया है और संस्कृत में सारगर्भित होने से कण्ठस्थ करने योग्य हैं। इस ग्रन्थ के अध्ययन से सम्पूर्ण जैनदर्शन की संक्षेप में जानकारी हो जाती है। प्रस्तुत ग्रन्थ को रचनाकार ने दस अध्यायों में विभक्त किया है, जिनमें कुल 344 सूत्र हैं।

प्रथम अध्याय में कुल 35 सूत्र हैं, जिनमें मोक्षमार्ग बतलाते हुए सम्यग्ज्ञान का विस्तृत वर्णन है। सात तत्त्वों का वर्णन करते हुए पुण्य और पाप को आस्रव तत्त्व में शामिल किया गया है। द्वितीय अध्याय में जीव

तत्त्व का विस्तृत विवेचन 52 सूत्रों में किया है। तृतीय अध्याय में 18 सूत्रों में नारक, मनुष्य और तिर्यञ्च का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय में 53 सूत्रों में देवों का वर्णन किया है। पंचम अध्याय में 44 सूत्रों में अजीव तत्त्व का वर्णन है। षष्ठ अध्याय में आस्रव तत्त्व का 26 सूत्रों में वर्णन किया है। सप्तम अध्याय में व्रतों के स्वरूप और उनके अतिचारों का वर्णन 34 सूत्रों में किया है। अष्टम अध्याय में 26 सूत्रों में बन्ध तत्त्व का वर्णन है। नवम अध्याय में 49 सूत्रों में संवर और निर्जरा तत्त्व का स्वरूप बतलाया है। अन्तिम दशम अध्याय में मोक्षतत्त्व का वर्णन 7 सूत्रों में किया है।

हिन्दी विवेचनकार श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने प्रस्तुत सूत्र को 2 भागों में विभक्त किया है। प्रथम भाग में 1 से 5 अध्याय और द्वितीय भाग में 6 से 10 अध्याय हैं। प्रथम भाग में पुस्तक के प्रारम्भ में रचनाकार एवं लेखक का परिचय देते हुए ग्रन्थ की महिमा एवं पठनीयता प्रस्तुत की है। प्रत्येक अध्याय एवं विषय-वस्तु के अनुसार प्रारम्भ में अनुक्रमणिका दी गई है। प्रत्येक अध्याय में सूत्रों को मोटे अक्षरों में मुद्रित किया गया है और सूत्र की विषय-सामग्री के अनुसार ही मोटे अक्षरों में शीर्षक दिये गये हैं। प्रारम्भ में सूत्र का सामान्य अर्थ किया गया है। तत्पश्चात् विस्तृत विवेचन किया गया है। मुख्य-मुख्य बातों को मोटे अक्षरों में मुद्रित किया है, जो महत्त्वपूर्ण है। विषय को स्पष्ट करने और सरलतापूर्वक समझाने के लिए चार्ट, चित्रों एवं प्रश्नोत्तर-शैली का प्रयोग किया गया है, जो सरल एवं सुबोध है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में समस्त सूत्रों का समावेश करते हुए चार्ट के माध्यम से सुन्दर तरीके से विषय-सामग्री को प्रस्तुत किया गया है। कतिपय स्थानों पर चित्रों के माध्यम से विषय को स्पष्ट रूप से समझाया गया है। पुस्तक के द्वितीय भाग के अन्त में वाचकवर्य श्री उमास्वातिजी महाराज विरचित श्री तत्त्वार्थाधिगम सूत्र-सम्बन्ध कारिका दी गई है, जो 31 श्लोकों में है और अन्तिम

उपदेश रूप कारिका 32 श्लोकों में है तथा 6 श्लोकों में प्रशस्ति है। अन्त में मूल सूत्र दिये गये हैं, जो स्मरण करने एवं सन्दर्भ हेतु सुलभ हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के दोनों भागों को जिज्ञासु पाठकों को अवश्य पढ़ना चाहिए।

आदर्श जैन जीवन-पद्धति- लेखक-सम्पादक-त्रिलोकचन्द्र जैन। **संस्करण**- प्रथम, 2022, **पृष्ठ**-122 + 6 = 128, **प्राप्ति-स्थल**-37/67, रजतपथ, मध्यममार्ग, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान) मो. 96944-30826, 81144-30221, **मूल्य**- 200 रुपये। Email : nimitrohil@gmail.com, ISBN No. 978-93-58045-6-2

प्रस्तुत पुस्तक 'आदर्श जैन जीवन-पद्धति' में लेखक ने जीवन जीने के श्रेष्ठ सूत्र प्रस्तुत किये हैं। जैन साधु आदर्श जीवन की साक्षात् प्रतिमूर्ति होते हैं और श्रेष्ठ जीवन जीने का अभ्यास करने वाला जैन श्रावक होता है। जैन सिद्धान्तों को जीवन व्यवहार में किस प्रकार जी सकते हैं, उन सूत्रों का सरल भाषा में विवेचन पुस्तक में किया गया है। लेखक ने सर्वप्रथम अहिंसक जीवन-पद्धति का स्वरूप प्रस्तुत करते हुए छह बिन्दु प्रस्तुत किये हैं और आगमों के सन्दर्भ के साथ उनकी जीवनोपयोगी व्याख्या प्रस्तुत की है। तत्पश्चात् सत्यनिष्ठ, अचौर्यप्रधान, शील सदाचार-सम्पन्न और

अपरिग्रही जीवन-पद्धति का विभिन्न अध्यायों में विस्तार से हृदयग्राही एवं जीवन-निर्माणकारी सूत्रों से स्पष्ट तथा सहज सुबोध शैली में विवेचन किया है। प्रमुख सिद्धान्तों के विवेचन के साथ-साथ मुख्य-मुख्य प्रेरक एवं उद्बोधक वाक्यों को लालस्याही से रेखाङ्कित किया गया है, जो सहज में ही पाठक का ध्यान आकर्षित करते हैं। प्रत्येक विषय का स्पष्ट एवं विशद विवेचन किया गया है। पाठ के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची भी प्रस्तुत की है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अंग्रेजी में कोटेशन भी सटीक एवं स्मरणीय हैं।

पुस्तक में आगम-प्रधान आदर्श जीवन-पद्धति का तीन अध्यायों में विस्तार से वर्णन किया गया है। पुस्तक के बीच-बीच में सुन्दर एवं भाव प्रधान प्रेरक कविताएँ भी लेखक द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। 'जीवन प्रेरक दो लाइनें' अध्याय में स्वरचित प्रेरक एवं अनुकरणीय सुविचार दिये गये हैं। अन्त में 'जीवन प्रेरक मुक्तक' एवं 'जीना कितना यहाँ पर' कविता भी बोधप्रद एवं जीवन का रहस्य समझाने वाली है।

प्रस्तुत पुस्तक सभी श्रेणि के पाठकों के द्वारा पठनीय है और जीवन-निर्माण का मार्गदर्शन करते हुए सरल भाषा में अनुकरणीय सूत्र प्रस्तुत करती है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-

मेरी इच्छा

श्री विजेन्द्र जैन

बुरा किसी का कर ना पाऊँ,
प्रभो! इतनी-सी शक्ति दो,
रम जाऊँ मैं बस तुझमें,
इतनी मुझको भक्ति दो।

काया सुनहरी पाई मैंने,
काम किसी के आऊँ मैं,
सेवा करूँ मैं, सब जीवों की,
ऐसी दौलत पाऊँ मैं।

राग-द्वेष, कामादिक छूटे,
ऐसी मुझको बुद्धि दो,
भाव जगे मन में ऐसे,
प्रभो! मुझको विरक्ति दो।
भटक रहा हूँ कई जन्मों से
अब तो राह दिखा दो,
छूट जाऊँ इन मोह पाशों से,
कृपा इतनी बरसा दो।

-77/235, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-
302020 (राज.)

समाचार विविधा

पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यप्रवर का महामन्दिर चातुर्मास पश्चात् पावटा पदार्पण

60वें दीक्षा-दिवस पर सोल्लास तपाराधना

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा जोधपुर में विराजित हैं। महासतीवृन्द सिद्धान्तशाला पावटा में विराज रहे हैं।

पूज्य आचार्य भगवन्त जब से जोधपुर पधारे हैं, तब से अपूर्व धर्मोल्लास व्याप्त है। महामन्दिर चातुर्मास में, महामन्दिर में जाये जन्मे महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी, भावी आचार्यश्री की आचार्य भगवन्त के 60वें दीक्षा-दिवस हेतु प्रभावी प्रेरणा रही तथा अपूर्व तप-त्याग, धर्म-ध्यान, विविध तपस्याओं के अर्घ्य सन्त-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अर्पित किये। 30 अक्टूबर 2022 को ओसवाल समाज भवन (चातुर्मास स्थल) के विशाल प्राङ्गण में 60वें दीक्षा दिवस के पावन प्रसङ्ग पर विराट् धर्मसभा में उपस्थित सभी जिनधर्मावलम्बियों में श्रद्धा-भक्तिमय धर्मोल्लास व्याप्त था। सर्वप्रथम सविधि संगान के साथ 36 वन्दना से वातावरण भक्तिमय हो गया। लगभग 200 से अधिक बेले आदि विविध तपाराधना के अर्घ्य अर्पित किये गये।

30 अक्टूबर को धर्मसभा का शुभारम्भ श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने नमस्कार मन्त्र उच्चारण के साथ किया एवं अपने आराध्य के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ने 'बोलो बोलो जय बोलो, श्री हीराचन्द्रजी गुरुराज की जय बोलो' भजन से स्तुति की। जिससे धर्मसभा भक्ति-स्तुति भाव से सरोबार हो उठी। परमाराध्य आचार्य भगवन्त के संयम-जीवन की सौरभ से सुरभित चारित्रात्माओं ने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने गुरु हीरा को गुरु हस्ती की प्रतिकृति बताया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने गुरुचरणों में मोक्षमार्ग होना कहा तो महासती श्री मधुश्रीजी म.सा. ने कहा कि हम सभी सन्त-सतियों की साधना-आराधना, तपश्चर्या, धर्म-ध्यान आदि में गुरुकृपा हमारी शक्ति बनती है। महासती श्री कान्ताजी म.सा. ने आचार्य भगवन्त को त्याग, वैराग्य, गुणानुरागी एवं पञ्चाचार का पालन करने एवं करवाने वाला कहा तथा महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ने अनुभूतिपरक भाव व्यक्त कर कहा कि स्वास्थ्य कारणों से सूत विराजने की आज्ञा तथा हम सतीमण्डल की गुरुदर्शन की भावना पर व्यक्त गुरुवचनों एवं कृपातिशय से जोधपुर तक विचरण ससमाधि हुआ। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन्त गुरु हीरा, गुरुदेव श्री हस्ती की प्रतिकृति तो हैं ही, कुछ लोग आपको आचार्य तुलसी तुल्य, तो कुछ लोग आचार्य श्री आनन्दऋषि के तुल्य मानते हैं, आपकी वृत्ति-प्रवृत्ति में अनेकों महापुरुषों के सद्गुण समाये हुए हैं। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने पानी पीने गये दलदल में फँसे शेर तथा गाय के दृष्टान्त से भाव व्यक्त किये कि जैसे गाय को दलदल से उसका मालिक बचा लेता है तथा खुद को बिना मालिक जंगल का राजा कहने वाला शेर फँसा रह जाता है वैसे ही गुरु हीरा हमारे मालिक हैं-दलदल से निकालने वाले हैं। महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यश्री ने फरमाया कि सब सन्त-सतियों ने सब कुछ फरमा दिया है, इसलिये पुनरुक्ति न करते हुए कहना चाहता हूँ कि आचार्य भगवन्त की सकारात्मक सोच एक अच्छे जीवन के साथ संघ को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाती

है। गुरुदेव हम भक्तों को ज्ञानाराधन, तपाराधन और धर्मारधन में तो आगे बढ़ाते हैं ही, साथ ही चतुर्विध संघ को भी प्रगति पथ पर अग्रसर करते रहे हैं। सन्त-सतियों से अनेकानेक गुणों का वर्णन सुना है। उनमें से एक-एक गुण को जीवन-व्यवहार में उतारकर चरितार्थ करेंगे तो निश्चित रूप से आपका सुनना सफल होगा।

चातुर्मास में सराहनीय सेवाभाव—चातुर्मास के सेवा-प्रकल्पों में सभी सेवा करने हेतु लालायित रहे। जब जिसको अवसर मिला, अहोभाव से सेवा में संलग्न हो गया। आवास-निवास, भोजन, गोचरी सेवा, श्रमणोचित उपचार आदि में सभी की सेवाएँ आत्मभावपूर्वक एवं परस्पर सहयोगात्मक रहीं। सतत सेवा शृङ्खला में श्री मनमोहनजी कर्णावट, श्री शान्तिचन्दजी लोढ़ा, श्री मनीषजी लोढ़ा (सीनियर), श्री मनीषजी लोढ़ा (जूनियर), श्री उम्मेदराजजी लोढ़ा (राजाजी), श्री मिट्टूलालजी लोढ़ा, श्री अंकितजी लोढ़ा, श्री पदमजी रांका, श्री महावीरजी कोठारी, श्री रौनकजी डाकलिया, श्री सुभाषजी गुन्देचा, श्री जिनेन्द्रजी ओस्तवाल, श्री नवरतनजी गिड़िया, डॉ. राकेशजी मेहता, डॉ. अभिषेकजी तातेड़, डॉ. सचिनजी (फिजियोथैरेपिस्ट), ख्यातिनाम ऑस्टियोपैथी विशेषज्ञ डॉ. गोरधनजी पाराशर, श्री जितेन्द्रजी हुण्डीवाल, श्री चिरागजी सुराणा, श्री महेन्द्रजी कुम्भट, श्री अशोकजी कुम्भट, श्री लोकेशजी कुम्भट, श्री लोकेशजी सुपुत्र श्री पारसमलजी कुम्भट, श्री अमितजी लोढ़ा, श्री राहुलजी लोढ़ा, श्री रमेशजी भण्डारी, श्री गजेन्द्रजी भण्डारी, श्री कमलेशजी कोठारी, श्री राजेशजी कर्णावट, श्री दिलीपजी चौपड़ा, श्री नवनीतजी लोढ़ा, श्री महेन्द्रजी नाहर, श्री महेशजी भण्डारी एवं इनकी टीम के अनेकानेक भक्तों ने समर्पण भाव से सेवा की तथा समय-समय पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया, राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया सेवा सम्भाल एवं मार्गदर्शन प्राप्ति हेतु गुरुचरणों में आते रहे।

दीर्घकालिक संवर, दया, पौषध साधना (चातुर्मास में)—श्री महावीरजी लोढ़ा, श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, श्री महावीरजी ओस्तवाल, श्री लोकेशजी सुपुत्र श्री पारसमलजी कुम्भट, श्री इन्द्रचन्दजी गाँधी, श्री योगेशजी गाँधी, श्री मुन्नालालजी भण्डारी, श्री सुमेरजी बाघमार ने रात्रि-संवर, दयाव्रत एवं पौषध की साधना की तथा सतीमण्डल की सेवा में श्रीमती लीलाबाईजी धर्मपत्नी श्री अमरचन्दजी लोढ़ा, श्रीमती तुलसीबाईजी आदि ने कुछ दिन के अलावा अधिकांश रात्रि संवर आदि सेवाएँ दी।

चातुर्मासिक सम्पूर्णाहुति कार्यक्रम के पावन प्रसङ्ग पर धर्मसभा प्राङ्गण खचाखच भरा हुआ था। सभी जिनधर्मावलम्बियों के चेहरों पर भक्तिमय प्रेमाकुलता एवं श्रद्धाभाव झलक रहा था। सभी ने विनयभावपूर्वक वन्दना कर स्वास्थ्य समाधि की मंगलकामना की। धर्मसभा में सन्त-भगवन्तों ने धर्मसन्देश फरमाते हुए गुरुहस्ती के सामायिक-स्वाध्याय सन्देश की प्रेरणा के साथ गुरु हीरा के विशुद्ध सामायिक-प्रतिक्रमण-स्वाध्याय तथा साधना-आराधना धर्मस्थान में करने की प्रेरणा की। यथाशक्ति, यथारुचि, सभी श्रावक-श्राविका तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान, धर्मध्यान करेंगे, ऐसे मंगल भाव व्यक्त करते हुए चातुर्मास को सफल बनाने में किये गये तप-त्याग, धर्मध्यान आदि का उल्लेख करते हुए सभी ने खमतखामणा की।

श्रावकवर्ग की ओर से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अपने हृदयोद्गार काव्यात्मक लहजे में व्यक्त किये 'जिनशासन के दिव्यदिवाकर, महावीर शासन के वीर सेनानायक, कुशलवंश के कुशल सञ्चालक, जिन पर हम सबको है गुमान।' रत्नसंघ के देदीप्यमानरत्न, सिद्धान्तों पर हम्मीर हठ के समान अटल, भक्तजन जिनके समक्ष उपस्थित हैं कर-जोड़ (कजोड़ी), गुरुचरणों में विनय से नत-शोभा, शोभा की शोभा गुरु हस्ती-हीरा को जिन्होंने बनाया शासन पट्टधर, नर-नारी नहीं, 'महेन्द्र' भी जिनके चरणों में रहते नत, जिनशासन की ऐसी 'हीरक-मणि' के चरणों में हमारा सविनय, सश्रद्धा वन्दन। तत्पश्चात् जोधपुर संघाध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा का कण्ठ अवरुद्ध होने के कारण लिखित भावों का वाचन श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार ने किया—“आचार्य भगवन्त

एवं भावी आचार्यश्री ने स्वयं के सहित पाँच चातुर्मास जोधपुर को स्वीकृत करके असीम कृपा की एवं सभी जगह सन्त-सतीवृन्द ने जिनवाणी का वर्षण कर, प्रेरणा कर, साधना-आराधना, तपाराधना आदि धर्मचर्याओं में सबको आगे बढ़ाया। चहुँओर सन्त-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं ने मासखमण, सिद्धितप, अठाई एवं अन्य बड़ी तपस्याओं के साथ एकाशन, उपवास, आयम्बिल, नीवी, बेला, तेला आदि विविध तपाध्यर्घ्य प्रत्येक पावन प्रसङ्ग एवं पर्व तिथियों पर अर्पित किए तथा कर्म-निर्जरा की। सभी पाँचों चातुर्मासों में संयोजकों, कार्यकर्ताओं, दानदाताओं ने भरपूर सहयोग श्रद्धा, भक्ति, भावना एवं समर्पणपूर्वक अपनी सेवाएँ प्रदान कर सहकार किया। महामन्दिर, नेहरूपार्क, शक्तिनगर, हाउसिंगबोर्ड सभी चातुर्मासों में पूज्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यश्री तथा सभी सन्त-सतीवृन्द ने अनन्त अनन्त कृपा बरसायी। मैं सभी के प्राप्त सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। पुनश्च वन्दन, नमन एवं बारम्बार खमतखामणा करता हूँ।”

जोधपुर युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने स्वरचित भजन को गाकर अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये। अन्त में राष्ट्रीय संयुक्त महामन्त्री श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा जिन्होंने चार माह धर्मसभा में सञ्चालक दायित्व का अक्षुण्ण निर्वहन किया, ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

9 नवम्बर को प्रातःकाल विदाई की बेला के अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं का अपारजन समूह उमड़ पड़ा। सभी सन्त-सतीवृन्द ने आचार्य भगवन्त के पावन श्रीचरणों में विधिवत् वन्दन-नमन कर मंगल पाठ श्रवण किया एवं महामन्दिर से प्रथम विहार कर रैनबो हाउस (भाण्डावत-निवास) विराजे। वहाँ से पुनः 9.30 बजे वहाँ से विहार कर पावटा सामायिक-स्वाध्याय भवन में पदार्पण कर विराजित हैं।

पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में परम श्रद्धेय ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. मुनिमण्डल सहित विचरण करते हुए पधारे। दोनों महापुरुषों का सन्त-समागम सौहार्दपूर्ण, परस्पर यथोचित वन्दन-नमन, सुख-साता, स्वास्थ्य-समाधि पृच्छा एवं खमतखामणा के हृदयोद्गारों के साथ हृदय को उल्लसित करने वाला रहा।

सन्त-सतीवृन्द का आवागमन-प्रथम विहार के उपरान्त गुरु-आज्ञा अनुसरण कर श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-5 ने महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के मासखमण के पूर पर चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पधारने हेतु एवं जोधपुर के उपनगरों में विचरण हेतु विहार किया एवं भावी आचार्यश्री भी मासखमण पूर के पावन प्रसङ्ग पर 9 किलोमीटर विहार कर हाउसिंग बोर्ड गये। पुनः गुरुसेवा में 9 किलोमीटर का विहार कर दोपहर में आये। तत्पश्चात् व्याख्यात्री महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा का दर्शनार्थ गुरुचरणों में आवागमन रहा तथा तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. मुनिमण्डल सहित पावन पदार्पण कर पावटा विराजे। आचार्य भगवन्त की सन्निधि का लाभ लेकर अभी जोधपुर के उपनगरों में विचरण कर रहे हैं।

महामन्दिर चातुर्मास पूर्ण होने के उपरान्त 9 नवम्बर से पावटा-स्थानक में प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी आदि सभी दैनिक धर्मचर्याएँ पूर्ववत् चल रही हैं, जिनमें सश्रद्धा, धर्मरुचिपूर्वक भरपूर उपस्थिति के साथ श्रद्धालुओं एवं श्रीसंघों का दर्शनार्थ एवं विनति हेतु अनवरत आवागमन बना हुआ है। लासूर स्टेशन से विधायक सुश्रावक श्री प्रशान्तजी बम्ब गुरुचरणों में आये।

संघ की रीति-नीति के अनुसार जोधपुर श्री संघ के अनुरूप सुन्दर, सुव्यवस्थित, आवास-निवास, भोजन

व्यवस्था, सतत सेवा-सम्भाल आतिथ्यभावपूर्वक सुचारु है एवं पावटा क्षेत्रवासी प्राप्त सेवा-अवसर तथा धर्मलाभ से अनुगृहीत हैं।

आजीवन शीलव्रत धारकों की सूची (26/10/2021 से 09/11/2022)

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की शीलव्रत के खन्ध कराने की प्रभावी प्रेरणा रहती है। गत 26 अक्टूबर, 2021 से 9 नवम्बर, 2022 तक लगभग एक साल में 56 सुश्रावकों ने सपत्नीक शीलव्रत खन्ध के प्रत्याख्यान आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से ग्रहण किये हैं। उनकी नामावली प्रस्तुत है-

1. श्री प्रकाशचन्दजी चोरड़िया-इच्छापुर/पीपाड़, 2. श्री राकेश कुमारजी गोलेच्छा-के.के. नगर चेन्नई, 3. श्री अनोप कुमार बी. बाघमार-कोसाणा, 4. श्री नवलकिशोरजी जैन (पोरवाल)-नवसारी, 5. श्री मनीषजी जैन (40 वर्ष)-कोटा/मुम्बई, 6. श्री महेन्द्रजी कुम्भट-महामन्दिर जोधपुर/मुम्बई, 7. श्री कान्तिलालजी सीयाल-सोजत रोड़/बैंगलूरु, 8. श्री शान्तिलालजी कांकरिया-भोपालगढ़/दुर्ग, 9. श्री चेतनजी झंवर-बल्लारी, 10. श्री पारसमलजी चौपड़ा-जोधपुर, 11. श्री रमेशचन्दजी चौधरी-मैसूर, 12. श्री महेन्द्रजी जैन (पोरवाल)-अलीगढ़-रामपुरा, 13. श्री महावीरजी लुंकड़-बीजापुर, 14. श्री कुशलचन्दजी जरगड़-जयपुर, 15. श्री निहालजी साण्ड-विजयनगर, 16. श्री छगनलालजी लोढ़ा-पाली, 17. श्री विमल कुमारजी जैन-कोटा, 18. श्री कैलाशमलजी गांग-हनुवन्त नगर बैंगलूरु, 19. श्री रतनलालजी लूणिया-पीपाड़सिटी, 20. श्री प्रदीप कुमारजी मोदी-जयपुर, 21. श्री महावीरचन्दजी कांठेड़-हैदराबाद, 22. श्री शान्तिलालजी संचेती-सूरत, 23. श्री जितेशजी जैन-अम्बाला-पंजाब, 24. श्री नेमीचन्दजी डोसी-मेड़ता, 25. श्री गणपतजी भण्डारी (मेड़ता वाले)-वापी, 26. श्री कानारामजी जाट-पीपाड़, 27. श्री नारायणसिंहजी राजपूत-दांतीवाड़ा, 28. श्री जालमसिंहजी राजपूत-दांतीवाड़ा, 29. श्री चन्दनसिंहजी राजपूत-दांतीवाड़ा, 30. श्री सुनीलजी नाहर-सूरत, 31. श्री गौतमजी बोहरा-ब्यावर, 32. श्री रतनलालजी बोथरा-हीरादेसर/जोधपुर, 33. श्री बच्चूलालजी जैन (हिण्डौन वाले)-जयपुर, 34. श्री कमलपतराजजी भण्डारी-जोधपुर/चेन्नई, 35. श्री कनकराजजी लोढ़ा-महामन्दिर-जोधपुर (एकाकी), 36. श्री धनपतराजजी भंशाली, कलकत्ता, 37. श्री पारसमलजी कोठारी-महामन्दिर जोधपुर, 38. श्री ज्ञानचन्दजी बाफणा-महामन्दिर जोधपुर, 39. श्री मनोजजी सिसोदिया-नंदुरबार, 40. श्री देवराजजी गोलेच्छा-तिरपुर, 41. श्री राजेन्द्रजी धारीवाल-रामेश्वर नगर जोधपुर, 42. श्री निर्मल कुमारजी बाघमार-जबलपुर, 43. श्री गिर्राजजी जैन-कोटा, 44. श्री पारसमलजी अग्रवाल-जयपुर, 45. श्री प्रवीणजी बाँठिया-पुणे, 46. श्री चन्द्रशेखरजी लोढ़ा-महामन्दिर जोधपुर, 47. श्री अमितजी आँचलिया (40 वर्ष)-शौरापुर, 48. श्री मनोहरजी गादिया-बैंगलूरु, 49. श्री रितेशजी बोथरा (42 वर्ष)-जयपुर, 50. श्री पारसमलजी चोरड़िया-बैंगलूरु, 51. श्री महावीरजी झामड़-भुवाल/चेन्नई, 52. श्री निर्मलजी वेदमुथा-सैदापेट चेन्नई, 53. श्री अशोकजी भण्डारी-चेन्नई, 54. प्रकाशचन्दजी नाहर-भीलवाड़ा, 55. श्री राजेन्द्रजी मुथा-उमरगाँव, 56. श्री रणजीतजी लोढ़ा-महामन्दिर जोधपुर।

-गिर्राज जैन

सन्तप्रवरों के चातुर्मासों में धर्मसाधना एवं तपस्या का आकर्षण

मदनगंज-किशनगढ़-मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 चातुर्मास की पूर्णता के पश्चात् पहले दिन विहार कर शहर के एक स्थानक में पधारे। सन्तों के विहार से मदनगंज-किशनगढ़वासी विरह से मायूस जरूर थे। मगर मन में सन्तुष्टि थी कि हमने सन्तों से धर्मसंस्कारों के नाम पर बहुत कुछ पाया। तीनों सन्त विहार के क्रम में आगे बढ़ते हुए अजमेर पधारे, जहाँ विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा दर्शनों को उत्सुक थे। यहाँ अजमेर में दो-तीन दिन के अल्प प्रवास में भी स्थानीय लोगों ने अपूर्व उत्साह का परिचय दिया

एवं प्रवचन में तो पर्युषण जैसा माहौल का लोगों को अहसास हो रहा था, इस तरह तीनों सन्त संघनायक आचार्यप्रवर के संकेतानुसार विहार कर पुष्कर, थाँवला, भैरूँदा, मेवड़ा आदि मध्यवर्ती गाँवों को फरसते हुए मेड़ता पधारे। मेड़ता में भले ही तीन दिन रुकना हुआ, मगर यहाँ की गुरुभक्ति, धर्मरुचि हमेशा से बेजोड़ रही। यहाँ से विहार कर गोटेन होते हुए जोधपुर पधारने की सम्भावना लगती है।

-प्रमोद मोदी

प्रताप नगर जयपुर-सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म. सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की आराधना का क्रम अबाध रूप से गतिशील रहा। 1 नवम्बर को प्रवचन से पूर्व 'उववाईसूत्र की 22 गाथाओं' का मूल स्वाध्याय करवाया गया। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा चातुर्मास में फरमाये 114 प्रवचनों पर आधारित प्रवचन पुनरावर्तन शिविर हुआ। संघ द्वारा तैयार किये गये प्रश्न-पत्रों को श्रावक-श्राविकाओं ने हल किया तथा मुनि श्री से जिज्ञासाओं का समाधान भी पाया।

वरिष्ठ सुश्रावक श्री प्रेमचन्दजी जैन (उनियारा वाले) का चौविहार संलेखना-संधारा सिद्ध हुआ। 1 नवम्बर को जैन स्थानक प्रताप नगर में श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा द्वारा चेतन अवस्था देखकर सभी की स्वीकृति मिलने पर विधिवत् चौविहार संधारे के प्रत्याख्यान कराये गये। 3 नवम्बर को संलेखना-संधारा सायं 4.22 बजे सीझ गया। 4 नवम्बर को दोपहर 2-3 बजे स्थानक में गुणानुवाद सभा में तीनों सन्तरत्न ने समाधिमरण का वृत्तान्त और शाश्वत सत्य बोधपरक प्रवचन फरमाकर धर्म में आगे बढ़ने की प्रेरणा की।

रविवारीय कक्षा में 6 नवम्बर को 'वृद्ध जन सेवा-टाइम बैंक ऑफ इण्डिया' विषय पर श्री प्रबोधचन्दजी जैन, सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबन्धक, पंजाब नेशनल बैंक एवं संस्थापक-टाइम बैंक ऑफ इण्डिया ने सेवा कार्य करने में समय सञ्चित करने का अपना वक्तव्य प्रश्नोत्तर रूप में रखा। 8 नवम्बर को भावाभिव्यक्ति के रूप में शाश्वत, स्पष्ट, गर्विता, मिहिका आदि बच्चों ने बचपन में ही स्वयं स्वीकार किये गये जीवन मूल्यों को प्रकट किया। चातुर्मासिक उपलब्धियों पर भावाभिव्यक्ति अनेक श्रावक-श्राविकागण द्वारा की गई। अन्त में संस्था के मन्त्री श्री ऋषभजी जैन ने सभी से क्षमायाचना की। कार्तिक चौमासी के उपलक्ष्य में अनेक युवाओं ने एक वर्ष के लिए शीलव्रत, प्रतिदिन धर्म स्थान पर आगम स्वाध्याय, प्रतिलेखना, रात्रि-भोजन त्याग, जर्मीकन्द-त्याग आदि के नियम लेकर एवं संघ के द्वारा एक वर्ष के लिए आयम्बिल की लड़ी जारी रखने के प्रत्याख्यान द्वारा सन्तों को बधाई भेंट की। 9 नवम्बर को सन्तमण्डल विहार करके श्री नरेशचन्दजी योगेश कुमारजी जैन के आवास पर पधारे। लगभग 500 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक पोशाक में संवर के साथ विहार कराया।

सन्त मण्डल जयपुर के उपनगरों में विहार कर क्रमशः कुंदन नगर सांगानेर, केसर चौराहा इस्कॉन रोड, जैन स्थानक राधा निकुंज, पटेल मार्ग मानसरोवर, जैन स्थानक महारानी फार्म, जैन स्थानक महावीर नगर, रतन स्वाध्याय भवन, तीन मूर्ति सर्किल, लाल भवन चौड़ा रास्ता, महावीर भवन आदर्श नगर, बापूनगर, होते हुए जैन स्थानक महावीर नगर में विराज रहे हैं।

-ऋषभ कुमार जैन, मन्त्री

महासतीवृन्द के चातुर्मासों में धर्मसाधना में पूज्य आचार्यप्रवर के 60वें दीक्षा-दिवस पर तप-त्याग

सरवाड़ (अजमेर)- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म. सा. आदि ठाणा-3 का मंगलमय चातुर्मास त्याग-तप एवं धर्मध्यान के साथ सम्पन्न हुआ। महासतियाँजी म.सा. यहाँ से 9 नवम्बर को विहार कर 13 नवम्बर को सामायिक-स्वाध्याय भवन पुष्कर रोड़, अजमेर पधार गए हैं। दीपावली पर भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक एकाशन, उपवास, बेले एवं 7 तले तप की आराधना के साथ मनाया गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा-दिवस पर 28, 29 एवं 30 अक्टूबर को तीन दिन तक तप-त्याग-दया की

आराधना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 60 से अधिक एकाशन, 7 उपवास, 7 बेले, 2 तेले के साथ तीन दिन तक 11-11 सामायिक अच्छी संख्या में सम्पन्न हुए। महासती मण्डल ने आचार्य भगवन्त के जीवन वैराग्य से लेकर वर्तमान जीवन तक के कई प्रसङ्गों के माध्यम से लगातार तीन दिनों तक उनके प्रेरणादायी जीवन की झाँकी प्रस्तुत की। 30 अक्टूबर को मध्याह्न में पहली बार गुरुभक्ति का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें महासती मण्डल एवं कई भाई-बहिनों ने भाव-विभोर होकर गुरु-भक्ति का अनूठा रूप प्रस्तुत किया। चातुर्मास का अन्तिम चरण भी त्याग-तपस्या, धर्माराधना के साथ सम्पन्न हुआ। चातुर्मास की विदाई पर भी 2 तेले, 7 उपवास एवं श्रावक-श्राविकाओं में 7-8 नवम्बर को 51 संवर की आराधना की गयी। संघमन्त्री द्वारा आचार्य भगवन्त एवं महासती मण्डल के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त कर आभार प्रकट किया गया एवं चातुर्मास के दौरान हुई अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना की गयी।

-वीरेन्द्र कक्कड़, मन्त्री

हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 का चातुर्मास धर्मध्यान एवं तप-आराधना के साथ सम्पन्न हुआ। 30 अक्टूबर को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा-दिवस को बेले की तपस्या के आह्वान के साथ-साथ उपवास, आयम्बिल, एकाशन एवं तीन-तीन सामायिक की आराधना के साथ मनाया गया। महासती मण्डल ने आचार्य भगवन्त के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए अनेक गुणों का गुणगान किया। चातुर्मास प्रारम्भ से लेकर महासती मण्डल में 3 मासक्षण सम्पन्न हुए। चातुर्मास के अन्त में व्याख्यात्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने भी तपस्या प्रारम्भ की। 8 नवम्बर को चातुर्मास समापन दिवस पर श्रावक-श्राविकाओं में विशेष धर्माराधना हुई। प्रवचन में महासती मण्डल ने फरमाया कि आचार्य भगवन्त ने महती कृपा कर हाउसिंगबोर्ड क्षेत्र में यह चातुर्मास प्रदान किया, जिसमें सभी श्रावक-श्राविकाओं ने धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप के साथ पुरुषार्थ किया है। श्राविका मण्डल ने गीतिका प्रस्तुत की। श्रावक-श्राविकाओं ने अपने विचार तथा भजन प्रस्तुत किए। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया ने आचार्य भगवन्त का आभार व्यक्त करते हुए महासती मण्डल से चातुर्मासिक क्षमायाचना करते हुए उनका आभार प्रकट किया तथा सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया।

9 नवम्बर को महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 विहार कर श्याम नगर, पाल लिंक रोड़ स्थित श्री महावीरजी रेड एवं श्री जितेन्द्रजी संचेती के मकान पर पधारे। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 हाउसिंग बोर्ड स्थानक में ही विराजे। 12 नवम्बर को विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्याम नगर पधारे। 14 नवम्बर को विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-10 हाउसिंग बोर्ड स्थानक पधारे। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के दीर्घ तपस्या के अवसर पर आचार्य भगवन्त ने कृपा करते हुए श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा आदि ठाणा-5 को हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र की ओर विहार करवाया। मासक्षण पूरे के अवसर पर 14 नवम्बर को भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. महती कृपा कर आचार्य भगवन्त की आज्ञा लेकर स्वयं चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पधारे। भावी आचार्यप्रवर आदि ठाणा-7 एवं महासती मण्डल ठाणा-16 के सान्निध्य में प्रवचन सभा का नजारा मानो पर्युषण महापर्व के दिनों जैसा प्रतीत हुआ। सन्त मण्डल तथा महासती मण्डल ने तपस्या की अनुमोदनार्थ आशीर्वचन प्रदान किए। -धनपत सेठिया, महामन्त्री

नागपुर- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 का 2022 का चातुर्मास उपलब्धियों से भरा हुआ अति उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। नागपुर श्रीसंघ के इतिहास में पहली बार चौबीस तीर्थङ्कर की आराधना चातुर्मास के पहले दिवस से प्रारम्भ हो गई इस आराधना में लगभग 26 श्राविकाओं ने 24 दिनों तक

स्थानक परिसर में दिन-रात तप-जप किया। सभी तपस्वियों का सम्मान श्रीसंघ ने समापन दिवस पर किया।

चातुर्मास के दौरान 3 मासखमण, 15, 11, 10, 9 की कई तपस्याएँ, सैकड़ों अठाई एवं तेला, एकाशन, आयम्बिल, नीवी की लड़ी ऐसे अनेक तप महासतियाँजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुए। चातुर्मास में प्रातःकाल की कक्षा, प्रवचन, दोपहर की कक्षा में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही, संघ के इतिहास में यह सफलतम चातुर्मास में से एक रहा, ऐसा सभी श्रावक-श्राविकाओं का कहना है। महासतियाँजी ने अपने सरल, हँसमुख स्वभाव एवं ज्ञान-ध्यान के कारण बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ धर्म से जुड़ने लगे एवं सभी का एक ही कहना था कि इतनी सरल महासतियाँजी म.सा. हमने नहीं देखीं। पूरा चातुर्मास संयोजक श्री मनोजजी बोहरा, सह-संयोजक श्री महेन्द्रजी मुणोत के देखरेख में हुआ एवं संघ के पदाधिकारियों का भरपूर सहयोग रहा। चातुर्मास के दौरान 15 सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए। चातुर्मास के दौरान 44 दिवसीय सिद्धितप एकाशन की आराधना हुई, इसमें लगभग 38 लोगों ने भाग लिया तथा अविवाहित बालिका शिविर में पूरे महाराष्ट्र से लगभग 110 बालिकाओं ने तीन दिवसीय शिविर में भाग लिया।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 60वाँ दीक्षा दिवस दया, एकाशन के रूप में मनाया गया। सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। चातुर्मास के अन्तिम दिवस पर महासतियाँजी के चातुर्मासिक विहार में लगभग 400-500 श्रावक-श्राविकाओं ने अगले विहार स्थल तक विहार करवाया। महासतियाँजी म.सा. नागपुर के सभी उपनगरों को फरसते हुए वर्धा की ओर विहार कर रहे हैं। चातुर्मास से विहार तक श्री शीतलजी सुराणा, श्री मनोजजी बोहरा, श्री महेन्द्रजी मुणोत का बहुत सहयोग रहा है।

-मनोज बोहरा, संयोजक

कोयम्बटूर- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा-5 का 2022 का कोयम्बटूर चातुर्मास अति मंगलकारी रहा। यह संघ का पहला ऐसा चातुर्मास है जो संगठित रूप से सौहार्दपूर्वक निर्विघ्न एवं निर्विवाद सम्पन्न हुआ। यहाँ चार माह तक सुदूर स्थानों से निरन्तर श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन बना रहा। संघ ने हर्षित मन से आगन्तुकों की सेवा का भरपूर लाभ लिया। सभी पर्व तिथियाँ तप-त्यागपूर्वक मनाई गईं। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के 60वें दीक्षा-दिवस पर श्रावक-श्राविकाओं ने गुरु-गुणगान कर तीन से लेकर ग्यारह सामायिक तक, दया, उपवास, तेला, अठाई, नौ आदि तप की भेंट अर्पण की। चातुर्मास काल में कई अठाइयाँ, ग्यारह, पन्द्रह, सोलह, दो मासखमण, नवरंगी, पंचरंगी, धर्मचक्र, 350 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा ओली पर्व पर नौ दिन तक नीवी के आयम्बिल, 100 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 49 दिवस तक लगातार एकाशन, चार माह तक एकान्तर उपवास, 108 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 108 पुच्छिसुण का स्वाध्याय, 108 लोगस्स और 108 नमोत्थुण के जाप हुए। अष्ट, सोलह, चौबीस, पच्चीस, पैंसठ, सत्तर प्रहर के पौषध-संवर का ठाट लगा रहा। महिला मंडल ने थोकड़ों आदि का अध्ययन कर कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया। बालक-बालिकाओं को प्रति रविवार विशेष कक्षाओं के माध्यम से अध्ययन करवाया गया। चातुर्मास में सामूहिक दया एवं तेले का त्रिदिवसीय कार्यक्रम कई बार हुआ। शरद पूर्णिमा के अवसर पर कई श्रावक-श्राविकाओं ने रात्रि में 15 सामायिक की। चातुर्मास के दौरान सेलम, ईरोड, तिरपुर, चेन्नई, बेंगलोर आदि कई क्षेत्रों से दर्शनार्थी पधरें और शेखे काल की विनति की।

-सुनील हींगड़, सचिव

मोजत रोड़- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के मंगलमय चातुर्मास में तप-त्याग, धर्म-ध्यान का निरन्तर ठाट लगा रहा। एकाशन, आयम्बिल, नीवी, उपवास, तेला, 108 वन्दना एवं संवर

आदि की लड़ियाँ निरन्तर पहली बार चली। पर्युषण में तपस्या की लड़ी लग गई। आठ दिन सिद्धिपद आराधना, अन्तगडसूत्र पर परीक्षा, सामूहिक नमस्कार मन्त्र का जाप, अलग-अलग विषयों पर प्रतियोगिताएँ चली। जैन-जैनेतर भाइयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अब तक उपवास, बेला, तेला, चौला, पचौला, छह, अठाई, नौ, ग्यारह तक भी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। सिद्धि तप, पचरंगी, भिक्षु दया, भाइयों द्वारा संवर के 11 मासखमण, भाई-बहनों द्वारा एकाशन के 15 मासखमण, तुलसी भाई सिन्धी द्वारा पोरसी के 4 मासखमण सम्पन्न हुए।

- कुशलचन्द गुदेचा, मंत्री

हिण्डौनसिटी- सेवाभावी व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-6 के चातुर्मास प्रारम्भ से ही तेला, उपवास, आयम्बिल, नीवी की लड़ी चलती रही। पर्युषण पर्व पूर्ण आध्यात्मिक गतिविधियों से मनाया गया। 30 अक्टूबर को आचार्य भगवन्त का 60वाँ दीक्षा-दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। लगभग 60 श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, 5-5 सामायिक, रात्रि-प्रतिक्रमण एवं संवर किये। महासती मण्डल एवं श्रावकों ने आचार्यश्री के आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके स्वस्थ एवं सुदीर्घ जीवन की मंगल-भावना की। चातुर्मास समापन कार्यक्रम 8 नवम्बर को आयोजित हुआ, जिसमें खेड़ली, मण्डावर, नदबई, महवा, फाजिलाबाद, बरगमा, गंगापुर, भरतपुर आदि स्थानों से श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। महासती मण्डल ने लोकाशाह के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला। अन्त में संघ अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन ने बाहर से पधारे सभी का आभार व्यक्त किया तथा महासती मण्डल से चातुर्मास काल में हुई अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना की। समापन कार्यक्रम में लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। 9 नवम्बर को महासती मण्डल का विहार लगभग 8.30 बजे बरगमा रोड़, हिण्डौनसिटी में हुआ। महासती मण्डल का विहार पल्लीवाल क्षेत्र में चल रहा है।

- प्रवीण जैन, मन्त्री

ऊटी- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-4 का मंगलमय चातुर्मास तप-त्याग एवं साधना-आराधना के साथ सम्पन्न हुआ। 30 अक्टूबर को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में श्रीमती मंगलाबाईजी कटारिया के 36, श्रीमती दीपिकाजी बोहरा के 31, श्री ललितकुमारजी रूणवाल के 31 एवं 11, 9, 8 की तपस्याएँ, सांकली तेला एवं उपवास-एकाशन के सिद्धि तप की तपस्या सम्पन्न हुई। स्थानीय संघ के सदस्यों और विभिन्न क्षेत्रों से पधारे हुए साधर्मी बन्धुओं ने महासती श्री रुचिताजी म.सा. के दर्शन, वन्दन एवं 3 सामायिक के संकल्प के साथ जिनवाणी श्रवण का लाभ लिया। महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा., महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. एवं महासती श्री रचनाश्रीजी म.सा ने आचार्य भगवन्त के गुणगान किये। महासतीजी श्री रुचिताजी म.सा ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सभा को व्यसनमुक्ति के लिए प्रेरित किया। श्री माँगीलालजी-श्रीमती विमलाबाईजी कर्नावट, श्री मोतीलालजी-श्रीमती सविताबाईजी कटारिया, श्री रतनचन्दजी-श्रीमती सन्ध्याबाईजी कटारिया एवं श्री बालचन्दजी-श्रीमती सरलाबाईजी बोथरा ने शीलव्रत के प्रत्याख्यान लिए। संघ अध्यक्ष श्री हीरालालजी बोथरा ने अपने भाव व्यक्त किए एवं श्री भेरूदानजी लुणावत ने कार्यक्रम का सञ्चालन किया।

- जयचन्द कोटड़िया, मन्त्री

बजरिया, सवाई माधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-8 का स्मरणीय चातुर्मास सामायिक स्वाध्याय भवन, इन्दिरा कॉलोनी में ज्ञानाराधना, तपाराधना एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों के साथ पूर्ण हुआ। इस चातुर्मास में सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, समकित के 67 बोल, गति-आगति, कर्मग्रन्थ भाग 1-6 तक आदि का विशेष रूप से श्रावक-श्राविकाओं ने अध्ययन किया, जो एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। 'हम आगम अध्येता बने' में नन्दीसूत्र आगम कण्ठस्थ कर बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने पुरुषार्थ किया है, जो प्रमोद का विषय है। जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग पुस्तक भाग 1 से 40 तक की परीक्षा प्रत्येक पक्ष में पाँच पुस्तकों की हुई, जैन

इतिहास के इच्छुकों के लिए यह सुनहरा अवसर रहा। प्रश्न मञ्च के माध्यम से प्रतियोगिताएँ हुईं। सभी स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। नवीन ज्ञानार्जन, अठाई एवं अधिक तपस्या करने वाले तपस्वी श्रावक-श्राविकाओं को प्रदत्त स्मृति-चिह्नों के लाभार्थी श्री रतनलालजी, रविकान्तजी, विजयकान्तजी जैन बजरिया रहे। पुरस्कारों का वितरण श्री विनोदकुमारजी जैन, जिला संयोजक, शान्ति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ, सवाई माधोपुर के कर कमलों से किया गया। चातुर्मास समापन प्रसङ्ग पर श्रीमती मीनाक्षीजी पवन कुमारजी जैन (अलीगढ़ वाले), महावीर नगर ने 31 दिवस मासखमण तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। शाखा पदाधिकारियों और वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं द्वारा तपस्विनी श्रीमती मीनाक्षीजी को अभिनन्दन-पत्र भेंट किया। श्री जैन रत्न संघ हितैषी श्रावक संघ शाखा बजरिया के अध्यक्ष श्री मुकेश कुमारजी जैन पान वालों, संरक्षक श्री गणपतलालजी जैन, शाखा मन्त्री श्री पदमचन्द्रजी जैन गोटेवाला, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश मुकुलजी जैन ने इस स्मरणीय चातुर्मास की सफलता के लिए गुरुदेव के चरणों में कृतज्ञता प्रकट कर क्षेत्र के श्रीसंघों एवं श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आभार प्रकट किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती रजनीजी जैन गोटेवाला ने संवर, पौषध, एकाशन, आयम्बिल, उपवास एवं तेले की लड़ी के लिए श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता के लिए धन्यवाद दिया। शाखा अध्यक्ष ने सेवाभावी सुश्रावक श्री धनसुरेशजी जैन की सेवा की मुक्त कण्ठ से सराहना की। चातुर्मासिक विहार ओम टॉवर, टोंक रोड़ पर हुआ। 10 नवम्बर को ओम टॉवर, टोंक रोड़ से विहार कर महासती मण्डल का महावीर नगर स्थित रतन गंगा साधना-भवन में पधारे। महावीर नगर से आलनपुर, सामायिक-स्वाध्याय भवन, आवासन मण्डल, महावीर भवन-शहर सवाई माधोपुर, आदर्श नगर एवं बजरिया में प्रवचन किया। तृतीय बार मासखमण तपस्या करने वाली वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान से सम्मानित श्रीमती प्रियदर्शना राजेन्द्रजी जैन चौधरी, आवासन मण्डल का श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल शाखा महावीर नगर तथा शाखा आवासन मण्डल की ओर से अभिनन्दन किया गया। आलनपुर में अजैन दम्पती श्री बाबूलालजी ने सपत्नीक शीलव्रत के नियम ग्रहण किये। महासतियाँजी म.सा. विचरण करके जीनापुर, कुशतला, पचाला, चौरु, चांपोलाई होते हुए अलीगढ़-रामपुरा पधारे हैं।

-पदमचन्द्र जैन गोटेवाला, शाखा मन्त्री

प्राकृत भाषा : 'इतिहास और सम्भावनाएँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

संघ शास्ता, शासन प्रभावक श्री सुदर्शनलालजी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में 28-30 अक्टूबर, 2022 को रोहतक में बहुश्रुत पूज्य श्री जयमुनिजी म.सा., श्री सत्यप्रकाशजी म.सा. की सन्निधि में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें देश के लगभग 30 विद्वानों ने प्राकृत भाषा के सन्दर्भ में शोधपत्र प्रस्तुत किये। संगोष्ठी का आयोजन गुरु सुदर्शन जन्मशती वर्ष केन्द्रीय समिति, श्री एस.एस.जैन सभा रोहतक एवं श्रुत रत्नाकर (अध्ययन केन्द्र) अहमदाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। प्रसिद्ध विद्वान् जितेन्द्र बी. शाह, अहमदाबाद के संयोजन में आयोजित इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. राजवीर सिंह, कुलपति-महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक ने मुख्य-अतिथि के रूप में तथा प्रो. आर.के. मित्तल, कुलपति-सी. वी. एल. विश्वविद्यालय, भिवानी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्बोधित किया। संगोष्ठी में जिनवाणी के प्रधान सम्पादक प्रो. धर्मचन्द्रजी जैन ने 'आधुनिक युग में रचित प्राकृत साहित्य और व्याकरण ग्रन्थ' शोधपत्र के अन्तर्गत आचार्य उमेशमुनिजी, आचार्य घासीलालजी, शतावधानी रत्नचन्द्रजी, आचार्य सुनीलसागरजी, मुनि प्रणम्यसागरजी, मुनि विमलकुमारजी, साध्वी कंचनकुमारीजी, डॉ. उदयचन्द्रजी आदि के ग्रन्थों पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी में प्रो. गयाचरणजी त्रिपाठी-दिल्ली, प्रो. दीप्ति त्रिपाठी-दिल्ली, डॉ. सुषमाजी सिंघवी-जयपुर, प्रो. दीनानाथजी शर्मा-अहमदाबाद, प्रो. कमलेश कुमारजी जैन-जयपुर, प्रो. विजय कुमारजी जैन लखनऊ आदि ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। संगोष्ठी में

अनेकान्त कुमारजी जैन-दिल्ली, डॉ. दिलीपजी धींग-चेन्नई, डॉ. तेजराजजी सिंघवी-मैसूर, डॉ. ताराजी डागा-जयपुर, डॉ. आनन्द कुमारजी जैन-वाराणसी, डॉ. पुलकजी गोयल, डॉ. श्वेताजी जैन-जोधपुर, डॉ. शोभनाजी शाह-अहमदाबाद आदि ने सत्रों का संयोजन किया अथवा चर्चा में भाग लिया। संगोष्ठी में प्राकृत धम्मपद, संस्कृत नाटकों में प्राकृत, संस्कृत-प्राकृत में दूरी एवं निकटता, प्राकृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास, शिलालेखों में प्राकृत आदि विभिन्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत हुए। संगोष्ठी में एक चर्चा सत्र आयोजित हुआ, जिसमें प्राकृत के उत्थान एवं संवर्धन के सन्दर्भ में विद्वानों ने अनेक सुझाव दिए।

शीतकालीन धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा प्रथम बार शीतकालीन अवकाश में धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन 20 दिसम्बर 2022 से 5 जनवरी, 2023 के मध्य किया जा रहा है। शिविर में 6 वर्ष से 45 वर्ष तक के बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियाँ भाग ले सकते हैं। युवक परिषद् की सभी शाखाओं से निवेदन है कि अपने यहाँ उक्त शिविर उपरोक्त दिनांक के मध्य 5 अथवा 7 दिन का अवश्य आयोजित करें तथा शिविर में भाग लेने हेतु अधिक से अधिक शिविरार्थियों को प्रेरित करावें। शिविरों के विषय में अधिक जानकारी हेतु श्री नमनजी डागा, श्री निपुणजी डागा-उपाध्यक्ष (धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर) मो. 73037-44889 पर सम्पर्क करें।

-विकासराज जैन, महासचिव

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : *Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur*, Ifsc Code : **PUNB0103310**, Micr Code : **302022011**, Customer ID :

35288297 निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिकरूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

- | | |
|--|----------|
| 13. श्रीमती शशीकलाजी सुखलेचा, बेंगलूरु (कर्नाटक) | 24,000/- |
| 14. श्री पवनजी जैन, बड़ौदामेव, अलवर (राजस्थान) | 12,100/- |

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : *Bapu Bazar, Jaipur*, Ifsc Code : *SBIN0031843* निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-अनिल जैन-9314635755

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- 21 नवम्बर, 2022 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में रत्नसंघ के पंचम आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की 107वीं पुण्यतिथि जप-तप-त्यागपूर्वक स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में मनाई गई। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री महावीरचन्द्रजी तातेड़ ने आचार्यश्री विनयचन्द्रजी म.सा. के जन्म-माता-पिता के परिचय, दीक्षा एवं चारित्रमय जीवन पर प्रकाश डाला। कार्याध्यक्ष आर. नरेन्द्रजी कांकरिया ने आचार्यश्री के गुणगान रूप में धर्मसभा में कहा कि विनयचन्द्र ने बाल्यकाल में माता-पिता का साया सिर पर से उठ जाने के बाद बड़े होने के नाते भाई- बहनों के परिवार का कर्तव्य निभाया। पाली में आचार्य श्री कजोडीमलजी म.सा के दर्शन के पश्चात् वैराग्य भाव-गुरु सन्निधि और अपने अनुज भाई श्री कस्तूरचन्द्रजी के संग अजमेर में पन्द्रह वर्ष की वय में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होने के पश्चात् साधनामय जीवन, आगमज्ञाता, वात्सल्यता उनकी शिष्य परम्परा की विस्तृत जानकारी देते हुए पंजाबी परम्परा के अमरचन्द्रजी म.सा के श्री मयारामजी म.सा., धर्मदासजी परम्परा के पण्डित रत्न श्री माधवमुनिजी म.सा, हुक्म गच्छ के तत्कालीन आचार्यश्री श्रीलालजी म.सा आदि परम्पराओं के संग मधुर व्यवहार सम्बन्धों एवं संयुक्त प्रवचनों व 36 चातुर्मासों की विशेष जानकारी देते हुए गुणगान किये। जब वे 40 वर्ष के थे, उन्हें अजमेर में रत्नसंघ के पंचम आचार्य के रूप में घोषित किया गया। उनका 60 वर्ष की वय का संयममय जीवन रहा, 75 वर्ष की वय में जयपुर में समाधिपूर्वक देवलोकगमन हुआ। व्रत-नियम-प्रत्याख्यान के पश्चात् चारित्र आत्माओं की जय-जयकार के संग पुण्यतिथि गुणानुवाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया

ललितपुर-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के त्रैवार्षिक चुनाव 13 नवम्बर, 2022 को चुनाव अधिकारी प्रोफेसर फूलचन्दजी जैन प्रेमी, वाराणसी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुए। जिसमें प्रोफेसर अशोक कुमार जैन-वाराणसी अध्यक्ष, प्रोफेसर सुरेन्द्रकुमारजी जैन भारती, बुरहानपुर उपाध्यक्ष एवं प्रोफेसर विजय कुमारजी जैन, लखनऊ महामन्त्री निर्वाचित हुए।
-प्रोफेसर विजय कुमार जैन, लखनऊ

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रेमचन्दजी जैन (उनियारा वाले) का 3 नवम्बर, 2022 को चौविहार संलेखना-संधारापूर्वक समाधिमरण हो गया। 30 अक्टूबर, 2022 को दोपहर 12.15 बजे सभी परिवारजनों के समक्ष चौविहार संधारे के यथास्थिति प्रत्याख्यान लिए। इसके उपरान्त मंगलवार को दोपहर में सभी परिजनों एवं समाजजनों के द्वारा प्रतापनगर जैन स्थानक में लाया गया जहाँ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ने दोपहर 1.45 बजे विधिवत् संधारे के प्रत्याख्यान करवाये। सन्तों के सान्निध्य में निरन्तर धर्म आराधना एवं सन्तों के मुखारविन्द से जिनवाणी श्रवण करते हुए आपका अन्तिम समय बीता। 3 नवम्बर को सांय 4.22 बजे आलोचना सुनते हुए समस्त परिवारजनों और समाजजनों से क्षमा माँगते हुए संधारा सीझ गया। पार्थिव शरीर की महाप्रयाण यात्रा श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी प्रतापनगर, सांगानेर संघ की ओर से 4 नवम्बर को चकडोल में हल्दी घाटी स्थित मोक्षधाम ले जायी गयी। धार्मिक संस्कार आपको बचपन से ही अपने माता-पिता से मिले थे। आप प्रतिदिन दो घण्टे धर्मााधना अवश्य करते थे, जिसमें प्रातः भक्तामर स्तोत्र, माला, स्वाध्याय, जाप और सायं भजन-प्रार्थना आदि करते थे। अपने निजगृह में वर्ष में पाँच बार नमस्कार मन्त्र के चौबीस घण्टे के जाप अवश्य करवाते थे। आप पुष्प नक्षत्र में आयम्बिल किया करते थे। सन्त-सतियों के प्रवचन में जहाँ भी जाते वहाँ भजन अवश्य गाया करते थे। आप धार्मिक, सेवाभावी, स्पष्ट एवं प्रखर वक्ता थे, समाज सेवा में अग्रणी रहते थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती सुशीलाजी देवी, सुपुत्र दिलीपकुमारजी एवं सभी परिवारजनों ने आपकी बहुत सेवा की। आप अपने पीछे अपनी धर्मसहायिका, एक पुत्र चार पुत्रियों सहित भरापूर परिवार छोड़कर गए हैं।
-दिलीप कुमार जैन (दुबई)

पाली- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जुगराजजी कवाड का 13 नवम्बर, 2022 को देहावसान हो गया। आपने आचार्य हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। आपका जीवन प्रारम्भ से ही संघ-सेवा के लिए समर्पित रहा। आचार्यप्रवर के पाली विराजने पर आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया एवं विहार में आपकी विशेष सेवाएँ प्राप्त हुईं। कवाड परिवार का संघ एवं संघीय संस्थाओं में सक्रीय योगदान प्राप्त होता है। आपके भ्राता आदरणीय श्री पारसमलजी एवं श्री शान्तिलालजी कवाड पाली में संघ की गतिविधियों में सक्रीय सहयोग प्राप्त होता है।
-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका श्री अर्जुनराजजी मेहता पुत्रवधू शिक्षाविद् स्व. श्री गुलराजजी मेहता का 4 अक्टूबर, 2022 को 75 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। शालीनता, कर्तव्य परायणता, आत्मीयता, व्यवहार दक्षता, सहनशीलता, वाणी की मधुरता आदि सदगुणों से सम्पन्न थीं। आपने देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित रहकर श्री संजयजी- श्रीमती नीतू जी (पुत्र-पुत्रवधू), अपूर्वजी, सुश्री टीशाजी (पौत्र-पौत्री) श्रीमती रीनाजी-श्री शैलेन्द्रजी लुणावत, श्रीमती नीलमजी-श्री अरविन्दजी मेहता (पुत्री-दामाद), सी.ए. विनयजी, सुश्री आयुषी लुणावत एवं जानवी, अनुष्काजी,

पूर्वीजी मेहता (दोहित्र-दोहित्री) सहित समस्त परिवार को सुसंस्कारित कर धर्ममय जीवन बनाने में महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। आपने मरणोपरान्त नेत्रदान करके पुण्य का कार्य किया है। - देवेन्द्रनाथ मोदी, जोधपुर

चेन्नई-संघ-सेवा, सुश्राविका श्रीमती चन्दनबालाजी धर्मसहायिका श्रीदेवेन्द्रजी चोरड़िया का 30 अक्टूबर 2022 को देहावसान हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थीं। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थीं। चेन्नई में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहती थीं। रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द के चेन्नई पधारने पर आप सहित समस्त चोरड़िया परिवार ने सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना के साथ आतिथ्य-सेवा का लाभ प्राप्त किया था। चेन्नई तथा जोधपुर दोनों स्थानों पर आपका परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा के साथ स्वधर्मी वात्सल्य में भी सदैव समर्पित रहा है। - धनपत सेठिया, महामन्त्री



जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पुष्पराजजी विनाकिया मेहता सुपुत्र स्व. श्री मदनराजजी का 29 अक्टूबर, 2022 को सागरी-संधारासहित देवलोकगमन हो गया। आप सहनशील एवं सरल स्वभावी थे। चारित्रनिष्ठ पूज्य सन्त-सतियों के प्रति आपकी दृढ़ श्रद्धा थी। आप मधुरवाणी के धनी थे, मुक्तक एवं भजन गाकर धर्म की प्रभावना करते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारी परिवार छोड़कर गए हैं।



बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री तखतमलजी गोठी का 14 अक्टूबर, 2022 को 79 वर्ष की वय में तिविहार संधारे के साथ स्वर्गवास हो गया है। आप प्रतिदिन 4-5 सामायिक करती थीं। आप सरल-स्वभावी एवं रात्रिभोजन त्यागी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। - सरोहनलाल जैन



सवाई माधोपुर- धर्मपरायण, हँसमुख, मिलनसार सुश्राविका श्रीमती विमलेशजी (बबली) धर्मसहायिका स्व. श्री ईश्वरजी जैन हाड़ा का 3 नवम्बर, 2022 को देहावसान हो गया। आपके प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय का नियम था। आप धार्मिक प्रवृत्ति की भद्र श्राविका थीं। आप सन्त-सतियों के दर्शन-वन्दन एवं सेवा हेतु सदैव तत्पर रहती थीं। आपका जीवन धर्म से ओतप्रोत रहा है। आपका पुत्र खुशामय होनहार है। आपके परिवारजन समाज सेवा में सदैव अग्रणी रहते हैं। - धर्मेश्वर जैन, महामन्त्री



उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

Pearls of Life

Mrs. Minakshi Dinesh Jain

- ◆ The minds are like parachutes, they won't function unless open.
- ◆ Have patience with all things, but especially with yourself.
- ◆ The more you live in the past, the less you live in the present.
- ◆ Give world the best you have and the best will come back to you.
- ◆ Happiness depends on what you can give, not on what you can get.
- ◆ Service to society is the rent which we pay for the space occupied on this earth.
- ◆ The reason why worry kills more people than work is that people worry more than work.
- ◆ If you want to do anything, you find a way. If you don't want to do anything, you find an excuse.

-17/729, CHB, Jodhpur-342008 (Rajasthan)

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन

(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

- 16356 श्री अरुण कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
 16357 श्री महेन्द्रजी सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)
 16358 श्री मूलचन्दजी गोगड़, बाड़मेर (राजस्थान)
 16359 श्री अनिलजी कोठारी, अहमदाबाद (गुजरात)
 (20 वर्षीय सदस्यता क्रमांक 16360 से 16370 तक श्री सुरेन्द्रमलजी लोढ़ा, अजमेर द्वारा बनाये गये)
 16360 श्री अभयमलजी लोढ़ा, दिल्ली
 16361 श्री सम्पतमलजी लोढ़ा, जयपुर (राजस्थान)
 16362 श्री सन्तोषमलजी लोढ़ा, भीलवाड़ा (राजस्थान)
 16363 श्रीमती अक्लकुमारीजी चौधरी, जयपुर (राजस्थान)
 16364 श्रीमती सुमनलताजी जैन, उदयपुर (राजस्थान)
 16365 श्री पंकजजी जैन, नैनीताल (उत्तराखण्ड)
 16366 श्री नीरजजी जैन, नई दिल्ली
 16367 श्री राकेशजी जैन, दिल्ली
 16368 श्रीमती वन्दनाजी जैन, जयपुर (राजस्थान)
 16369 श्रीमती विनीताजी छाजेड़, मुम्बई (महाराष्ट्र)
 16370 श्रीमती सुनीताजी जैन, नई दिल्ली
 16371 श्री नमनजी मेहता, अहमदाबाद (गुजरात)
 16372 श्री अरुणजी गोलिया, बेंगलूरु (कर्नाटक)
 16373 श्री देवेन्द्रजी जैन, मानसरोवर-जयपुर (राजस्थान)

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

- 11000/- बड़े वीर भ्राता श्री शान्तिलालजी, विमलजी, वीर भतीजा श्री शैलेशजी गाँधी, पीपाड़-दिल्ली, वीरभ्राता स्व. श्री प्रेमचन्दजी गाँधी की पुण्यस्मृति एवं आचार्य भगवन्त के 60वें दीक्षा-दिवस के पावन प्रसङ्ग के उपलक्ष्य में।
 11000/- श्रीमती मनोहरबाईजी, श्री जौहरीलालजी, प्रकाशचन्दजी लूणिया, पल्लीपेठ, सपरिवार गुरु-चरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
 11000/- श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर-चेन्नई, वर्ष 2022 का श्री कोयम्बटूर स्थानकवासी जैन संघ ओपनकारा

स्ट्रीट कोयम्बटूर के प्राङ्गण में सफल चातुर्मास सम्पन्न होने की खुशी में।

- 9000/- श्रीमती सोनीबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री जेठमलजी सुराणा (खण्डप वाले), हुबली की ओर से सप्रेम।
 5100/- श्री सुरेन्द्र कुमारजी लूंकड़, कोटा, श्री अरिहन्तजी-श्रीमती प्राचीजी लूंकड़ के वैवाहिक जीवन की चतुर्थ वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
 5100/- श्री रिषभचन्द जी जैन एवं परिवारजन (अलीगढ़-रामपुरा वाले), मुम्बई, श्री रिषभचन्दजी सुपुत्र स्व. सौभागमलजी जैन का ICICI Bank Ltd., Regional Head, Business Loan Group, Mumbai से 31 अक्टूबर, 2022 को सेवानिवृत्ति (षष्टिपूर्ति) के अवसर पर सप्रेम।
 5100/- श्रीमती गुलाबकँवरजी मेहता, जोधपुर, स्व. श्री सायरमलजी मेहता की 14 अक्टूबर, 2022 को 29वीं पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में।
 3100/- श्री प्रेमचन्दजी भंसाली, भद्रावती, सपरिवार गुरु चरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
 3100/- श्री ए. सज्जनराजजी सांखला, बेंगलूरु की ओर से सप्रेम।
 2100/- श्री अशोक कुमारजी बोहरा, नागपुर, दोहिते श्री गौतमजी गुन्देचा सुपुत्र श्रीमती अर्चनाजी-सुदर्शनजी, सुपौत्र श्री गणेशलालजी गुन्देचा, वर्णी (महाराष्ट्र) में आई.आई.टी. मद्रास के केमीकल इंजीनियर विभाग में प्रवेश प्राप्त होने की खुशी में।
 2100/- श्री महावीरचन्दजी, सन्दीप कुमारजी, सुनील कुमारजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), चेन्नई, महामन्दिर चातुर्मास के पावन प्रसङ्ग पर गुरु चरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
 2100/- श्री रोहितजी लूणिया संग सौ.कां. नेहाजी, पल्लीपेठ के शुभविवाह 5 दिसम्बर, 2021 के उपलक्ष्य में और सपत्नीक गुरु-चरण-सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
 2100/- श्रीमती प्रेमलताजी (धर्मपत्नी), श्री राकेशजी तातेड़,

- श्री राजीवजी जैन सुपुत्र पूजनीय श्री चन्दनमलजी तातेड़ का 31 अक्टूबर, 2022 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 2100/- श्रीमती सायरदेवीजी, श्री श्रेणिकजी, राजेशजी, सुरेशजी, संजयजी, कुणालजी, सिद्धार्थजी, रिषभजी, हर्षजी चोरड़िया, जोधपुर, श्रावकरत्न श्री बस्तीमलजी चोरड़िया का 10 सितम्बर, 2022 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 2100/- श्री बुधमलजी चौपड़ा, लक्ष्मीनगर-जोधपुर, श्रीमती विमलाजी चौपड़ा के महामन्दिर चातुर्मास में सिद्धितप के पूर के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 2100/- श्री रामलक्ष्मणजी कुम्भट, नेहरू पार्क-जोधपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की 25वीं एवं भ्राताश्री महावीरराजजी कुम्भट की 20वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।
- 2000/- श्री अमृतलालजी सुराणा, हुबली की ओर से सप्रेम।
- 1500/- श्री बुधमलजी, पदमचन्दजी, चैनराजजी, मृगेशजी कोठारी (रणसीगाँव वाले), चेन्नई-अहमदाबाद, सुश्राविका श्रीमती किरणकँवरजी धर्मपत्नी श्री बुधमलजी कोठारी के आठवाँ वर्षीतप सातापूर्वक चलने के उपलक्ष्य में।
- 1101/- श्री धर्मचन्दजी, सुरेशचन्दजी, मुकेशचन्दजी जैन, कुशतला-सवाईमाधोपुर, चि. अभयजी सुपुत्र श्री मुकेशजी का शुभविवाह सौ.कां. धवलजी सुपुत्री श्री रमेशजी गुप्ता, कोटा के संग 4 नवम्बर, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री दिनेशजी, नितिनजी जैन, ठाणे-मुम्बई, सुश्री प्रियाजी जैन एवं श्रीमती सीमाजी जैन-मुम्बई, 60वें दीक्षा-दिवस पर तेले की तपाराधना की खुशी में।
- 1100/- श्री धनसुरेशजी, आशीषजी, अमितजी, सुमितजी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, गुरुदर्शन लाभ की खुशी में।
- 1100/- श्री परमेश्वरजी, त्रिलोकजी, खुशमयजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती विमलेशजी (बबली) जैन का 3 नवम्बर, 2022 को देवलोकगमन हो जाने पर पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री अभिन्नजी बोहरा सुपुत्र नितिनजी बोहरा, किशनगढ़ शहर, सपरिवार गुरु-चरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने पर।
- 1100/- श्री यशकुमारजी सुपुत्र श्री हेमराजजी लूणिया, पल्लीपेठ, श्री यशकुमारजी के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री गजेन्द्रजी, जितेन्द्रजी बुरड़, बिजयनगर, पूजनीय पिताजी स्व. श्री कैलाशचन्दजी बुरड़ की द्वितीय पुण्यस्मृति पर।
- 1100/- श्री धर्मचन्दजी जैन (जरखोदा वाले), जयपुर सुपुत्र चि. अंकुशजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य पर सप्रेम।
- 1100/- श्री दिलीप कुमारजी जैन (उनियारा वाले), जयपुर, पूजनीय पिताजी श्री प्रेमचन्दजी जैन का 3 नवम्बर, 2022 को संधारापूर्वक समाधिमरण के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री अमित कुमारजी, सुमति कुमारजी जैन, सुपुत्र श्री देवेन्द्र कुमारजी जैन (सूरवाल वाले), नानाजी स्व. श्री प्रेमचन्दजी जैन (उनियारा वाले) का 4 नवम्बर, 2022 को संधारापूर्वक समाधिमरण के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती रेणुजी धर्मपत्नी श्री धनेशजी बोहरा, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड-जोधपुर, श्रीमती रेणुजी के ग्यारह एवं धनेशजी सुपुत्र श्री शान्तिचन्दजी तथा सुपौत्री सलोनीजी के दो तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री शान्तिचन्दजी बोहरा, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड-जोधपुर, श्रीमती उषाजी के अठाई की तपस्या एवं श्रीमती मीनाक्षीजी-कान्तिचन्दजी बोहरा के पाँच की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री अर्जुनराजजी, संजयजी-नीतूजी, अपूर्वजी, सुश्री टीशाजी मेहता एवं श्रीमती रीनाजी लुणावत, जोधपुर, श्रीमती सुशीलाजी मेहता का 4 अक्टूबर, 2022 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री दिनेशजी, मीनाजी, अक्षयजी, प्रियंकाजी गांग, जोधपुर की ओर से सप्रेम।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

- 11000/- श्रीमती ललिताजी, नवीनजी, नितेशजी भण्डारी परिवार (जोधपुर वाले), चेन्नई पूजनीय श्री महावीरचन्दजी भण्डारी की पुण्यस्मृति में।

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु

- (1) श्रीमती कमलाबाईजी-डूंगरचन्दजी, नवरत्नजी, अनिलजी, नीलमजी, नरेशजी भूरट, जलगाँव (महा.)
- (2) श्रीमती विद्यादेवीजी-चन्दुलालजी, मनमोहनजी, रजनीशजी, राजेशजी, अमितजी, सुमितजी, नमितजी कर्णावट, जोधपुर (राजस्थान)

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रीनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

प्रेरक प्रसङ्ग

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

आज एयरपोर्ट पर सफाई करने वाली आशा कुर्सी पर बैठकर रो रही थी। मनोजजी जो हमेशा बिजनेस क्लास से ट्रेवल करते हैं आज उनकी फ्लाइट थी, वे अमेरिका से भारत आ रहे थे। मनोजजी को भारत में मम्मी-पापा से मिलने की इतनी उत्तेजना थी कि उनका और कुछ पढ़ने का तथा कुछ करने का मन नहीं था। एयरपोर्ट भी जल्दी पहुँच गये।

सामान चैकइन् हो गया अभी भी उनके पास 15-20 मिनट का समय था। आशा एयरपोर्ट पर ही सफाई का काम करती थी। वह एप्रन पहने हुए पोंछा लगा रही थी। हाथ में लम्बा वाला मोप था। मनोजजी जो हमेशा प्रसन्न रहते हैं और लोगों के चेहरों पर मुस्कराहट लाते हैं, उन्होंने आशा से कहा-“बहन, तुम्हारा एप्रन मुझे दो।” 15 मिनट तुम आराम करो और सफाई मैं कर देता हूँ। वह देने में हिचकिचा रही थी। उसे कभी कोई टिप दे देते हैं, लेकिन पहली बार किसी ने ऐसा कहा कि तुम्हारा काम मैं कर देता हूँ।

मनोजजी ने एप्रन पहना और पूरा फर्श मोप कर दिया, इसलिए कुर्सी पर बैठी आशा की आँखों में आँसू आ गये। उसे लगा किसी ने उसे इतनी इज्जत बख्शी है।

ऊपर स्वयं उसको धन्यवाद भी दे रहे हैं।

सच है किसी को अच्छा महसूस करवाना तथा किसी के काम में मदद करना सच्ची मानवता है। यह सच्ची घटना है।

-वर्ली, मुम्बई (महाराष्ट्र)

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- मिथ्यात्व, अन्नत, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग का प्रतिक्रमण किसने किया?

उत्तर- मिथ्यात्व का श्रेणिक राजा ने, अन्नत का प्रदेशी राजा ने, प्रमाद का शैलक राजर्षि ने, कषाय का चण्डकौशिक सर्प ने और अशुभ योग का प्रतिक्रमण प्रसन्नचन्द्र राजर्षि ने किया।

प्र. 2- व्रत और पचक्खाण में क्या अन्तर है?

उत्तर- व्रत-विधि रूप प्रतिज्ञा व्रत है। जैसे-मैं सामायिक करता हूँ। साधु के लिए पाँच महाव्रत होते हैं। श्रावक के लिए बारह व्रत होते हैं। व्रत मात्र चारित्र में ही सम्मिलित होते हैं जबकि पचक्खाण-चारित्र और तप दोनों में आते हैं।

पचक्खाण-निषेध रूप प्रतिज्ञा पचक्खाण है, जैसे सावद्य योगों का त्याग करता हूँ अथवा आहार को विसिराता हूँ। व्रत-करणकोटि के साथ होते हैं। पचक्खाण करण, कोटि बिना भी होते हैं। व्रत लेने के

पाठ के अन्त में तस्स भंते से अप्पाणं वोसिरामि आता है। (आहार के) पच्चक्खाण में अन्नत्थणाभोगेणं से वोसिरामि आता है।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

A Burning Desire

Shri Shrikant Gupta

A young man asked Socrates the secret to success. Socrates told the young man to meet him near the river the next morning. They met. Socrates asked the young man to walk with him toward the river. When the water got up to their neck, Socrates took the young man by surprise and ducked him into the water.

The boy struggled to get out but Socrates was strong and kept him there until the boy started turning blue. Socrates pulled his head out of the water and the first thing the young man did was to gasp and take a deep breath of air.

Socrates asked, "What did you want the most when you were there?" The boy replied, "Air." Socrates said, "That is the secret to success. When you want success as badly as you wanted the air, then you will get it." There is no other secret.

A burning desire is the starting point of all accomplishment.

Just like a small fire cannot give much heat, a weak desire cannot produce great results.

-Jodhpur (Rajasthan)

नमस्कार मन्त्र का माहात्म्य

श्री अभय कुमार जैन

नमस्कार मन्त्र का प्रथम शब्द 'नमो' है, जिसका अर्थ है नम जाओ। जो नमता है वही गुणों में रमता है और वही प्रभु को गमता है यानी प्रभु तक पहुँचता है। 'नमो' शब्द का भावार्थ है अहंकार छोड़ो। इसके पाँच पदों का अर्थ इस प्रकार है- अरिहंतों को नमस्कार करता हूँ, सिद्धों को नमस्कार करता हूँ, आचार्यों को

नमस्कार करता हूँ, उपाध्यायों को नमस्कार करता हूँ और लोक के सभी साधुओं को नमस्कार करता हूँ। अरिहंत भगवान को नमस्कार करने से कर्म शत्रु को परास्त करने की, सिद्ध भगवान को नमस्कार करने से देहभाव को छोड़ने की, आचार्य को नमस्कार करने से अनुचित आचरण को छोड़ने की, उपाध्याय को नमस्कार करने से मिथ्या मान्यता को छोड़ने की तथा साधुजन को नमस्कार करने से संसार की ममता छोड़ने की प्रेरणा मिलती है। इस महामन्त्र की विशेषता यह है कि यह अहंकार का विसर्जन करता है। इसमें व्यक्ति की पूजा नहीं, बल्कि गुण की पूजा है। इसमें व्यक्ति को नहीं व्यक्तित्व को नमस्कार किया जाता है। इसमें परम्परा को नहीं जो परम है उसकी प्रतिष्ठा की गई है। इसमें ज्ञान, दर्शन और चारित्र को मान दिया गया है। इन्हीं कारणों से नमस्कार मन्त्र को अन्य मन्त्रों से श्रेष्ठ माना गया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह कामना पूर्ति का नहीं, कामनाओं को शान्त करने वाला महामन्त्र है।

-तृप्ति बन्दा रोड़, भवानी मण्डी-326502

गुण का महत्त्व

श्री शुभम बोहरा

एक बार दरबार में बैठे हुए सम्राट् चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से कहा- "गुरुदेव! काश आप खूबसूरत होते?"

चन्द्रगुप्त के ऐसा बोलने पर सारे दरबारी उनकी तरफ देखने लगे। परन्तु चाणक्य ने शान्त स्वभाव से कहा- "राजन्! इंसान की पहचान उसके गुणों से होती है, रूप से नहीं।"

तब चन्द्रगुप्त ने चाणक्य के जवाब से सन्तुष्ट नहीं होते हुए पूछा- "क्या कोई ऐसा उदाहरण दे सकते हो, जहाँ गुण के सामने रूप छोटा रह गया हो?"

तब चाणक्य ने दो गिलास पानी मँगवाया और राजा को पानी पीने को दिया। जब चन्द्रगुप्त ने पानी पी लिया तब चाणक्य ने कहा- "पहले गिलास का पानी

सोने के घड़े से लिया गया था और दूसरे गिलास का पानी मिट्टी के घड़े से लिया गया था। आपको कौन-सा पानी अच्छा लगा।”

चन्द्रगुप्त उत्तर देते हुए बोले-“मटकी से भरे गिलास का पानी अच्छा था।” नजदीक ही सम्राट् चन्द्रगुप्त की पत्नी मौजूद थीं, वह चाणक्य द्वारा दिए गए इस उदाहरण से काफी प्रभावित हुईं। उन्होंने कहा-“वह सोने का घड़ा किस काम का जो एक इंसान की प्यास न बुझा सके। मटकी भले ही कितनी भी कुरूप हो, लेकिन प्यास मटकी के पानी से ही भली प्रकार से बुझती है, यानी रूप से कहीं अधिक महान् गुण होता है।”

चन्द्रगुप्त यह सब देखकर बहुत प्रसन्न हुए। ऐसे गुरु के कारण ही वह मगध राज्य पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में कामयाब हुए थे। ऐसे गुरु की सङ्गत मिल जाने से जीवन का उद्धार हो जाता है।

इसी तरह इंसान अपने रूप के कारण नहीं, बल्कि अपने गुणों के कारण पूजा जाता है। रूप तो कुछ दिनों के बाद ढल जाता है, लेकिन इंसान का गुण उम्र के साथ-साथ और निखर जाता है। इसलिये हमें अपने गुणों को बढ़ाना चाहिये और दूसरों के गुणों को ग्रहण करना चाहिए।

- संस्कार की पाठशाला, जलगाँव (महत्.)

उपयोगी बीस नारे

डॉ. दिलीप धींग

- सबसे प्यारे, सबसे न्यारे।
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे॥1॥
पर्यावरण के दो आधार।
स्वच्छता और शाकाहार॥2॥
करुणा जीवन का आधार।
छोड़ दीजिये मांसाहार॥3॥
शाकाहार एक, लाभ अनेक।
मानव! तू अपनाकर देख॥4॥
प्राणिमात्र से करिये प्यार।

- बोलो जय-जय शाकाहार॥5॥
मूक प्राणियों की फरियाद।
शाकाहार ज़िन्दाबाद॥6॥
अच्छी सेहत, अच्छा स्वाद।
शाकाहार ज़िन्दाबाद॥7॥
विश्वशान्ति का शंखनाद।
शाकाहार ज़िन्दाबाद॥8॥
शाकाहार करें, करवाएँ।
सदा चलेंगी स्वच्छ हवाएँ॥9॥
स्वच्छ भारत का यह नारा।
शाकाहार के बिना अधूरा॥10॥
कत्लखाने फैलाते भीषण,
कचरा, बदबू और प्रदूषण॥11॥
गन्दगी के बड़े ठिकाने?
पौलट्री फार्म, बूचड़खाने॥12॥
व्यक्ति जागे, समाज जागे।
व्यसन-मुक्त रहेगा आगे॥13॥
जीवन को करते बेकार।
तम्बाकू, दारू, मांसाहार॥14॥
व्यसन-मुक्त जीवन अपनाओ।
सुख-शान्ति के सुमन खिलाओ॥15॥
व्यसनमुक्त जीवन जीओ।
पापा! प्लीज़ मत पीओ॥16॥
सिंपल लिविंग, हाई थिंकिंग।
नो स्मोकिंग, नो ड्रिंकिंग॥17॥
मदिरापान पतन का द्वार।
जीवन हो जाता बेकार॥18॥
नशा नहीं जीवन में जिनके।
बीवी-बच्चे खुश हैं उनके॥19॥
भ्रूण-हत्या महापाप है।
मानवता का अभिशाप है॥20॥

-उमराव सददन, 53, डोरेनगर, उदयपुर-313002

(राजस्थान)

अहं का सिर नीचा

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जनवरी, 2023 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

आयरा ने समवय की युवतियों का समूह बनाया। सभी युवतियाँ प्रतिदिन प्रातः घूमने आया करती थीं। चाहे सर्दी हो या गर्मी, इन युवतियों ने घूमना अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लिया।

एक दिन सभी सहेलियाँ उद्यान में चक्कर लगाकर बेंचों पर प्रभाती सुनहरी धूप का आनन्द लेने बैठ गईं। बातों ही बातों में आयरा ने कहा-“मेरी सखी सहेलियों! इतना घूमने के पश्चात् भी शरीर में गर्मी नहीं आई है। मेरा मन हो रहा है कि एक संगोष्ठी रखी जाय। उस संगोष्ठी का नाम ‘धूप संगोष्ठी’ होगा। उसमें गपशप करेंगे, नाचेंगे, गाएँगे।

मृणाल-“यह धूप संगोष्ठी का प्रावधान मुझे बहुत पसन्द आया। भीतर में ठण्ड बैठ गई है वह भी निकल जाएगी और ‘विटामिन डी’ भी मिल जाएगा....।” लेकिन !

जीनी-“लेकिन क्या?”

मृणाल-“केवल नाचने-गाने से सन्तुष्टि नहीं होगी। सर्दी है इसलिये गर्म खाना-पीना रखा जाय।”

कृष्णी (उतावली होकर)-“कब और कहाँ रखेंगे? मेरा मन तो अभी से नाचने लगा है।”

आयरा-“दोपहर 1 से 4 बजे तक का समय रखेंगे। परी उद्यान में ही रखेंगे, सबके समीप पड़ता है।

रविवार के दिन रखेंगे ताकि बच्चे भी हमारे साथ आनन्द उठाएँगे।”

कृष्णी-“खाने-पीने में क्या रखना है?”

जीनी-“चाय और दाल के बड़े।”

वंशिका-“संगोष्ठी की व्यवस्था मैं कर लूँगी”

मृणाल-“दाल के बड़े सुनकर तो मेरे मन में पानी भर आया। तू अकेली नहीं करेगी। यहाँ आने में तुझे देर हो जाएगी। एक-एक व्यञ्जन सभी ले आएँगे। इससे तरह-तरह के व्यञ्जन खाने को मिलेंगे।”

जीनी-“आज श्रीरी नहीं आई है। उसे भी सूचित करना है।”

वंशिका-“मैं मोबाइल द्वारा उससे बात कर लूँगी। आयरा! तू क्या बनाकर लाएगी?”

आयरा-“दाल का हलवा।”

सभी मिलकर आहा।

जीनी-“दाल के बड़े।”

वंशिका-“सुमीला! तू चुपचाप बैठी है। तू संगोष्ठी में नहीं आएगी क्या?”

सुमीला-“मैं सब सुन रही हूँ। मुझे तो संगोष्ठी में आने की बहुत उत्सुकता है। मैं बड़े के साथ खाने के लिए धनियाँ की चटनी और हरी मिर्चियाँ तलकर लाऊँगी।”

जीनी (मजाक में)–“यह तो सबके मुँह जलाएगी।”

सुमाली–“चटनी-मिर्ची के बिना दाल के बड़ों और ढोकलों का स्वाद अधूरा है।”

कृष्णी–“मैं गरम-गरम चाय और कप लेकर आऊँगी।”

जीनी–“मैं पानी का केम्पर और ग्लास लाऊँगी।”

वंशिका–“मैं खीर बनाकर लाऊँगी। दाल के हलवे के साथ खीर का मेल अच्छा रहता है।”

रविवार के दिन सभी युवतियाँ परी उद्यान में सुन्दर-सुन्दर परिधान में सज-धज कर इकट्ठी हो गईं। चद्दर बिछाकर बैठ गईं और फिल्मी गाना गाने लगीं। कुछ समय पश्चात् श्रीरी वहाँ आ गईं। आते ही उसने व्यंग्य कसा कि क्या गा रही हो? बाहर तो गधे इकट्ठे हो गए हैं।

वंशिका–“अरे! श्रीरी, बेचारे गर्धों को खाना तो उनके स्वामी खिला देते हैं, लेकिन ऐसे सुरीले गाने उन्हें सुनने को कहाँ पर मिलेंगे। हमने तो उन्हें बुला लिया है।” सभी युवतियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं।

सुनीला–“श्रीरी तू गा, तेरी तान में तान हम भी मिला देंगे।”

श्रीरी गाने लगीं। लय-ताल का तनिक भी ज्ञान नहीं था। इतना बेसुरा गाया। समझदार युवतियों ने फिर भी उसकी खिल्ली नहीं उड़ाई। करतल ध्वनि से उद्यान गूँज गया। श्रीरी तालियों से बहुत प्रसन्न हुईं।

श्रीरी–“मैं तो बहुत अच्छा गाती हूँ।”

जीनी–“वाह रे! मियाँ मिट्टू।”

सभी युवतियाँ नृत्य करने लगीं और श्रीरी को भी आवाज़ लगाईं। श्रीरी आज। नृत्य का आनन्द ले ले। श्रीरी नृत्य देखती गईं और मुँह मचोड़ती गईं।

श्रीरी–“नृत्य तो माधुरी दीक्षित का देखने योग्य होता है। तुम तो कोई तीर जा रही हो और कोई मीर जा रही हो।”

आयरा–“हम माधुरी दीक्षित नहीं हैं। हम माधुरी

दीक्षित होती तो तेरे पास नहीं होती।”

कृष्णी–“भूख लगी है खाना लगाएँ।”

वंशिका ने सब के सामने प्लेटें, चम्मच, प्यालियाँ और ग्लास रख दिए।

जीनी–“गरमा-गरम हलवा आने दो।”

आयरा ने हलवा परोस दिया। एक मिनट में हलवा चट हो गया, लेकिन श्रीरी ने एक ग्रास लेकर छोड़ दिया।

आयरा–“क्या बात है? हलवा खाया नहीं।”

श्रीरी–“कैसे खाऊँ? कच्चा पड़ा है, गले उतरता ही नहीं है, तू ने घी तो दिखाया ही नहीं।”

सभी युवतियाँ श्रीरी को देखने लगीं, लेकिन चुप रही। जीनी ने दाल के बड़े परोसे। श्रीरी ने एक दो बड़े खाए और बाकी जूठे डाल दिए।

श्रीरी–“ठण्डे बड़े कैसे खाऊँ। मैं इतनी बड़ी हो गई हूँ, ऐसे घटिया बड़े कभी नहीं खाए। यहीं पर बना लेती।”

कृष्णी–“यहाँ कैसे बनाएँ, इतना सामान खींच कर लाना असम्भव है। जीनी के घर कोई 24 घण्टे का नौकर भी नहीं है।”

सुमीला और कृष्णी ने उठकर खमण-ढोकला, तली मिर्ची एवं चटनी परोस दी। चाय के कप भी रख दिए। खमण-ढोकले के साथ चाय अच्छी लगी और सभी चुसकियाँ लेती गईं।

श्रीरी–“तुम्हें परोसना भी नहीं आता। चाय के साथ बड़े देने थे। चाय तो बिल्कुल ठण्डी हो गई है। बिल्कुल स्वाद नहीं है।”

कृष्णी–“श्रीरी! क्या तमाशा कर रही हो? चाय मिल्टन कम्पनी की बोतल में लाई हूँ। पी ले मेरी बहन।”

श्रीरी–“कौनसी चाय काम लेती है?”

कृष्णी–“बाघ-बकरी।”

श्रीरी–“इसमें केसर नहीं डाली।”

कृष्णी–“केसर नहीं डालती हूँ।”

वंशिका–“मैं मुँह अच्छा करने के लिए पान लाई हूँ, लेकिन श्रीरी को नहीं दूँगी। श्रीरी कुछ न कुछ

कमी निकालेगी। मेरे पति दूर जाकर अच्छे पान लाए हैं। श्रीरी कुछ खामी निकालेगी तो मेरे से सहन नहीं होगा। सभी बहिर्न बड़ा परिश्रम करके अच्छे से अच्छे व्यञ्जन बनाकर लाई हैं, तू नुक्ता-चीनी करने में लगी हुई है। अपनी शेखी बघार रही है। छिद्रान्वेषी मत बन। तुझे इतना अहं, घमंड है तो तू भी कुछ बनाकर लाती। हम भी स्वाद लेकर चटकारे लेते।”

श्रीरी-“तुम जो व्यञ्जन बनाकर लाई हो, ऐसा घटिया खाना मेरे नौकरों को भी नहीं दिया जाता है। तुम लोगों ने सार्वजनिक उद्यान में संगोष्ठी रखी, वह स्थान भी हमारे योग्य नहीं है। मुझे आना अच्छा नहीं लगा। कोई अच्छी-सी होटल में रखती।”

आयरा-“होटलों के खाने में वह आनन्द नहीं आता, सहेलियों के हाथ का बना खाना प्रेम का द्योतक है। हम तो यहाँ खाने और खुशियाँ बाँटने आए हैं। वंशिका ने तुमको अहं करने वाली और घमण्डी बताया उसे ऐसे नहीं कहना चाहिए। वह छोटी है, पर एक बात मैं कहूँ। उसने सही भी कहा। घमण्ड तो रावण का भी नहीं चला। इस प्रसङ्ग पर मुझे एक लघु कथा याद आई है। सभी को सुननी है।”

‘बोलो कहूँ या नहीं’

(सभी की हाँ होने पर सुनाने लगी)

श्री कृष्णजी की पटरानी रुक्मणी को अपने पति से असीम प्रेम करने का अहं चढ़ा हुआ था। वह मानती थी कि मुझसे अधिक प्रेम श्री कृष्णजी से कोई नहीं कर सकता है। श्री कृष्णजी को रुक्मणीजी की गतिविधियों से आभास हुआ कि रुक्मणी को यह अहं है श्री कृष्णजी से मुझे असीम प्रेम है। श्री कृष्णजी को रुक्मणी का अहं खटक रहा था। वे सोचने लगे कि रुक्मणी का घमण्ड कैसे दूर किया जाय।

एक दिन श्री कृष्णजी अपने महल से बाहर नहीं आए, सभी रानियों को चिन्ता हुई। वे श्री कृष्णजी के महल पहुँच गईं। स्वामी! आज आप बाहर नहीं पधारे क्या बात है? श्री कृष्णजी ने कहा-“मेरे पेट में बहुत दर्द है। वे लोटपोट होने लगे और तड़पने लगे। खाना-पीना छोड़ दिया। रुक्मणी कृष्णजी की दशा देखकर बहुत

दुःखी हुई। पैर दबाने लगी। वैद्यजी को बुलाया गया। चिकित्सा दी गई। परन्तु पेट की पीड़ा बढ़ती गई। नगर-नगर से प्रसिद्ध वैद्यों को बुलाया गया, लेकिन श्री कृष्णजी को आराम नहीं आया। रोग का निदान न होने के कारण सम्बन्धी जनों एवं जनता की चिन्ता बढ़ती गई। श्री कृष्णजी के मित्र उद्धवजी आए और परस्पर बातें होने लगीं।

उद्धवजी-“मित्र! कृष्ण, आप ही बताओ, कौनसी औषधि मँगवाई जाय जिससे पेट दर्द चला जाय।”

श्री कृष्णजी ने कुछ समय सोचने के पश्चात् बताया कि उद्धव पटरानी रुक्मणी अपने पैरों की धूल घोलकर पिला दे तो पेट की पीड़ा चली जाएगी।

उद्धवजी-“अरे सखा! यह औषधि तो कुछ समय पश्चात् लाकर दे दूँगा।” उद्धवजी रुक्मणी के महल पहुँच गए। रुक्मणी ने उद्धवजी को देखकर नमस्कार किया। उद्धवजी ने भी रुक्मणी को झुककर प्रणाम किया और निवेदन किया कि आपके पैरों की रज पानी में घोल कर पिला दी जाय तो पीड़ा दूर हो सकती है।

रुक्मणी धर्म संकट में फँस गई।

रुक्मणी-“उद्धवजी! मैं श्री कृष्णजी से अथाह प्रेम करने वाली हूँ, मैं अपने पति को अपने चरणों की धूल कैसे पिला सकती हूँ? इससे तो मेरा प्रेम ही नष्ट माना जाएगा। आपसे निवेदन करती हूँ कि यह काम मैं नहीं कर सकती।”

उद्धवजी-“आपके पति कृष्णजी ने यह औषधि बतलाई है आप किसी प्रकार का संकोच न करें। उनकी आज्ञा आपके लिए सर्वोपरि है।”

रुक्मणी-“मैं पतिदेव की हर आज्ञा का पालन करती हूँ और करती रहूँगी। किन्तु मेरे चरणों की धूल घोलकर पिलाना उनके प्रति योग्य नहीं है। क्षमा कीजिएगा।”

उद्धवजी-“आप विचार कर लीजिए। मैं पुनः आपसे विनति करता हूँ कि उनकी असह्य पीड़ा दूर कीजिए।”

रुक्मणी-“आप अच्छा वैद्य लाकर औषधि

दीजिए, देर न करें।”

उद्धवजी कृष्णजी के पास आ गए। उन्होंने कृष्णजी को कहा कि पटरानी रुक्मणी चरणों की रज देना और उसे घोलकर पिलाने से उनके प्रति आदर में कमी होगी। इस कारण बहुत समझाने के पश्चात् भी नहीं मानी। आप कोई दूसरी औषधि बताएँ ताकि पीड़ा दूर हो जाए।

कृष्णजी मन ही मन मुस्कराए। (मैंने सोचा था वही हुआ।)

उद्धवजी—“मित्र और कोई उपाय बताइए।”

श्री कृष्णजी—“नन्दगाँव जाइए और गोपियों के चरणों की धूल माँग कर ले आइए।”

उद्धवजी—“भला वे क्यों देंगी। जबकि आपकी प्रिय पत्नी ने मना कर दिया।”

श्री कृष्णजी—“वहाँ का प्रयत्न कर लीजिए। आपको जाने-आने का कष्ट तो होगा।”

उद्धवजी—“सखा, तेरा कष्ट मेरे से सहन नहीं हो रहा है। मैं अभी रवाना हो रहा हूँ।” उद्धवजी एक पल भी न रुके और नन्दगाँव के लिए प्रस्थान किया। नन्दगाँव जाकर गोपियों को सन्देश भेजा कि कृष्णजी के मित्र उद्धवजी आपसे मिलने आए हैं। गोपियाँ सन्देश मिलते ही समूह में उद्धवजी के सामने उपस्थित हो गईं।

गोपियाँ—“उद्धवजी! कान्हा नहीं आया। नन्दलाला बड़ा निष्ठुर है, जाने के पश्चात् एक बार भी हमारी सुध नहीं ली है।”

उद्धवजी—“मैं उनके आदेश से आपके पास आया हूँ।”

गोपियाँ—“आप हमें निर्गुण ब्रह्म ज्ञान देने आएँ हैं। यह निर्गुण ज्ञान हमारी समझ के बाहर है। आप हमें यह बताएँ कि वह कैसे हैं? हमें याद करते हैं या नहीं।”

उद्धवजी—“कृष्णजी के उदर में पीड़ा है। बड़े ख्याति प्राप्त वैद्य बुलाए गए, पर उनकी चिकित्सा की पीड़ा ज्यों की त्यों है। यदि आप अपने चरणों की थोड़ी-सी रज दे दें। उस रज को पानी में घोल कर पिलाने से श्री कृष्णजी की पीड़ा समाप्त हो जाएगी। आप मना न करें। आपकी महती कृपा होगी।”

गोपियाँ—“आप सम्भ्रान्त क्यों हो रहे हैं?”

उसी समय गोपियाँ चरणों की धूल पोट भर-भर कर ले आई और कहने लगी कि उद्धवजी जल्दी जाइए। जल्दी रज घुला हुआ पानी पिलाएँ। उन्हें रोग से जल्दी मुक्त कीजिए।

गोपियों का मन प्रेम से भरा था और इस प्रेम के निर्वाह में उनकी कोई अपेक्षा भी नहीं थी। उनके भावों में विशुद्धता, सच्चा प्रेम और अहं रहित स्नेह था।

उद्धवजी मिट्टी लेकर द्वारिका पहुँच गए। मिट्टी भरी पोटलियाँ श्री कृष्णजी के सम्मुख रख दी। पोटलियाँ देखते ही श्री कृष्णजी की पेट की पीड़ा समाप्त हो गई, उन्होंने कहा कि मुझे तो रुक्मणी का गर्व चूर करना तथा प्रेम का स्वरूप समझाना था।

श्री कृष्णजी—“रुक्मणी! निःस्वार्थ और गर्व रहित प्रेम गोपियों का है। उनके प्रेम में कोई बाधा नहीं है। जहाँ प्रेम होता है, वहाँ उस प्रेम का अहं नहीं होता है, वरना वह प्रेम भी दोषपूर्ण है।”

आयरा—“श्रीरी! जहाँ प्रेम है वहाँ गर्व नहीं करना चाहिए। सभी बहिनों ने बड़े परिश्रम से प्रेम से परिपूर्ण व्यञ्जनों का ठाठ लगाया था। ऐसी प्रेमपूर्वक बनायी वस्तुओं में दोष निकालना उनके प्रेम का तिरस्कार है और अपनी शेखी बघारना अहं है। हे भगवन्! अहं से हमें सात कोस दूर रखें।”

आयरा की सुनाई कहानी से श्रीरी समझ गई और सभी से माफी माँगते हुए आनन्द लेने लगी।

—ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

प्र. 1 सभी सहेलियों ने परी उद्यान में संगोष्ठी क्यों रखी?

प्र. 2 सभी सहेलियों से श्रीरी का व्यवहार किस तरह भिन्न था?

प्र. 3 रुक्मणी को किस बात का अहं था?

प्र. 4 श्री कृष्णजी के प्रति गोपियों का प्रेम कैसा था?

प्र. 5 प्रस्तुत दृष्टान्त हमें क्या शिक्षा देता है?

प्र. 6 वाक्य प्रयोग कीजिए—सम्मुख, संगोष्ठी, नुक्ता-चीनी, छिन्द्रान्वेषी।

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2022] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'भगवान महावीर' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	तेजस जैन, अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	कविश जैन, आवासन-मण्डल, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	23.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	सिद्धार्थ जैन, सरवाड़ (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	सागर जैन, अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	22
	कु. ममता आर. छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	22
	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	22
	काव्य जैन, आसीन्द (राजस्थान)	22
	कु. आरोही एस. जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	22

बाल-जिनवाणी नवम्बर, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 जनवरी, 2023)

- प्र. 1. प्रतिक्रमण के पाँच भेदों के अन्तर्गत कौन-कौनसे पाठ आते हैं?
- प्र. 2. 'अभी बाकी है वह दिवाली' कविता में किस ओर संकेत किया गया है?
- प्र. 3. हम किस तरह अपने को श्रेष्ठ बना सकते हैं?
- प्र. 4. शाकाहार के विषय में क्या-क्या कहा गया है?
- प्र. 5. जैनधर्म में पटाखे चलाने का निषेध क्यों है?
- प्र. 6. मनुष्य किस तरह निरीह प्राणियों को वेदना पहुँचाता रहता है?
- प्र. 7. 'समय के साथ बदलती हैं कुछ बातें' दृष्टान्त क्या सन्देश देता है?
- प्र. 8. What is determination?
- प्र. 9. What message does the story 'Ever One Loves his Life' give us?
- प्र. 10. Write three synonyms of each given words- Punishment, Prisoner, Strength, Loyalty.

बाल-जिनवाणी [सितम्बर-2022] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	प्रखर जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	कु. पूनम किरण अलीझाड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	आराध्या भंसाली, जोधपुर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	कु. सुवर्णा एस. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	35
	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	35
	यथवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 ☎ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000	KOHINOOR MEMBER RS.500000	

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संचनित्त, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	GOLD MEMBER (RS. 75000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोल, मुम्बई श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। गुवारान् श्री हरीश जी कवाड, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डरी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमती पुष्पाबाई सुभाषचन्द्र जी बागरेचा, शिरपुर (महा.)
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् प्रकाशचन्द्र जी भण्डारी, हरलूर रोड, बेंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द्र सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बेंगलोर	श्रीमान् वृलीचन्द्र बाघमर एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् वलीचन्द्र जी सुरेश जी कवाड, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नाट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकमर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उडेन्दकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमती शान्ता डॉ. उमरावसिंह जी लोढा, रावजी की हवेली, जोधपुर
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोहरा, जलगांव (पोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द्र जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (पोपालगढ़ वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द्र शायरचन्द्र जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लाडकंठर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द्र जी सोड, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जानुति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	

सहयोग के लिए बैंक का ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्तन परियंत्रक को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों की शिक्षा में सहयोग करने का’

जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है।

जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/बैंक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (2) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (3) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (4) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (5) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
- (3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
- (4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
- (5) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
- (6) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
- (7) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
- (8) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
- (9) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
- (10) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्म्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई
- (11) श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी, देवांशजी कुम्भट, जोधपुर-मुम्बई
- (12) सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि), जयपुर-वडोदरा-मुम्बई

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



CLUB REGALIA

AT NAVKAR CITY



SWIMMING POOL

AMENITIES

-  NON-ALCOHOLIC CLUB
-  100%VEGETARIAN CLUB
-  INDOOR SQUASH COURT
-  SPA & WELLNESS CENTRE
-  OUTDOOR SWIMMING POOL
-  INDOOR BADMINTON COURT
-  MULTI-CUISINE RESTAURANT
-  OUTDOOR BANQUET LAWN
-  INDOOR BANQUET HALL
-  BILLIARDS LOUNGE
-  KID'S POOL AREA
-  BOWLING ALLEY
-  MUSIC ROOM
-  LIBRARY
-  SALON



KID'S PLAY ROOM



INDOOR GYMNASIUM



8504 000 222



Near DPS Circle, Navkar City, Jodhpur (Raj.)

Disclaimer: Visual representations do not show any information and indicate the envisaged design/program, subject to condition and modification. Refer to the contract or approved by the contractor's authorities.



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138



**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | Website: www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Adis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन